

स्कूल ऑफ इवेन्जलिज़म

कलीसिया वृद्धि के लिये

शिष्यता

## परिचय / पाठ्यक्रम और गृहकार्य

### पाठ्य-विषय का विवरण:

स्वर्ग को ऊपर उठाए जाने से पहिले यीशु के अंतिम वचन थे कि हमें सब जातियों से चेला, अर्थात, शिष्य बनाना है। शिष्य बनाने के लिए हमें स्वयं ही पहिले शिष्य होना है। हम उस प्रकार के शिष्य कैसे हो सकते हैं जिन्हें परमेश्वर उपयोग कर सकता है और दूसरों को शिष्य बनाने में आशीष दे सकता है? यह पाठ्यक्रम इसी प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास करता है।

1. **परिचय** पाठ्यक्रम और गृहकार्य
2. शिष्य के गुण
3. बाइबल के अनुसार शिष्य बनाने वाला
4. शिष्य और वचन
5. शिष्य और प्रार्थना
6. शिष्य और उसका समय
7. शिष्य और उसका हृदय
8. शिष्य और उसके सम्बंध
9. शिष्य बनाने वाले होना
10. **छोटे समूह** छोटे समूह में शिष्यता
11. यीशु का शिष्यों का छोटा समूह (1)
12. यीशु का शिष्यों का छोटा समूह (2)
13. शिष्य का जीवन में अंतिम उद्देश्य
14. छोटे समूह में शिष्यता के लाभ
15. **घटक** छोटे समूह में भाग लेने वाले

16. छोटे समूह के लक्ष्य
17. छोटे समूह के क्रियाकलाप
18. छोटे समूह के स्थान
19. छोटे समूह के लिये नेतृत्व की शैलियाँ
20. समूह बाइबल अध्ययन का महत्व
21. **बाइबल अध्ययन** - बाइबल अध्ययन की पद्धतियाँ
22. **बाइबल अध्ययन** - बाइबल अध्ययन के प्रकार
23. **बाइबल अध्ययन** - बाइबल अध्ययन की संरचना
24. **उदाहरण** विवेचनात्मक बाइबल अध्ययन/सुसमाचार-प्रचार हेतु
25. विवेचनात्मक बाइबल अध्ययन/सुसज्जित करने हेतु
26. विषय-संबंधि बाइबल अध्ययन /सुसमाचार-प्रचार हेतु (उद्धार)
27. विषय-संबंधि बाइबल अध्ययन /सुसमाचार-प्रचार हेतु
28. विषय-संबंधि बाइबल अध्ययन /स्थापित करने हेतु (वचन)
29. विषय-संबंधि बाइबल अध्ययन/स्थापित करने हेतु (प्रार्थना)
30. विषय-संबंधि बाइबल अध्ययन/स्थापित करने हेतु (आराधना)
31. विषय-संबंधि बाइबल अध्ययन/स्थापित करने हेतु (संहभागिता)
32. विषय-संबंधि बाइबल अध्ययन/स्थापित करने हेतु (गवाही देना)
33. विषय-संबंधि बाइबल अध्ययन/सुसज्जित करने हेतु (याजकीय ले-मेन - जो पादरी नहीं हैं)
34. व्याख्यात्मक बाइबल अध्ययन/ सुसज्जित करने हेतु
35. सुसज्जित करने हेतु बाइबल अध्ययन
36. **संसाधन** 52 बाइबल अध्ययन (विषय-संबंधि बाइबल अध्ययन/सुसज्जित करने हेतु)
37. शिष्य की आत्मिक आशीषें
38. **कार्य** अपने छोटे अध्ययन समूह की रिपोर्ट

**अन्तिम टिप्पणियाँ**

## बाइबल अध्ययन पाठों के लिये सुझाव

### ( 1 ) सुसमाचार-प्रचार हेतु बाइबल अध्ययन पाठों के लिये सुझाव

एक समूह का निर्माण करने के लिये किसी के साथ जुड़ जाएं।

सुसमाचार-प्रचार हेतु एक बाइबल अध्ययन तैयार करें।

अपने प्रशिक्षक के पास लिखित रूप-रेखा जमा करें।

कुछ गैर-मसीहियों को अध्ययन के लिये आमंत्रित करें।

अध्ययन में अगुवाई करें, जबकि आपका एक साथी अवलोकन करे।

बाइबल अध्ययन के परिणामों पर रिपोर्ट दें।

### ( 2 ) स्थापित करने हेतु एक बाइबल अध्ययन पाठों के लिये सुझाव

एक समूह का निर्माण करने के लिये किसी के साथ जुड़ जाएं।

स्थापित करने हेतु एक बाइबल अध्ययन तैयार करें।

अपने प्रशिक्षक के पास लिखित रूप-रेखा जमा करें।

कुछ नये विश्वासियों को अध्ययन के लिये आमंत्रित करें।

अध्ययन में अगुवाई करें, जबकि आपका एक साथी अवलोकन करे।

बाइबल अध्ययन के परिणामों पर रिपोर्ट दें।

### 3 ) सुसज्जित करने हेतु बाइबल अध्ययन पाठों के लिये सुझाव

एक समूह का निर्माण करने के लिये किसी के साथ जुड़ जाएं।

सुसज्जित करने हेतु एक बाइबल अध्ययन तैयार करें।

अपने प्रशिक्षक के पास लिखित रूप-रेखा जमा करें।

कुछ परिपक्व मसीहियों को अध्ययन के लिये आमंत्रित करें।

अध्ययन में अगुवाई करें, जबकि आपका एक साथी अवलोकन करे।

बाइबल अध्ययन के परिणामों पर रिपोर्ट दें।

## शिष्य के गुण

**प्रस्तावना:** अनेक लोग यीशु में विश्वास करते हैं। परन्तु शिष्य वह जन है जो यीशु से प्रेम रखता है और उसका निकटता से अनुसरण करता है।

- भीड़ यीशु के पीछे भोजन, आश्चर्यकर्म, चंगाई, छुटकारा, राजनैतिक स्वतंत्रता के लिए जाती थी। क्या वे यीशु के शिष्य थे? यूहन्ना 6:14-15
- बारह प्रेरितों ने यीशु के साथ रहने और उसका अनुसरण करने के लिए अपने व्यक्तिगत जीवनों को छोड़ दिया था। क्या वे शिष्य थे? मत्ती 4:19
- इस पाठ में, और पूरे पाठ्यक्रम में, हम यीशु मसीह के एक सच्चे शिष्य कें गुणों की खोज करेंगे, और स्वयं भी सच्चा शिष्य बनना सीखेंगे।

### 1. शिष्य अन्य सब प्रेम से बढ़कर परमेश्वर से प्रेम रखता है। लूका 14:26

- 1.1 जो प्रेम हम यीशु से करते हैं उस प्रेम से किसी अन्य प्रेम को प्रतिस्पर्धा नहीं करनी चाहिए। लूका 14:20
- 1.2 यीशु ने एक साहित्यिक अतिशयोक्ति से इस सच्चाई पर जोर दिया है। मत्ती 10:37
  - 1.2.1 जो प्रेम हम यीशु से करते हैं उस प्रेम की तुलना में, अन्य सारे प्रेम घृणा के समान हैं।
  - 1.2.2 परन्तु हम जानते हैं कि वास्तव में हमें अपने परिवार से घृणा नहीं करनी है। उदाहरण के लिए, पतरस ने अपनी सेवकाई के दौरान अपनी पत्नी को साथ लिया था। 1 कुरिन्थियों 9:5
  - 1.2.3 और हम जानते हैं कि हमें अपने परिवारों और रिश्तेदारों की चिन्ता करनी है। बाइबल बताती है कि जो ऐसा नहीं करता वह

“अविश्वासी से भी बुरा” है। 1 तीमुथियुस 5:8

1.3 जो शिष्य अपने जीवन में यीशु को प्रथम स्थान देता है, उसे प्रतिफल दिया जाएगा। मत्ती 6:33; मर. 10:28-30

## 2. शिष्य अपना क्रूस उठाता है। लूका 14:27

2.1 प्रारम्भिक कलीसिया में, आज से भिन्न, क्रूस मृत्यु का प्रतिक था। यीशु के शिष्य को अपना क्रूस प्रतिदिन उठाना अवश्य है। अवश्य है कि वह जीवन पाने के लिए अपना जीवन त्याग दे। लूका 9:23; मत्ती 10:38-39

2.2 अवश्य है कि वह अपने आप का इंकार करे और यीशु के पीछे हो ले। मरकुस 8:34-35

2.3 अवश्य है कि वह उस संसार का सामना करे जो क्रूस का बैरी है और जिसका ध्यान क्षणभर के सांसारिक सुख-विलास पर केन्द्रित है। फिलिप्पियों 3:18-19

## 3. शिष्य अपनी सम्पत्ति को त्यागने के लिए तैयार रहता है।

3.1 हम अपने जीवन के स्वामी नहीं हैं; हम उसके मात्र भण्डारी हैं। 1 कुरिन्थियों 6:18

3.2 उस धनी युवा सरदार में एक बात की कमी थी; वह अपनी सम्पत्ति का त्याग नहीं कर पाया। मरकुस 10:21

3.3 पौलुस ने उन सब बातों का त्याग कर दिया था जो यीशु के विरोध में थीं। फिलिप्पियों 2:8-10

## 4. शिष्य परमेश्वर पर के अपने विश्वास में “दृढ़ बना रहता है”।

4.1 शिष्य परमेश्वर की शिक्षाओं का अध्ययन करता है और उन्हें पकड़े रहता है। यूहन्ना 8:31

4.2 जरूरी नहीं कि जो प्रारम्भ करता है वह उद्धार पा ही लेगा, परन्तु वही पायेगा जो दौड़ को पूरा करता है। इब्रा. 12:1-3

5. शिष्य पवित्र जीवन जीने के द्वारा परमेश्वर की बात मानने और उसको प्रसन्न करने का प्रयास करता है।

5.1 परमेश्वर चाहता और अपेक्षा करता है कि उसकी संतानें पवित्र जीवन जिएं। 2 कुरिं. 3:16-19; फिलि. 3:7-16; 1 पत. 1:14-15

5.2 पवित्रता परमेश्वर के उद्धार और उसकी संतानों में उसकी उपस्थिति का प्रमाण है। 1 यूहन्ना 3:6-9

5.3 जीवन की पवित्रता प्रमाण है कि परमेश्वर की संतानें उससे सच में प्रेम करती हैं। यूहन्ना 14:15, 21

6. शिष्य दूसरे शिष्यों से प्रेम रखता है। यूहन्ना 13:34-35

6.1 शिष्य एक दूसरे से प्रेम रखते हैं। प्रेम मसीहियों का चिन्ह है। 1 यूहन्ना 4:11, 16

6.2 “प्रेम” शब्द के लिए यूनानी में तीन शब्द हैं: एरोज, फिलिओ, और अगापे। यूहन्ना की पहली पत्री में प्रयुक्त शब्द प्रेम शब्द “अगापे” से है जिसका अर्थ निस्स्वार्थ प्रेम होता है; शिष्य निस्स्वार्थ प्रेम से प्रेम रखते हैं।

7. शिष्य बहुत फल लाता है। यूहन्ना 15:8

7.1 परमेश्वर दाख की बारी का किसान है; और विश्वासीगण दाखलता की डालियां हैं। यूहन्ना 15:1

7.2 वह डालियों (शिष्यों) को छांटता है, ताकि उनमें और फल लगे। यूहन्ना 15:2

7.3 जो फल नहीं लाता वह जला दिया जाएगा। यूहन्ना 15:6

7.4 अवश्य है कि शिष्य का फल बना रहे। यूहन्न 15:16

7.5 शिष्य आत्मा का फल प्रदर्शित करता है। गलातियों 5:22-25

### निष्कर्ष:

- यीशु हमें अपना शिष्य बनने के लिए - और शिष्य बनाने के लिए - बुलाता है। दुःख की बात है कि सब “मसीही” शिष्य नहीं हैं।
- शिष्य अनुशासित होता है; इसका अर्थ है विश्वासीजन वही करता है जो उसका स्वामी चाहता है, जो वह स्वयं चाहता है वह नहीं।
- शिष्य परमेश्वर के वचन का पालन करता है और वचन जो कहता है उसे ही करने का प्रयास करता है।
- शिष्य, इस सतत उद्देश्य के साथ कि परमेश्वर को प्रसन्न करे, अपनी देह और अपने जीवन को प्रशिक्षित करता है।
- शिष्य एक निस्स्वार्थ, अर्थात्, परमेश्वर को पूर्णतः समर्पित जीवन के द्वारा पहचाना जाता है।
- शिष्य जानता है कि वह दाम देकर मोल लिया गया है, और उसका जीवन उसका अपना नहीं, परमेश्वर का है।
- यीशु उस शिष्य का प्रभु, अर्थात्, उसके जीवन का स्वामी और एकमात्र मालिक है।



## बाइबल के अनुसार शिष्य बनाने वाला - लूका 7:18-35

### प्रस्तावना:

आइए हम बाइबल के अनुसार शिष्य बनाने वाले यूहन्ना बप्तिस्मा देनेवाले का एक उदाहरण देखते हैं। यूहन्ना ने, परमेश्वर पिता की इच्छा पूरी करने लिये, और उसका पुत्र इस संसार में अपना राज्य स्थापित करे इसके लिए, अपने जीवन को समर्पित कर दिया था।

### 1. बप्तिस्मा देनेवाले यूहन्ना के शिष्य

1.1 यूहन्ना के शिष्य उसके प्रति विश्वासयोग्य थे। जब उन्हें लगने लगा कि यीशु यूहन्ना से अधिक लोकप्रिय हो रहा है, तब वे यूहन्ना से कहने लगे कि वह इस विषय में कुछ करे। लूका 7:18

1.2 तब यूहन्ना अपने शिष्यों को यीशु से प्रश्न पूछने के लिए भेजता है। (स्मरण करें कि यूहन्ना और यीशु एक दूसरे को जानते थे क्योंकि उनकी माताएं रिश्तेदार थीं।) लूका 7:19

1.2.1 यूहन्ना के शिष्य उसके प्रति आज्ञाकारी थे। लूका 7:20

1.2.2 जब यूहन्ना ने अपने शिष्यों को यीशु से पूछने भेजा तब क्या वह अपने आप पर और अपनी सेवकाई पर शंका प्रगट कर रहा था, या वह आत्मत्याग का प्रदर्शन कर रहा था?

1.2.2.1 यूहन्ना ने अपने शिष्यों को प्रोत्साहित किया कि वे उसे छोड़कर यीशु के पीछे जाएं। यूहन्ना 1:35-37

1.2.2.2 यूहन्ना पूरी तरह से आत्म-महत्वाकांक्षा से मुक्त था।

यूहन्ना 3:30

1.2.2.3 यूहन्ना जेलखाने में था जबकि यीशु सेवकाई में क्रियाशील था। उसके शिष्य उसके साथ जेलखाने में रह सकते थे यदि वह उनको यीशु के पास नहीं भेजा होता।

1.3 यूहन्ना के शिष्यों ने यूहन्ना के द्वारा सौंपे गये कार्य को पूरा किया और उससे उन्होंने यीशु के बारे में सीखा। लूका 7:21-23

1.3.1 यीशु उन आश्चर्यकर्मों को कर रहा था जिनके लिए यूहन्ना ने अपने शिष्यों को तैयार किया था।

1.3.2 यीशु के कार्यों ने गवाही दी थी कि वह कौन था (और है)।

## 2. यूहन्ना के बारे में यीशु की शिक्षा

2.1 यीशु ने शिक्षा दी कि यूहन्ना हवा के झोंकों से हिलनेवाला सरकंडा नहीं था। लूका 7:24

2.1.1 यीशु का कहना था कि यूहन्ना विश्वासयोग्यता का आदर्श, एक सशक्त और प्रबल मनुष्य था।

2.1.2 यूहन्ना इतना साहसी था कि वह हेरोदेस का साम्हना करने को तैयार था।

2.2 यूहन्ना कोमल वस्त्र पहना हुआ मनुष्य नहीं था। लूका 7:25

2.3 यूहन्ना भविष्यद्वक्ता से बढ़कर था। लूका 7:26

2.4 यूहन्ना वह संदेशवाहक था जो मसीह के आने के लिए मार्ग तैयार करने हेतु भेजा गया था। लूका 7:27

2.5 यीशु के कहने के अनुसार, यूहन्ना मनुष्यों में सब से महान था। लूका 7:28

2.6 यूहन्ना की सेवकाई ने यीशु के वचनों को विश्वसनीयता प्रदान की थी। लूका 7:29

2.6.1 लोग यीशु के पीछे जाने लगे क्योंकि उसने यूहन्ना के विषय में अच्छी बातें कही थी। लूका 7:30

### 3. लागूकरण: हमें यूहन्ना के उदाहरण का अनुसरण करना चाहिए।

- 3.1 शिष्य बनानेवाला शिष्यों को प्रशिक्षित करता है कि वे उसे छोड़कर यीशु की सेवकाई करने जाएंगे।
- 3.2 शिष्य बनानेवाला, अपने लिए नहीं, यीशु के लिए मार्ग तैयार करने की सेवकाई पर ध्यान केंद्रित रखता है।
- 3.3 शिष्य बनानेवाला, अपने सिद्धांतों के साथ समझौता नहीं करता।
- 3.4 शिष्य बनानेवाला, जब भी आवश्यक हो तब, एक पापी का साम्हना करता है, फिर समाज में चाहे उसका कितना ही ऊँचा स्थान क्यों न हो।
- 3.5 शिष्य बनानेवाले की सेवकाई यीशु की बड़ाई ही करती है, और शिष्य बनानेवाले की सेवकाई की बड़ाई यीशु भी करता है।
- 3.6 शिष्य बनानेवाला अपने शिष्यों के लिए अपना जीवन दे देता है।
  - 3.6.1 यूहन्ना ने अपने शिष्यों के लिए जो कुछ किया उसके कारण वह सब से महान शिष्य बनानेवालों में से एक ठहरा।
  - 3.6.2 यूहन्ना के विषय में यीशु ने जो कुछ कहा उसके कारण वह सब से महान शिष्य बनानेवालों में से एक ठहरा।

### 4. चुनौती:

- 4.1 शिष्य बनानेवालों को अवश्य ही सब से पहले स्वयं ही शिष्य होना चाहिये। हम शिष्य नहीं बना सकते जब तक हम स्वयं ही वास्तव में शिष्य नहीं हैं।
- 4.2 शिष्य बनने के लिये अनुशासन और कठिन परिश्रम आवश्यक होता है। अपनी पुस्तक *Disciplines of Godly Man* में आर. केन्ट ह्घीस ने कहा है, “बिना अनुशासन शिष्यता नहीं! बिना पसीना पवित्रता नहीं!”

- 4.3 प्रेरित पौलुस ने अपने शिष्य तीमुथियुस को यूँ समझाया था, “भक्ति की साधना कर। क्योंकि देह की साधना से कम लाभ होता है, पर भक्ति सब बातों के लिए लाभदायक है, क्योंकि इस समय के और आनेवाले जीवन की भी प्रतिज्ञा इसी के लिए है।” 1 तीमुथियुस 4:7-8
- 4.4 पौलुस ने यह भी लिखा है “हर एक पहलवान सब प्रकार का संयम करता है; . इसलिए मैं तो इसी रीति से दौड़ता हूँ, परन्तु लक्ष्यहीन नहीं; मैं भी इसी रीति से मुक्कों से लड़ता हूँ, परन्तु उस के समान नहीं जो हवा पीटता हुआ लड़ता है। परन्तु मैं अपनी देह को मारता कूटता और वश में लाता हूँ; ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करके मैं आप ही किसी रीति से निकम्मा ठहरूँ।” 1 कुरिन्थियों 9:25-27
- 4.5 क्या हम अनुशासित होने के लिए, कठिन परिश्रम करने के लिए, परीक्षा को हराने हेतु “अपनी देह को मारता कूटता” के लिए, और मसीह के शिष्यों के रूप में विजयी जीवन जीने के लिए तैयार हैं?

## शिष्य और वचन<sup>2</sup>

### प्रस्तावना:

यीशु, परमेश्वर के वचन को अच्छी रीति से जानता था और बहुत बार उन्हें कहता था और उन्हें शिक्षा देता था। इसी प्रकार से, यीशु के सच्चे शिष्य को चाहिए कि परमेश्वर के वचन को अच्छे से जाने और उसकी शिक्षाओं पर अपने जीवन और सेवकाई को आधारित करे।

### 1. यीशु वचन को अच्छे से जानता था और बहुधा उनका हवाला देता था और उन्हें कहता था।

- 1.1 यहाँ तक कि मात्र 12 वर्ष की कम उम्र में ही यीशु पवित्रशास्त्र को अच्छे से जानता था, और उसने उन पर मन्दिर के शिक्षकों के साथ चर्चा की थी। लूका 2:46-47
- 1.2 जब शैतान ने जंगल में यीशु की परीक्षा करने का प्रयास किया तब यीशु ने उसका प्रतिउत्तर परमेश्वर के वचन को कहते हुये दिया था। मत्ती 4:4, 7, 10
- 1.3 जब एक व्यवस्थापक ने अनन्त जीवन प्राप्त करने के बारे में प्रश्न करते हुये यीशु को परखना चाहा (लूका 10:25-28) तब यीशु ने अपने प्रतिउत्तर को, व्यवस्थाविवरण 6:5 और लैव्यव्यवस्था 19:18 के वचनों को कहते हुये, पवित्रशास्त्र पर आधारित किया।
- 1.4 आकलन लगाया गया है कि यीशु ने 78 बार पवित्रशास्त्र के वचनों का सीधा-सीधा उद्धरण दिया या अपरोक्ष रूप से उनका उपयोग किया है।

### 2. यीशु के शिष्य भी पवित्रशास्त्र को अच्छे से जानते थे और उन्हें कहते थे या उनका हवाला देते थे।

- 2.1 नया नियम के लेखकों ने पुराना नियम के लगभग 250 उद्धरणों को

सीधे-सीधे सम्मिलित किया है।

- 2.2 रोम के विश्वासियों को लिखे अपने पत्र में पौलुस प्रेरित ने पुराना नियम पवित्रशास्त्र से 80 से ज्यादा उद्धरणों को सम्मिलित किया है।
- 2.3 जब मत्ती ने यीशु के जीवन और जन्म के अपने अभिलेख को लिखा तब उसने पुराना नियम के अनेक उद्धरणों को सम्मिलित किया। उदाहरण के लिए मत्ती 2:6; 2:18; और 3:3।

### 3. पवित्रशास्त्र हमें, अर्थात् परमेश्वर के बच्चों को, प्रोत्साहित करता है कि हम अपने आप को परमेश्वर के वचन में डुबा दें।

- 3.1 भजन संहिता हमें बताती है कि हमारे पैरों (हमारे कार्य, हमारे जीवन) को दिशा देने के लिए परमेश्वर का वचन एक दीपक है। भजन 119:105
  - 3.1.1 ऐसा ही एक भाव हमें नीतिवचन में भी मिलता है। नीतिवचन 6:23
  - 3.1.2 पतरस ने लिखा है कि भविष्यद्वक्ताओं का वचन अंधकार में चमकने वाले प्रकाश के समान है। 2 पतरस 1:19
- 3.2 हम भजन संहिता में यह भी पढ़ते हैं कि वचन के अनुसार जीने के द्वारा हम अपने आप को शुद्ध रख सकते हैं। भजन 119:9
- 3.3 परमेश्वर के वचन को जानने (उसे अपने हृदयों में छिपाने) से परीक्षा और पाप से लड़ने में सहायता होती है। भजन 119:11
- 3.4 बइबल हमें बताती है कि जब हम वचन में अपना समय बिताते हैं तब परमेश्वर हमारे विश्वास को बढ़ाता है। रोमियों 10:17

### 4. यीशु मसीह के शिष्यों के रूप में, हमें अपने आप को इसी प्रकार से परमेश्वर के वचन के अध्ययन और ज्ञान में डुबा देना चाहिए।

- 4.1 प्रत्येक शिक्षित शिष्य को परमेश्वर का वचन प्रतिदिन पढ़ना चाहिये। ऐसा मसीही जो अभी तक पढ़ा-लिखा नहीं है, उसे परमेश्वर के वचन को प्रतिदिन, या जितनी बार सम्भव हो सके उतनी बार, वचन

को सुनने का कोई साधन खोज लेना चाहिए।

- 4.2 प्रत्येक शिष्य को, उन पदों को मुखाग्र करने के द्वारा जो विशेष रूप से अर्थपूर्ण हैं, परमेश्वर के वचन को अपने हृदय में रख छोड़ना चाहिये।
- 4.3 यहाँ उन शास्त्र वचनों की सूची है जिन्हें प्रत्येक शिष्य को मुखाग्र जानना चाहिए।

4.3.1 - मत्ती 24:14

4.3.2 - मत्ती 28:19-20

4.3.3 - मरकुस 16:15

4.3.4 - यूहन्ना 1:12

4.3.5 - यूहन्ना 3:3

4.3.6 - यूहन्ना 3:16-18

4.3.7 - यूहन्ना 14:6

4.3.8 - प्रेरित 1:8

4.3.9 - रोमियों 3:23

4.3.10- रोमियों 5:8

4.3.11- रोमियों 6:23

4.3.12- रोमियों 10:9

4.3.13- रोमियों 12:1

4.3.14- गलातियों 5:22-23

4.3.15- इफिसियों 6:12

4.3.16- फिलिप्पियों 4:8

4.3.17- 1 पतरस 2:9

4.3.18- 2 पतरस 3:11-12

4.3.18- 1 यूहन्ना 1:9

4.3.20- मीका 6:8

## शिष्यता और प्रार्थना

### प्रस्तावना:

यीशु के लिए प्रार्थना बहुत महत्वपूर्ण थी (है)। वह प्रार्थना में बहुत समय व्यतीत करता था। उसी प्रकार से, यीशु के सच्चे शिष्य को “निरन्तर प्रार्थना” करने की आदत बना लेनी चाहिए। सब शिष्यों के जीवन में प्रार्थना का स्थान सर्वोच्च प्राथमिकताओं में से एक होना चाहिए।

### 1. यीशु, प्रार्थना में समय देने के लिए बहुधा भीड़ से, यहाँ तक कि अपने शिष्यों से भी, अलग चला जाता था।

- 1.1 लूका 5:16 में लिखा है : “परन्तु वह जंगलों में अलग जाकर प्रार्थना किया करता था।” यीशु प्रार्थना के मूल्य को समझता था और प्रार्थना में समय लगाने के लिए बहुधा वह अलग चला जाता था।
- 1.2 लूका 6:12 का कथन है: “उन दिनों में वह पहाड़ पर प्रार्थना करने गया ...।” यीशु को बाहर जाकर प्रार्थना करना पसंद था, बाहर जहाँ वह परमेश्वर की उपस्थिति और प्रकृति की सुन्दरता में अकेला और शांत हो सकता था। भजन 19:1 में लिखा है: “आकाश परमेश्वर की महिमा का वर्णन कर रहा है; और आशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट कर रहा है।” प्रकृति के आश्चर्यों के बीच अपने सृष्टिकर्ता से बातचीत के लिए और अच्छा स्थान कहाँ हो सकता है?
- 1.3 मरकुस 1:35 में हम पढ़ते हैं कि यीशु भोर को दिन निकलने से बहुत पहले, जबकि अभी भी अन्धेरा ही था, किसी एकान्त में प्रार्थना करने निकल गया। मरकुस 1:35
- 1.4 बारह प्रेरितों का चुनाव करने से पहले, यीशु ने पूरी रात प्रार्थना करने में लगायी थी। लूका 6:12



## 2. यीशु दूसरों के साथ समूह में भी प्रार्थना करता था।

- 2.1 यीशु अपने साथ प्रार्थना करने के लिए पतरस, यूहन्ना और याकूब को एक पहाड़ पर ले गया था। लूका 9:28
- 2.2 उसने उन्हें एक साथ प्रार्थना करने में एक मन होने की शिक्षा दी थी, और उन्हें परमेश्वर के उत्तर का भरोसा दिया था। मत्ती 18:19

## 3. यीशु ने न मात्र अपने लिए, परन्तु दूसरों के लिए भी प्रार्थना की थी।

- 3.1 यीशु ने अपने पास लाए गए बच्चों को परमेश्वर की आशीष मिलने हेतु प्रार्थना की थी। मत्ती 19:13-14
- 3.2 यीशु ने शमौन पतरस के लिए प्रार्थना की थी। लूका 22:32
- 3.3 उसने अपने चेलों के लिए - और सब विश्वासियों के लिए - प्रार्थना की थी। यूहन्ना 17:9, 20
- 3.4 यीशु ने उनके लिए भी प्रार्थना की जिन्होंने उसे कीलों से क्रूस पर जड़ दिया था। लूका 23:34
- 3.5 यीशु अभी भी पिता के साम्हने हमारे लिए बिनती करते हुए प्रार्थना कर रहा है। इब्रा. 7:25

## 4. यीशु ने अपने शिष्यों को प्रार्थना का महत्व सिखाया था।

- 4.1 यीशु ने अपने चेलों को प्रार्थना में दृढ़ बने रहना सिखाया था। लूका 11:5-13; लूका 18:1-5
- 4.2 यीशु ने घोषणा की कि मन्दिर को सब जातियों के लोगों के लिए प्रार्थना का घर होना है। मरकुस 11:17
- 4.3 उसने अपने चेलों को सरल सीधे रूप में प्रार्थना करना सिखाया, शब्दों के निरर्थक दुहराव के साथ नहीं। मत्ती 6:7

## 5. यीशु ने अपने चेलों को ( और हमें ) एक आदर्श प्रार्थना प्रदान की है। लूका 11:1-4

- 5.1 यह एक आराधना से आरम्भ होती है। लूका 11:2

5.2 यह प्रतिदिन की आवश्यकताओं की बिनती से आगे बढ़ती है। लूका 11:3

5.3 यह परमेश्वर की क्षमा के लिए बिनती करती है (और दूसरों के लिए हमारी क्षमा को अभिव्यक्त करती है)। लूका 11:4

5.4 परीक्षाओं पर जय पाने के लिए यह परमेश्वर की सामर्थ के लिए बिनती करती है। लूका 11:4

6. यीशु ने अत्यंत धुन के साथ प्रार्थना की थी। इब्रानियों 5:7

7. इसी प्रकार से हमें, जो यीशु के हम चेलें हैं, अपने आप को प्रार्थनामय जीवन के लिए समर्पित करना चाहिए।

7.1 नया नियम के विश्वासी एक साथ प्रार्थना करने में बहुत समय देते थे। प्रेरित 1:14

7.2 भजन 46:10 में हम पढ़ते हैं: “चुप हो जाओ, और जान लो कि मैं ही परमेश्वर हूँ।” कभी कभी परमेश्वर के आगे “चुप हो” जाना हमारे लिए महत्वपूर्ण होता है, परन्तु इसे करने का, विशेषकर हमारी व्यस्ततापूर्ण संस्कृति में, एक मात्र तरीका प्रार्थना में परमेश्वर के साथ एकान्त में रहना है।

7.3 बाइबल में हमें निरन्तर प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित किया गया है। 1 थिस्सलुनीकियों 5:17

7.4 हमें धन्यवाद के साथ प्रार्थना में लगन से लगे रहने के लिए प्रोत्साहित किया गया है। कुलुस्सियों 4:2

7.5 हमें हमारी आवश्यकताओं को परमेश्वर के सन्मुख उपस्थित करने के लिए प्रोत्साहित किया गया है। फिलिप्पियों 4:6-7

7.6 हमें सामर्थ के लिए परमेश्वर से बिनती करने के लिए प्रोत्साहित किया गया है। इफिसियों 3:14-16, 20

7.7 हमें परमेश्वर की अगुवाई के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित किया गया है। कुलुस्सियों. 4:3

7.8 हमें आत्मा में प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित किया गया है। इफिसियों  
6:18

7.9 हमें परीक्षा पर जय पाने हेतु प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित किया है।  
मत्ती 26:41

7.10 हमें परमेश्वर से बुद्धि मांगने हेतु प्रार्थना करने के लिये प्रोत्साहित  
किया गया है। याकूब 1:5, 6

7.11 हमें दूसरों के निमित्त प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित किया गया है।  
1 तीमुथियुस 2:1

## 8. परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं को सुनने और उत्तर देने की प्रतिज्ञा करता है।

8.1 परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं को सुनता और उत्तर देता है जब हम उसमें  
और उसका वचन हम में बना रहता है। यूहन्ना 15:7

8.2 जब हम परमेश्वर को पुकारते हैं, वह हमें “बड़ी बड़ी और कठिन”  
बातें सिखाने की प्रतिज्ञा करता है। यिर्म. 33:3

8.3 परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं का सम्मान करता है जब हम उसके नाम से  
बिनती करते हैं। यूहन्ना 14:14

8.4 परमेश्वर एक धर्मी जन की प्रार्थना का उत्तर देता है। भजन 24:3-4;  
1 यूहन्ना 3:22; याकूब 5:6

## शिष्य और उसका समय

### प्रस्तावना:

जिस प्रकार से यीशु के चेले का हृदय परमेश्वर का होता है, ठीक वैसे ही उस चेले का समय भी परमेश्वर का होता है। और ठीक जिस प्रकार से परमेश्वर हमारे हृदयों को पाप के दण्ड से 'दाम देकर छुड़ाता है' और हमें अनन्त जीवन का वरदान प्रदान करता है, उसी प्रकार से हमें अपने समयों को 'बहुमूल्य समझना या उसे छुड़ा लेना' है ताकि दूसरे भी परमेश्वर के अनन्त जीवन को प्राप्त करें।

### 1. परमेश्वर हमें समझाता है कि अवसर को "बहुमूल्य समझो" क्योंकि दिन बुरे हैं। इफिसियों 5:15-16

- 1.1 अवसर को बहुमूल्य समझने का अर्थ यह है कि हमें हमारा अधिक से अधिक समय परमेश्वर की महिमा के लिये और अधिक से अधिक प्राणों के उद्धार के लिए देना है या प्रत्येक अवसर का अधिकतम उपयोग करना है।
- 1.2 दिन बुरे हैं और लोग विनाश की ओर जा रहे हैं। यदि परमेश्वर के बच्चे अपने समय को बहुमूल्य नहीं समझेंगे, और प्रत्येक अवसर का अधिकतम उपयोग नहीं करेंगे, तो खोए हुए लोग नाश होंगे और परमेश्वर को महिमा नहीं मिलेगी।

### 2. मूल यूनानी भाषा में 'बहुमूल्य समझो' के लिये प्रयोग किये गये शब्द का एक अर्थ 'छुड़ा लो' होता है। किसी वस्तु को छुड़ाने का अर्थ है किसी से उस वस्तु को खरीद लेना।

- 2.1 'बहुमूल्य समझो' के लिये मूल यूनानी भाषा में जो 'छुड़ा लो' शब्द है वह वही शब्द है जिसका उपयोग उस बात का वर्णन करने के

- लिए किया गया है जो यीशु ने हमारे लिए की जब उसने व्यवस्था के शाप से हमें छुड़ लिया (हमें खरीद लिया)। गलातियों 3:13; 4:5
- 2.2 यह वही शब्द है जिसका उपयोग पौलुस ने कुलुस्सियों को लिखी पत्री में वहां किया है जहां उसने उन्हें (और हमें) अवसर को बहुमूल्य समझने के लिए चिताया है। कुलुस्सियों 4:5
- 2.3 समय बीतता चला जा रहा है। कल का दिन पहले ही बीत गया है; आज का दिन भी जल्द ही नहीं रहेगा। आइए हम अपने दिनों का उपयोग परमेश्वर की महिमा के लिए करें। आइए हम अपने आस-पास के लोगों के मध्य उसके प्रेम और उद्धार की घोषणा करने के लिये समय को बहुमूल्य समझें और प्रत्येक अवसर को पकड़ लें!

### 3. इन शास्त्रस्थलों में पौलुस प्रेरित के द्वारा समय के लिए “काइरॉस” शब्द प्रयुक्त है।

- 3.1 “काइरॉस” समय के लिए प्रयुक्त किये गये अन्य यूनानी शब्द “क्रोनॉस” से भिन्न है।
- 3.2 प्रतिदिन के मिनटों और घण्टों की तरह “क्रोनॉस” एक अविशिष्ट समय की ओर संकेत करता है। “काइरॉस” शब्द किसी विशिष्ट, उद्देश्यपूर्ण समय का संकेत करता है। परमेश्वर हमारे दिनों के “काइरॉस” को नियुक्त करता है। उन “काइरॉस” अवसरों को, जिन्हें परमेश्वर हमें अपने उद्देश्यों को पूरा करने और अपने नाम की महिमा के लिए देता है, हमें पकड़ लेना है।

### 4. समय को बहुमूल्य समझने का क्या अर्थ है?

- 4.1 समय को बहुमूल्य समझने का अर्थ और अधिक कार्य करना, अपने समय-चक्र में अधिकाधिक गति-विधि भर लेना नहीं है। इसका अर्थ सही बात (या बातों) को करना है।
- 4.2 उसी बात को बाइबल हमें बताती है जिसे हम पहले से ही जानते हैं - कि समय क्षणिक (“भाप के समान”) है। याकूब 4:14

- 4.3 मूसा ने अपने दिनों का अधिकाधिक सदुपयोग करने के लिए परमेश्वर से सहायता मांगी थी। भजन 90:12
- 4.4 हमारा समय परमेश्वर के द्वारा दिया गया एक संसाधन है - सही उपयोग के लिए हमें सौंपा गया है। जिस प्रकार से हमें अपने धन के अच्छे भण्डारी होना हैं, उसी प्रकार से हमें अपने समय के भी अच्छे भण्डारी होना हैं।
- 4.5 हम अपने समय को किस प्रकार खर्च करते हैं यह मात्र अधिकतम रूप से प्रभावशाली होने का व्यवहारिक मुद्दा ही नहीं रह जाता परंतु यह एक आत्मिक निर्णय की बात हो जाती है।

## 5. यीशु के शिष्य किस प्रकार से अपने समय को बहुमूल्य समझ सकते हैं?

- 5.1 पुनः, स्मरण रखें कि समय को बहुमूल्य समझने का अर्थ व्यस्त होना नहीं है। इसका अर्थ उद्देश्यपूर्ण होना है। इसका अर्थ है कि हम अपने समय को उन क्रियाकलापों में लगाते हैं जो परमेश्वर की महिमा करेंगे और आत्मिक फल का परिणाम लायेंगे।
- 5.2 एक महत्वपूर्ण आदत जो समय को मूल्यवान समझने में शिष्यों की सहायक होती है यह है कि अपने समय के उपयोग की प्राथमिकताओं का निर्धारण के लिए प्रतिदिन प्रार्थना करना और परमेश्वर से अगुवाई मांगना।
- 5.3 एक अन्य महत्वपूर्ण आदत यह है कि उस दिन, उस सप्ताह, उस महीने, इत्यादि के लिए लक्ष्य निर्धारित करें।
  - 5.3.1 प्रतिदिन की प्रथमिकता को निर्धारित करने के बारे में, पहले दिये गये सुझाव की तरह ही, लक्ष्यों को परमेश्वर की अगुवाई मांगने बाद ही निर्धारित किया जाना चाहिए। इसके बाद शिष्य को इन लक्ष्यों को पाने के लिए परमेश्वर की सहायता और सामर्थ के लिए प्रार्थना करना चाहिए।

5.3.2 ईश्वरीय लक्ष्यों के कुछ उदाहरण ये हैं: हर एक दिन का आरंभ, कम से कम एक घन्टा परमेश्वर के साथ बिताते हुये करें; प्रति सप्ताह कम से कम ..... लोगों को सुसमाचार सुनायें; वर्ष में एक बार बाइबल को पूरा पढ़ें; आगामी छः माह में कम से कम ..... प्रार्थना झुण्डों की स्थापना करें; इत्यादि।

5.4 हर दिन परमेश्वर के साथ प्रारम्भ करना - प्रार्थना में और वचन में समय व्यतीत करना - उस समय को बहुमूल्य समझने का एक शक्तिशाली माध्यम है जिसे परमेश्वर अपने शिष्यों का प्रति दिन और प्रत्येक दिन प्रदान करता है।

5.5 एक नियमित समय-सारणी बनाना - और उस समय-सारणी का सम्मान करना यह अपने शिष्यों को परमेश्वर के द्वारा दिए गए समय को मूल्यवान समझने का एक बहुमूल्य साधन है।

**6. परमेश्वर अपने उन शिष्यों को प्रतिफल देगा जो उसकी महिमा और उसके उद्देश्यों के लिए समय को बहुमूल्य समझते हैं।**

6.1 वह अपने शिष्यों को इस जीवन में इनाम के रूप में उद्देश्य, सार्थकता और "बहुतायत का जीवन" देगा। यूह. 10:10

6.2 वह अपने शिष्यों को स्वर्ग में पांच मुकुटों का इनाम देगा।

6.2.1 न मुरझाने वाला (विजय) मुकुट। 1 कुरिन्थियों 9:25

6.2.2 जीवन का मुकुट। याकूब 1:12; प्रकाशितवाक्य 2:10

6.2.3 आत्मा-जीतने वालों का मुकुट। 1 थिस्सलुनीकियों 2:19

6.2.4 धार्मिकता का मुकुट। 2 तीमुथियुस 4:8

6.2.5 महिमा का मुकुट। 1 पतरस 5:4

## शिष्य और उसका हृदय

### प्रस्तावना:

बाइबल बताती है कि मनुष्य बाहरी रूप को देखता है (परखता है), परन्तु परमेश्वर हृदय को देखता है। वह देखता है कि हम वास्तव में कैसे हैं। परमेश्वर को इस से कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम ऊँचे हैं या नाटे, सांवले हैं या गोरे, रूपवान हैं या साधारण हैं। परमेश्वर को इस बात से फर्क पड़ता है कि हमारे हृदय की दशा कैसी है।

1. हमारा हृदय निर्धारित करता है कि हम कौन हैं; हमारा बाहरी रूप निर्धारित करता है कि हम कैसे दिखते हैं। हमारे बाहरी रूप के बारे में बाइबल क्या कहती है?

1.1 बाइबल कहती है कि हमारी सुन्दरता हमारे वस्त्रों और बाहरी रूप के कारण नहीं होनी चाहिये, परन्तु हमारा “छिपा हुआ और गुप्त मनुष्यत्व, नम्रता और मन की दीनता की अविनाशी सजावट से सुसज्जित रहे, क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में इसका मूल्य बढ़ा है।”

1 पतरस 3:3-4

1.2 नीतिवचन में हम पढ़ते हैं कि “शोभा तो झूठी और सुन्दरता व्यर्थ है, परन्तु जो स्त्री यहोवा का भय मानती है उसकी प्रशंसा की जाएगी।” नीतिवचन 31:30

1.3 तथापि, जैसा कि बाइबल बताती है, मनुष्य बाहरी रूप को देखता है। अतः, मसीह के राजदूत के रूप में उसके शिष्यों के लिये यह महत्वपूर्ण है कि अपनी बाहरी वेशभूषा और आधारभूत व्यक्तिगत साफ-सफाई पर कुछ ध्यान अवश्य दें। 1 कुरिन्थियों 6:19-20; 2 कुरिन्थियों 5:20



**2. अपने शिष्यों में जिस प्रकार के हृदय की अपेक्षा परमेश्वर करता है उसके बारे में बाइबल क्या बताती है?**

- 2.1 परमेश्वर चाहता है कि हमारे हृदय शुद्ध हों। भजन 24:3-4; मत्ती 5:8
- 2.2 बीज बोनेवाले के यीशु के दृष्टान्त में, उस ने कहा है कि “अच्छी भूमि में के वे हैं, जो वचन को सुनकर भले और उत्तम मन में सम्भाले रहते हैं, और धीरज से फल लाते हैं।” लूका 8:15
- 2.3 परमेश्वर चाहता है हम में नम्र हृदय हो। लूका 18:14; याकूब 4:6
- 2.4 परमेश्वर हम में ऐसे हृदय चाहता है जो दया, भलाई और नम्रता से भरे हुए हों; ऐसे हृदय जो क्षमा के लिए तैयार रहते हैं। कुलुस्सियों 3:12-13
- 2.5 परमेश्वर हमारे हृदयों को देखता है। परमेश्वर हमारे मनोभावों को, हमारे विचारों को, हमारी कल्पनाओं को देखता है। वह चाहता है कि हमारा हृदय शुद्ध, नम्र हो जो उसकी भलाई और अनुग्रह से भरा हो। गलातियों 5:22-25

**3. जैसा हृदय यीशु हम में चाहता है, वैसा हृदय उसके शिष्य कैसे प्राप्त कर सकते हैं?**

- 3.1 हमें अपने पापों की क्षमा के लिये और शुद्ध हृदय के लिए प्रतिदिन परमेश्वर से बिनती करनी चाहिये। लूका 11:4; भजन 51:10
- 3.2 परमेश्वर के वचन में उसके साथ समय व्यतीत करने के द्वारा हमारे हृदय शुद्ध हो सकते हैं। यूह. 15:3; 17:17
- 3.3 परमेश्वर के वचन को मुखाग्र करना हमें उस प्रकार का हृदय प्रदान करता है जैसा परमेश्वर अपने शिष्यों में चाहता है। भजन 119:9-11
- 3.4 हमारे हृदय विश्वास के द्वारा शुद्ध किए जाते हैं। प्रेरित 15:9
- 3.5 जिस प्रकार बुद्धिमानों के साथ समय बिताना बुद्धिमान होने में सहायक होता है, उसी प्रकार शुद्ध हृदय वालों के साथ समय बिताना हमें शुद्ध

हृदय पाने में सहायक होता है। नीतिवचन 13:20

3.6 हमारे मनो को स्वस्थ, सकारात्मक विचारों से भरना सहायक होता है।  
फिलिप्पियो 4:8

4. जो हमारे मुंह से अन्दर जाता है वह हमें अशुद्ध नहीं करता, परंतु वही जो हमारे मुंह से बाहर आता है हमें अशुद्ध कर सकता है।

4.1 बाइबल हमें प्रोत्साहित करती है कि हम एक दूसरे को सुधारें, आवश्यकता होने पर डांट लगाएं, और एक दूसरे को प्रोत्साहित करें (उत्साहित करने वाले वचन बोलें)। इफिसियों 4:29; 2 तीमुथियुस 4:2

4.2 क्रोध, रोष, बैरभाव, निन्दा, और मुंह से गाली बकना और झूठ बोलने वाली जीभ से परमेश्वर अप्रसन्न होता है। कुलुसियों 3:8-9

4.3 यीशु ने कहा है कि जो हमारे हृदय में है वह हमारे मुख के शब्दों के द्वारा बाहर आने का रास्ता पा लेता है। लूका 6:45

5. नीतिवचन 4:23 में हम पढ़ते हैं कि हमें अपने हृदय की रक्षा करनी है। ऐसा हमें क्यों करना चाहिए?

5.1 हमें अपने हृदय की रक्षा करनी है क्योंकि जीवन का मूलस्रोत वहीं से है। यह हमारे मनोभावों, मूल्यों, महत्वाकांक्षाओं, और प्रयासों का सोता है। नीतिवचन 4:23

5.2 हमें अवश्य ऐसा करना है क्योंकि हमारे हृदयों का स्वभाविक झुकाव परमेश्वर के विरुद्ध जाना होता है। नीतिवचन 19:3

5.3 हमें अवश्य अपने हृदय की रक्षा करनी है क्योंकि यह परमेश्वर से दूर भटकने की ओर प्रवृत्त है। यशा. 53:6

5.4 हमें अवश्य अपने हृदय की रक्षा करनी है क्योंकि यह (बिना परमेश्वर) धोखा देनेवाला और असाध्य रोग से ग्रसित है। यीर्मयाह 17:9

**6. जैसा परमेश्वर चाहता है वैसा हृदय हम किस प्रकार से विकसित कर सकते हैं?**

जैसा परमेश्वर चाहता है वैसा हृदय विकसित करने के लिये:

- 6.1 हम धन्यवादित हो सकते हैं। फिलिप्पियों 4:4-8
- 6.2 हम परमेश्वर से जुड़ सकते हैं। मत्ती 6:9-13
- 6.3 हम एकाग्रचित्त हो सकते हैं। इब्रानियों 10:19-25
- 6.4 हम तैयार रह सकते हैं। इफिसियों 6:12-18
- 6.5 हम उत्सुक रह सकते हैं कि सब बातों में परमेश्वर को पहला स्थान दें। मत्ती 6:33; व्यवस्थाविवरण 6:5
- 6.6 हम प्रेम करनेवाले हो सकते हैं। मत्ती 7:12; लैव्यव्यवस्था 19:18
- 6.7 हम फलवंत बन सकते हैं। यूहन्ना 15:1-4

## शिष्य और उसके सम्बंध

### प्रस्तावना:

- यद्यपि हमारे लिए समझना कठिन है तौभी परमेश्वर त्रिएक परमेश्वर है - तीन व्यक्तित्व: पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा - जबकि इसी के साथ यह भी सच है कि एक ही परमेश्वर है। व्यवस्थाविवरण 6:4
- इस त्रिएकत्व के ये तीन व्यक्तित्व लगातार एक स्वस्थ सम्बंध में हैं। वैसे ही मसीह के शिष्यों को एक दूसरे के साथ एक स्वस्थ सम्बंध में जीना चाहिये।

### 1. शिष्यों को अपनी पत्नी/पति के साथ के अपने सम्बंधों को अवश्य ही मूल्यवान मानना है और उसे पोषित करना है।

- 1.1 बाइबल पत्नियों को निर्देश देती है कि वे जैसे प्रभु के, अपने-अपने पति के आधीन रहें (इफि. 5:22), और पति अपनी-अपनी पत्नी से वैसे ही प्रेम करें जैसे मसीह ने कलीसिया से प्रेम रखा और अपने आपको उसके लिए दे दिया (इफि. 5:25)। इफिसियों 5:22-25
- 1.2 कलीसिया के लिए अपना प्राण देने के द्वारा, और अभी भी उसके लिए बिनती करते रहने के द्वारा, मसीह ने उसके प्रति अपने प्रेम का प्रदर्शन किया है। ठीक इसी तरीके से पतियों को भी, अवश्य ही अपनी-अपनी पत्नी के लिए प्राण देने के लिये तैयार होना है, उनके दुखों को अपना बना लेना है, और उनके लिये प्रार्थना करते रहना है। रोमियों 8:34
- 1.2 स्मरण रखें कि शिष्यों के विवाह से, जैसे कि उनके जीवन की प्रत्येक बात से, परमेश्वर को आदर और महिमा मिलनी चाहिये।  
1 कुरिन्थियों 10:31

- 1.4 मसीही विवाह अपने-अपने पतियों/पत्नियों के प्रति परमेश्वर के अनुग्रह और प्रेम को बांटने का एक सुअवसर है। उत्पत्ति 2:1
  - 1.5 मसीही विवाह संसार पर राज्य स्थापित करने के लिए परमेश्वर की एक योजना है। उत्पत्ति 1:27-28
  - 1.6 मसीही विवाह प्रभु यीशु मसीह के बारे में, और उसकी कलीसिया के साथ उसके सम्बंध के बारे में, एक संदेश है। विवाह, पति-पत्नि के जीवन के द्वारा, प्रतिदिन सुसमाचार का एक प्रदर्शन है।
  - 1.7 किसी भी अन्य महत्वपूर्ण बात की ही तरह, अवश्य है कि हम अपने पति/पत्नि के साथ समय बितायें, एक ऐसा समय जिसमें हम उनके साथ एक गहन, अर्थपूर्ण वार्तालाप में पूरी तरह जुट जाते हैं। 1 पतरस 3:1, 7
- 2. शिष्यों को अवश्य ही अपने बच्चों के साथ अपने सम्बंधों को मूल्यवान जानना और पोषित करना है।**
- 2.1 इफिसियों 6:4 में पालकों के लिये निर्देश है कि उन्हें क्या करना और क्या नहीं करना चाहिये: “हे बच्चेवालो, अपने बच्चों को रिस न दिलाओ, परन्तु प्रभु की शिक्षा और चेतावनी देते हुए उनका पालन-पोषण करो” - अर्थात् उन्हें प्रभु के प्रतिक्षण और आज्ञा में बढ़ाओ।
  - 2.2 माता-पिता सीमा से बाहर आलोचना करने, सीमा से बाहर सख्त होने, अनावश्यक रूप से रिस दिलानेवाले होने के द्वारा, एक बच्चे को दूसरों से बढ़कर चाहने और सब से एक जैसा व्यवहार न रखने के द्वारा अपने बच्चों को रिस दिला सकते हैं और भड़का सकते हैं।
  - 2.3 माता-पिताओं को अपने बच्चों के साथ के अपने सम्बंधों में परमेश्वर के स्वभाव को प्रदर्शित करना चाहिये।
  - 2.4 और ठीक जिस प्रकार से परमेश्वर हमें, अर्थात् अपने शिष्यों को अनुशासित करता है वैसे ही हमें भी अवश्य ही कि जब आवश्यक हो तब अपने स्वयं के बच्चों को प्रेम से अनुशासित करें।

- 2.5 नीतिवचन 22:6 कहता है: “लड़के को उसी मार्ग की शिक्षा दे जिसमें उसको चलना चाहिए”। “शिक्षा दे” के लिए जो शब्द है उसमें शिक्षा के साथ ही सुधार और अनुशासन का भाव भी है।
- 2.6 आवश्यकता है कि जब हमारे बच्चे पाप करते हैं तब हम उन्हें नियंत्रित करें (मूल शब्द का अर्थ शिक्षा देना, सुधारना, साम्हना करना है)। पहले शमूएल में हम पढ़ते हैं कि एली ने अपने पुत्रों को नियंत्रित नहीं किया और फिर परमेश्वर ने उन्हें नाश कर दिया।
- 2.7 किसी अन्य महत्वपूर्ण बात की ही तरह, हमें अपने बच्चों के साथ समय बिताना है, एक ऐसा समय जिसमें हम उनके साथ एक गहन, अर्थपूर्ण वार्तालाप में पूरी तरह जुट जाते हैं।
- 3. शिष्यों को अपने मित्रों के साथ के अपने सम्बंधों को मूल्यवान जानना है और पोषित करना है।**
- 3.1 परमेश्वर चाहता है और अपेक्षा करता है कि उसके शिष्य दूसरों के साथ एकता में रहें। 1 पतरस 3:8-9
- 3.2 दाऊद के साथ योनातन का प्रेम हमारे लिए उदाहरण प्रदान करता है कि सच्चे मित्रों में एक दूसरे के लिए बन्धन और प्रेम होता है। 1 शामुएल 18:1
- 3.3 गहन, स्वस्थ सम्बंधों को विकसित करने और पोषित करने में समय लगता है। 1 शामुएल 18:2
- 3.4 गहन, स्वस्थ सम्बंधों को एक दूसरे के प्रति आपसी समर्पण की आवश्यकता होती है, जैसे कि योनातन और दाऊद का उदाहरण है। 1 शामुएल 18:3-4
- 3.5 अच्छे मित्र ईमानदार होते हैं और वे एक दूसरे को प्रोत्साहित करते हैं। 1 शामुएल 19:4; 23:16
- 3.6 अच्छे मित्र स्थाई और विश्वासयोग्य होते हैं। नीतिवचन 17:17
- 3.7 परमेश्वर चाहता है कि हम दूसरे विश्वासियों के साथ एकता में जीवन

व्यतीत करें।इफिसियों 4:1-3

- 3.8 ऑगस्टीन ने भला ही कहा है: “अवश्यक बातों में एकता हो; गैर-आवश्यक बातों में स्वतंत्रता हो; सब बातों में दया हो।”
- 3.9 जो प्रेम हम शिष्यों में एक दूसरे के प्रति है वह संसार के आगे गवाही है कि हम परमेश्वर से हैं और परमेश्वर के द्वारा भेजे गए हैं। यूहन्ना 17:20-24

## शिष्य-बनाने वाले होना ( सलाहकार एवं सलाह-प्राप्तकर्ता का रिश्ता )

### प्रस्तावना:

- बरनबास एक आदर्श शिष्य-बनानेवाला था। उसके जीवन से हम अनेक महत्वपूर्ण शिक्षाएं ले सकते हैं। वह पौलुस और यूहन्ना मरकुस के लिए एक सलाहकार था।
- आइए देखते हैं कि वह कौन था, वह कहाँ से आया था, वह किसके समान था, और उसने क्या किया ताकि हम उसके धार्मिक उदाहरण का अनुसरण कर सकें।

### 1. यूसुफ, जिसे बरनबास नाम दिया गया, कौन था?

- 1.1 वह एक लेवी था। प्रेरित 4:36
- 1.2 वह यूहन्ना मरकुस का चाचा या मामा था। कुलुस्सियों 4:10
- 1.3 वह एक शिक्षक और मिशनरी था। प्रेरित 13:1-2

### 2. वह कहाँ से आया था?

- 2.1 वह साइप्रस से आया था। प्रेरित 4:36
- 2.2 वह यरुशलेम में रहता था। प्रेरित 9:28
- 2.3 यरुशलेम की कलीसिया ने बाद में उसे अन्ताकिया भेजा था। प्रेरित 11:22



### 3. वह किस प्रकार का व्यक्ति था?

- 3.1 प्रेरितों ने उसे “शान्ति का पुत्र” नाम दिया था। प्रेरित 4:36
- 3.2 वह आज्ञाकारी, उदार, और निःस्वार्थ था। प्रेरित 4:37
- 3.3 वह प्रभु की इच्छा के प्रति खुले हृदय वाला और किसी पूर्वाग्रह से ग्रसित व्यक्ति नहीं था। प्रेरित 9:27
- 3.4 वह भला, पवित्र आत्मा से भरा हुआ, और विश्वास वाला व्यक्ति था। प्रेरित 11:24
- 3.5 वह नम्र था, दूसरों को आगे बढ़ने देनेवाला व्यक्ति था। उदाहरण के लिए, प्रेरितों की पुस्तक के शुरुवाती हवालों में बरनबास का नाम हमेशा पहले आया है, परन्तु फिर प्रेरित 13:42 में हम एक नाटकीय परिवर्तन देखते हैं जब पौलुस का नाम पहले उल्लेखित है। उस बिन्दु से आगे जब भी उन दोनों का नाम आया है, उसमें पौलुस का नाम पहले आया है। बरनबास, अपनी धार्मिक नम्रता का प्रदर्शन करते हुए, तैयार था कि पौलुस आगे बढ़कर किसी नेतृत्व के स्थान पर पहुँचे। प्रेरित 13:7, 42

### 4. उसने क्या किया?

- 4.1 उसने पौलुस को ग्रहण किया, जबकि यरुशलेम के अन्य मसीही लोग पौलुस के प्रति शंकित थे और उसका इंकार कर रहे थे। प्रेरित 9:27
- 4.2 उसने शिष्यता में हनन्याह का अनुसरण किया, यरुशलेम में पौलुस के साथ रहा, और उसे यीशु मसीह का चेला बना दिया। प्रेरित 9:28
- 4.3 उसने अन्ताकिया में अन्यजातियों से आए मसीहियों को प्रोत्साहित किया, क्योंकि उसने उन पर परमेश्वर के अनुग्रह को देखा था। प्रेरित 11:23
- 4.4 जब उसे अन्ताकिया में विश्वासियों को प्रशिक्षित करने में सहायता की आवश्यकता हुई, वह पौलुस को खोजने तरसुस चला गया। प्रेरित 11:26

- 4.5 उसने पौलुस को अन्ताकिया में लाया और उसे अपने साथ अन्यजातियों से आए प्रथम मसीहियों के मध्य एक वर्ष तक मिलने और उन्हें शिक्षा देने की सेवकाई का अनुभव करने और अभ्यास करने का अवसर प्रदान किया। प्रेरित 11:26
- 4.6 उसने यरुशलेम की कलीसिया को अन्ताकिया से भेजा गया दान सौंप दिया जो उस बड़े अकाल के समय भेजा गया था जिसकी भविष्यवाणी अगबुस ने की थी। प्रेरित 11:28-30
- 4.7 उसने प्रथम मिशनरी यात्रा के दौरान पौलुस के साथ प्रत्येक गांव के आराधनालयों में वचन का प्रचार किया। प्रेरित 13:5
- 4.8 उसने यूहन्ना मरकुस को, जिसके प्रति पौलुस शंकित था, स्वीकार किया। प्रेरित 15:39
- 4.9 उसने यूहन्ना मरकुस को सेवकाई में बढ़ने का अवसर प्रदान किया। 1 पतरस 5:13
- 4.10 उसने विश्वास के परिपक्व लोगों को, जैसे कि पौलुस और यूहन्ना मरकुस को, उत्पन्न किया। कुलुस्सियों 4:10; 2 तीमु. 4:11

**निष्कर्ष:** हमें बरनबास की तरह, दूसरों को प्रशिक्षित करते हुये और शिष्य बनाते हुये, परिपक्व शिष्य-बनानेवाले होने का प्रयत्न करने की आवश्यकता है।

- अपने क्षेत्र में हमें गैर-विश्वासियों को, जैसा बरनबास ने साइप्रस में किया था, क्रियाशील रूप से सुसमाचार प्रचार करने की आवश्यकता है।
- हमें नए विश्वसियों को दृढ़ करने और शिष्य बनाने की आवश्यकता है, जैसा बरनबास (और पौलुस) ने अन्ताकिया में किया था।
- हमें पौलुस और यूहन्ना मरकुस जैसे भावी अगुवों को सुसज्जित करने की आवश्यकता है। हमें हमेशा ही एक या दो सदस्यों को कलीसिया में अगुवा बनने की सलाह देने का प्रयत्न करना चाहिए।

- ठीक जिस प्रकार से बरनबास पीछे हटा और पौलुस को आगे बढ़ाया, हम भी जिन्हें हम सुसज्जित कर रहे हैं उन्हें नेतृत्व के पदों पर आगे बढ़ाने के द्वारा उनकी सेवाओं को विस्तृत करने की आवश्यकता है।

## छोटे समूहों के द्वारा शिष्यता

### प्रस्तावना:

दूसरों को शिष्य बनाने का और विश्वास में एक साथ बढ़ने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि छोटे समूहों में प्रार्थना करने, वचन का अध्ययन करने, एक दूसरे को समझाने और प्रोत्साहित करने के लिए सप्ताह में कम से कम एक एक बार नियमित मिला करें।

1. पुराना नियम में हम परमेश्वर को अपने लोगों को प्रशिक्षित करने और शिष्य बनाने के लिए छोटे समूहों का उपयोग करते हुए देखते हैं।

1.1 जब मूसा परमेश्वर के लोगों को मिस्र की गुलामी से निकालकर ले जाने का नेतृत्व कर रहा था तब उसके ससुर यित्रो ने उसे लोगों को दस-दस, पचास-पचास, सौ-सौ और हजार-हजार के समूहों में बांटकर उन पर अगुवे ठहराने का सुझाव दिया था, ताकि वे न्याय और नेतृत्व करने के बोझ को उसके साथ बांट सकें। निर्गमन 18

1.1.1 इस विभाजन ने, लोगों की अधिक अच्छे से देख-भाल करने में मूसा और दूसरे अगुवों की सहायता की।

1.1.2 जब परमेश्वर ने लोगों को मिस्र से बाहर निकाला तब वह अपने लोगों को मिस्र की रीति-विधियों और झूठे धार्मिक विश्वासों से शुद्ध करना चाहता था। चालीस वर्ष तक, जबकि लोग जंगल में भटक रहे थे, परमेश्वर ने छोटे झुंडों के इस प्रबन्ध के माध्यम से उन्हें शिक्षा दी और उनकी अगुवाई की।

1.2 एक घराना, (छोटे झुण्ड का एक प्रकार,) धार्मिक शिक्षाओं का केन्द्र था।

1.2.1 फसह के पर्व को घरानों में ही मनाया जाता था। निर्गमन  
12:3-28

1.2.2 इस्राएल के लोगों को अपने बच्चों को अपने घरानों में ही अपने  
धार्मिक विश्वास को सिखाने की शिक्षा दी गई थी। व्यवस्थाविवरण  
6:5-9

ध्यान दें: परमेश्वर का वचन सुनने के लिए लोग बड़ी सभाओं में भी इकट्ठा  
होते थे। ऐसे लगता है कि छोटे और बड़े समूहों में दी जाने वाली शिक्षा को  
मिलाकर इस्राएलियों की आवश्यकताओं को पूरा किया गया था। लै.व्य. 8:3;  
गिनती 1:18; यहोशू 18:18

## 2. नया नियम में छोटे समूह के उदाहरण

2.1 यीशु बारह के एक छोटे समूह में रहा और उन्हें शिक्षा दी। लूका  
6:12-16

2.1.1 यीशु ने छोटे समूह का सर्वोत्तम रूप से उपयोग एक प्रभावशाली  
शैक्षणिक वातावरण के रूप में किया ताकि शिष्यता में बढ़ने  
के लिये अपने शिष्यों की सहायता करें।

2.1.2 यीशु ने बारह के समूह के भीतर भी तीन शिष्यों को और  
अधिक घनिष्टता से सहायता की थी। मत्ती 17:1

2.2 प्रारम्भिक कलीसिया के छोटे समूह

2.2.1. नया नियम में, छोटे समूहों के रूप में घरों में एकत्रित होना  
सतत् होता रहा।

2.2.2 शिष्यों ने यीशु के साथ छोटे समूहों में जो सीखा था उसे  
व्यवहार में लाया। पतरस के पेन्तेकुस्त के उपदेश के बाद,  
कलीसिया विस्फोटक रूप से 120 लोगों (प्रेरित 1:16) से  
3000 लोगों तक बढ़ गई (प्रेरित 2:41)। प्रेरित 2:42-46 में  
विश्वासियों का बड़े समूह की सभाओं में और छोटे घरेलू  
समूहों में भी एकत्रित होने का नमूना दिखाई देता है।

- 2.2.3 छोटे घरेलू समूह, मन्दिर के आंगनों में आयोजित होने वाले बड़े समूह की सभाओं के लिए पूरक हुआ करते थे। इन दो तरीकों में कोई प्रतिस्पर्धा नहीं थी।
- 2.2.4 जहाँ वे बैठे थे उस पूरे घर को एक बड़ी आंधी ने भर दिया था। प्रेरित 2:2
- 2.2.5 वे उनके घरों में रोटी तोड़ते थे। प्रेरित 2:46
- 2.2.6 घर-घर शिक्षा देना उन्होंने कभी बन्द नहीं किया। प्रेरित 5:42
- 2.2.7 पतरस ने अन्यजातियों के लिये सब से पहला संदेश कुरनेलियुस के घर में दिया था। प्रेरित 10:22-24
- 2.2.8 एक और घर का उल्लेख है जहाँ अनेक लोग इकट्ठा हुए थे और प्रार्थना कर रहे थे। प्रेरित 12:12
- 2.2.9 पौलुस घर-घर शिक्षा देता था। प्रेरित 20:20
- 2.2.10 पौलुस अपने घर में रहता था और जो उसके पास आते थे उन सब से मिलता था। प्रेरित 28:30
- 2.2.11 प्रिस्का और अक्विला के घर में कलीसिया मिलती थी। रोमियों 16:5; 1 कुरिन्थियों 16:19
- 2.2.12 नुम्फास के घर में कलीसिया मिलती थी। कुलुस्सियों 4:15
- 2.2.13 फिलेमोन के घर में कलीसिया मिलती थी। फिलेमोन 1:2

## यीशु का शिष्यों का छोटा समूह - भाग 1<sup>3</sup>

### प्रस्तावना:

यीशु एक कुशल शिष्य-बनानेवाला था। उसने अपनी सेवकाई को शिष्यों के छोटे समूह के चहुँ ओर क्रमशः विकसित किया था। आगे के दो पाठ, शिष्यता के नौ शक्तिशाली सिद्धांतों को प्रस्तुत करते हैं जिनका नमूना यीशु ने तैयार किया था।

3. **देहधारण:** सम्पूर्ण सृष्टि का रचने वाला परमेश्वर एक मनुष्य बना और उसने अपने लिए एक दास की भूमिका को स्वीकार किया। इस प्रकार के व्यक्ति के लिये शिष्य बनाने के अवसरों की कभी कमी नहीं होती। यूहन्ना 1:1, 14

3.1 यीशु ने ठीक उसके विपरीत किया जो अन्य लोगों ने किया होता। लोग लगभग हर समय, जितना सम्भव हो सके, अधिकार, आराम, सुरक्षा और प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए अपने आप को आगे बढ़ाने का प्रयास करते रहते हैं। यीशु ने इस संसार में एक असहाय बालक के रूप में आने के लिए इन सारी बातों को त्याग दिया था। फिलिप्पियों 2:6-7

3.2 यीशु जो सम्पूर्ण सृष्टि का राजा और सृष्टिकर्ता है, न मात्र इस दुनिया में एक बालक के रूप में आया, परन्तु उसने अपने आपको एक तुच्छ दास के रूप में इतना दीन किया कि अपने शिष्यों के पैर धोये। यूहन्ना 13:1-16

3.3 जिस प्रकार से यीशु ने अपने शिष्यों की सेवा की, उसके शिष्यों को भी एक दूसरे की सेवा करने के लिए अवश्य तैयार रहना चाहिए। मत्ती 20:16

4. **चयन:** जबकि यीशु भीड़ के मध्य सेवकाई करता था, तौभी उसने शिष्यों के एक चुने हुये समूह में शिक्षा देने और काम करने पर अधिकाधिक ध्यान केन्द्रित किया था।
- 4.1 यीशु ने ऐसे लोगों को चुना जो सिखाये जाने के योग्य और उसके पीछे चलने के लिए उपलब्ध थे। उसने उनके बाहरी योग्यताओं ( धन, शिक्षा, सामाजिक पद, आदि) पर ध्यान केन्द्रित नहीं किया था।
- 4.1.1 जिन लोगों को उसने चुना था उनमें से दो पहले यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के शिष्य थे।
- 4.1.2 यीशु ने अपने सुसमचार-प्रचार का आरम्भ “मेरे पीछे चले आओ” कहते हुए किया था। मत्ती 4:19
- 4.1.3 जब नथानिएल शकित था, फिलिप्पुस ने उस पर जोर नहीं दिया। उसने उसे मात्र यीशु के पास ले लाया।
- 4.2 यीशु ने धार्मिक अगुवों से प्रारम्भ नहीं किया था। यरुशलेम में मन्दिर के 20,000 अगुवे थे, परन्तु प्राप्त जानकारी के अनुसार, प्रेरित 6 के समय तक उनमें से एक भी यीशु के पीछे चलने वाला नहीं बना था।
- 4.3 अन्त में, लगभग 500 लोगों ने उस पर विश्वास किया था। परन्तु 500 में से 70 थे जिन्हें यीशु ने बाहर भेजा था और उन 70 में से 12 प्रेरित हुए थे; बाहर में से 3 थे जिनके साथ वह विशेष रूप से घनिष्ट था।
- 4.4 हमारे छोटे समूह के लिए कुछ सुझाव।
- 4.4.1 जब कि हम बड़ी संख्या में लोगों की सेवकाई करना जारी रखते हैं, हमें भी अवश्य ही अपनी सेवकाई को कुछ चुनिंदा “शिष्यों” पर केन्द्रित करना चाहिए।
- 4.4.2 ऐसे कुछ सीखनेवाले हमारे ही बीच में होते हैं। ऐसे कुछ पर ध्यान केन्द्रित करें।
- 4.4.3 विशिष्टता और व्यवहारिकता पर ध्यान दें: सीखनेवालों की खोज करें, काम करनेवालों की मांग करें।



- 4.4.4 विश्वासयोग्य, सक्षम और सिखने योग्य लोगों की खोज करें।
- 4.5 छोटे समूह सीखने के लिये सकारात्मक अनुभव प्रदान करते हैं, क्योंकि एक बड़े समूह की अपेक्षा एक छोटे समूह में प्रत्येक के लिए भाग लेने का अधिक अवसर होता है।
- 4.5.1 छोटे समूहों में काम करने से, कुछ थोड़े लोगों के वरदानों और कलाओं को विकसित करने पर ध्यान देने का, समय मिलता है।
- 4.5.2 एक अधिक अधिकारियों वाली कलीसिया में शिष्यता अधिक प्रभावकारी रीति से होगी ही ऐसा नहीं है।

**5. संबंध: यीशु अपने शिष्यों के साथ रहा ( प्रार्थना के समय के सिवाय, वह कभी अकेला नहीं रहा )।**

- 5.1 हमें शिष्यता-प्रशिक्षण के इस सिद्धान्त की उपेक्षा कभी नहीं करनी चाहिये। अपने शिष्यों के साथ समय बिताएं (संबंध बनायें)।
- 5.2 शिष्य बनाए जाते हैं। लोग जन्म-जात शिष्य नहीं होते हैं। लोगों के साथ रहने के द्वारा उनमें शिष्यता निर्माण करें। मत्ती 28:20
- 5.3 कोई भी अवसर न खोएं: साथ भोजन करें, साथ यात्रा करें, बिमारों को देखने जाएं, कहीं भी साथ में समय बिताएं।
- 5.4 हमें मसीह के शिष्यों के रूप में उसके साथ (खड़ा सीधा सम्बंध) और दूसरों के साथ, विशेषकर अपने शिष्यों के साथ (आड़ी रेखा में सम्बंध), अवश्य समय बिताना चाहिए।
- 5.5 इसे भूलना नहीं चाहिए कि हमारे सब से घनिष्ठ शिष्य स्वयं हमारे परिवार के सदस्य होते हैं। मसीह के शिष्य को अपनी पत्नी और बच्चों के साथ गुणवत्तापूर्ण समय बिताने की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

**6. समर्पण: आज्ञाकारिता ही समर्पण का मार्ग है। आज्ञापालन का अर्थ**

ही सीखना है। यही सीखते जाने का एकमात्र तरीका है। चरित्र और उद्देश्य का विकास आज्ञाकारिता से ही होता है।

- 6.1 यीशु ने अपने समूह में बुलाये गये लोगों से आज्ञाकारिता और निष्ठा की अपेक्षा थी: “मेरे पीछे चले आओ”। मत्ती 9:9
- 6.2 कोई भी, पहले स्वयं अनुकरण करनेवाला हुए बिना अगुवा नहीं हो सकता; यीशु ने सब बातों से बढ़कर अपने पिता की आज्ञा का पालन किया था।
- 6.3 हमें भी, हर कीमत पर, आज्ञाकारिता पर जोर देना चाहिए। हमें अपने समय-सारीणियों में परमेश्वर के और उसकी योजना के अनुकूल बनाना चाहिये, इनके उल्टा नहीं। मसीह की आज्ञाओं के प्रति लापरवाह होना हमें बंद करना होगा।

**7. प्रदान करना: यीशु ने अपना आत्मा दिया कि वह उसके शिष्यों में रहे और उन्हें सुसज्जित करे। यूहन्ना 20:22; प्रेरित 2:1-4**

- 7.1 मसीह के शिष्यों के रूप में, हमें अवश्य ही पवित्र आत्मा से भरा होना चाहिए। यूहन्ना 14:16
- 7.2 जबकि हम आत्मा से भरे हुए हैं, अपने शिष्यों के सामने हम आत्मा से पूर्ण जीवन का आदर्श रख सकते हैं।
- 7.3 हम मात्र तब ही सही रूप से प्रेरित हो सकेंगे जब हम मसीह और उसके आत्मा से भरे हुए होंगे। मात्र तब ही उसकी इच्छा को पूरा करने और उसे प्रगट करने की शक्ति हमारे पास होगी। मात्र तब ही हम स्वत्याग की आत्मा का प्रदर्शन कर सकेंगे जो हमारी सेवकाई और शिष्य बनाने के लिये आवश्यक है।

## यीशु का शिष्यों का छोटा समूह - भाग 2

### 8. प्रदर्शन: शिष्यों के लिये आवश्यक है कि वे जीवन यीशु के आदर्श जीवन के अनुकूल बनाये। यूहन्ना 13:15

8.1 यीशु ने शिष्यों को दिखाया था कि किस प्रकार का जीवन जीना है और सेवकाई कैसे करना है। शिष्यों ने उसमें वह जीवन देखा था जिसे उन्हें जीना और सिखाना था। उनकी प्रत्येक परिस्थिति और प्रत्येक भेंट सिखाने के लिये एक अवसर बन जाता था।

8.1.1 उदाहरण के लिए, यीशु को प्रार्थना करते देखा तो शिष्य प्रोत्साहित हुये कि उसे बिनती करें कि वह उन्हें भी प्रार्थना करना सिखाये। लूका 11:1

8.1.2 शिष्य उसके पवित्रशास्त्र के ज्ञान से प्रभावित थे; जैसे यीशु सिखाता था, वैसे ही वे उसके जीवन में पवित्रशास्त्र को पूरा होते हुये देखते थे।

8.1.3 यीशु की सामाजिक चिंताएं उसके उन प्रचारों में दिखाई देती थी जो वह परमेश्वर के राज्य के आगमन के संबंध में करता था।

8.2 जब यीशु लोगों को अपने लिए जीतता था तब शिष्य प्रत्यक्ष उसे देखते थे। जैसे कि, जक्कई के प्रति उसके प्रतिउत्तर में यीशु ने उनके सामने सुसमाचार प्रचार का एक आदर्श प्रस्तुत किया था। लूका 19:1-10

8.2.1 जक्कई की रुचि के प्रति यीशु जागरूक था: उसने “ऊपर दृष्टि करके उससे कहा।”

8.2.2 यीशु ने उसे अपने पास आने का निमंत्रण दिया था: “झट उतर आ।”

8.2.3 यीशु उसके साथ समय व्यतीत करने के लिए तैयार था: “मुझे तेरे घर में रहना अवश्य है।”

8.2.4 यीशु ने अपने प्रेम को व्यक्त किया था: “मनुष्य का पुत्र खोए हुआओं को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया है।”

8.3 हमें अवश्य ही अपने जीवन के माध्यम से शिष्यता का प्रदर्शन करना चाहिए। हमें अवश्य ही उनके साथ होना चाहिए जिनकी हम अगुवाई करना चाहते हैं। हमें अवश्य ही:

8.3.1 उनके साथ प्रार्थना करनी चाहिए।

8.3.2 पवित्रशास्त्र के अध्ययन में उनकी सहायता करनी चाहिए।

8.3.3 हमें उन्हें सुसमाचार प्रचार और पास्टरीय भेंट करने में साथ ले जाना चाहिए।

8.3.4 हमारी गलतियों और कमजोरियों को उन्हें देखने देना चाहिए। अनेक लोग सफलता से अधिक असफलताओं से सीखते हैं।

**9. प्रतिनिधित्व:** यीशु ने उन्हें कुछ करने के लिए दिया था। करने के लिए कुछ व्यवहारिक कार्य देना सब से अच्छा प्रशिक्षण है। उसने कभी भी यह बात दृष्टि से ओझल नहीं होने दी कि वह उन्हें सेवकाई के लिए प्रशिक्षित कर रहा था। मत्ती 4:19

9.1 यीशु के साथ के पहिले वर्ष में, शिष्यों ने उसका अवलोकन करने से अधिक कुछ नहीं किया; परन्तु जैसे-जैसे वह उन्हें निर्देश देता गया वैसे-वैसे वह उन्हें करने के लिये अधिकाधिक काम देता गया।

9.2 उसने उन्हें दो-दो करके उनके मिशन पर भेजा।

9.3 हमें अवश्य ही यीशु के उदाहरण का अनुकरण करते हुये अपने शिष्यों को सेवकाई में शामिल करना चाहिए।

9.3.1 उन्हें करने के लिए कोई निर्दिष्ट काम दें जो उन्हें सेवकाई में सीधे शामिल करेगा।

9.3.2 जबकि आप साथ मिलकर सेवा कर रहे हैं तब उन्हें शिक्षा दें और प्रशिक्षित करें।

9.3.3 उन्हें अपने आत्मिक वरदानों का अभ्यास करने में सहायता करें।

## 10. निरीक्षण और जवाबदेही: यीशु अपने शिष्यों के सम्पर्क में रहा और उनका निरीक्षण करता था।

10.1 वह निरन्तर उनके विचारों और कार्यों के प्रति जागरूक था।  
मरकुस 8:17

10.2 उनकी बाहरी सेवकाई के बाद उनकी सेवकाई की रिपोर्ट सुनने के लिए उसने उन्हें एकत्रित किया था। लूका 10:17-20

10.3 यीशु अपने शिष्यों की प्रभावशाली सेवकाई से आनन्दित हुआ था।

10.4 उसने उन्हें शिक्षा दी थी कि आनन्द करने का सही कारण क्या होना चाहिये: “परन्तु इससे आनन्दित हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग पर लिखे हुए हैं।” क्योंकि यही महत्वपूर्ण है।

10.5 हमें अवश्य ही अपने शिष्यों की देखभाल करनी है। उदाहरण के लिए, हमें निरन्तर उन्हें स्मरण दिलाना है कि:

10.5.1 उन्हें अपनी पृथ्वी पर की दशा या परिस्थिति के आधार पर आनन्दित नहीं होना चाहिये परन्तु इस बात पर कि वे परमेश्वर की संतान हैं - और उसके सेवक और शिष्य हैं।

10.5.2 जब बातें कठिन हों तब उन्हें आत्म-तरस के पाप से सावधान रहना है।

10.5.3 उन्हें स्मरण रखना है कि यदि दूसरे हमारी सराहना नहीं करते हैं तौभी हमें कोई फर्क नहीं पड़ना चाहिये। परमेश्वर हमें देखता है; हमें उस दिन के लिए काम करना है जिस दिन वह हम से कहेगा: “धन्य, हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास!”

10.6 उन्हें सही देखभाल प्रदान करने के लिए यीशु के मन में सर्वोपरी बात प्रार्थना थी: यूहन्ना 17

- 10.6.1 उसने शिष्यों के लिये प्रार्थना की कि वे सुरक्षित रखे जाये ताकि वे एक बने रहें। यूहन्ना 17:11
- 10.6.2 उसने प्रार्थना की कि उन्हें भरपूरी का आनन्द प्राप्त हो। यूहन्ना 17:13
- 10.6.3 उसने प्रार्थना की कि उस दुष्ट से उनकी रक्षा की जाये। यूहन्ना 17:15
- 10.6.4 उसने प्रार्थना की कि वे पवित्र किये जाये। यूहन्ना 17:17
- 11. पुनरुत्पादन: यीशु चाहता था कि उसका जीवन और उसकी सेवकाई उसके शिष्यों में और उनके द्वारा; और दूसरों के जीवन में, पुनरुत्पादित होवे। गुणन ( संख्यावृद्धि ) ही अंतिम उद्देश्य था।**
- 11.1 यीशु इस बात की चेतावनी देता है और अपेक्षा करता है कि उसके शिष्यों का जीवन फलवन्त होना चाहिये। यूहन्ना 15:16
- 11.2 यीशु इस बात की अपेक्षा करता है कि उसके शिष्य न मात्र पुनरुत्पादन करें, परन्तु संख्या में वृद्धि भी करें।
- 11.3 हमें पुनरुत्पादन और संख्या में वृद्धि करने के दर्शन को अवश्य ही अपने समूह में संचारित करना चाहिए। शिष्यों को शिष्य-बानानेवाले बनाना ही हमारा लक्ष्य होना चाहिए।
- 11.4 बड़ा प्रश्न यह होना चाहिए: “क्या हमारे फल, फल उत्पन्न कर रहे हैं?” हम मात्र नए विश्वासियों की संख्या नहीं पूछ रहे हैं, परन्तु यह भी कि जो जीते गए हैं क्या वे दूसरों को जीत रहे हैं?
- 11.5 निश्चय ही सब की अलग-अलग विशेष बुलाहट और विशेष वरदान हैं, परन्तु सभी को आत्मिक पुनरुत्पादन की जिम्मेदारी को उठाना अवश्य है। मत्ती 28:20

## शिष्य का जीवन में अन्तिम उद्देश्य

### प्रस्तावना:

परमेश्वर ने हमें जीवन दिया है, ताकि हमारे लिए ठहराये गये उसके अन्तिम उद्देश्य को हम पूरा कर सकें। वह उद्देश्य क्या है? वह यह है कि हम परमेश्वर को अपने सारे मन, प्राण और बुद्धि से प्रेम करें। यह उद्देश्य किस प्रकार से हमारे जीवन जीने के ढंग से सम्बंधित है? ऐसा होना चाहिए कि परमेश्वर की उपासना और सेवा करने की हमारी पद्धति हमारे लिये ठहराये गये परमेश्वर के इस अन्तिम उद्देश्य के अनुरूप हो।

### 1. कुछ उपासना समूह बहुत ही अनौपचारिक (अविधिवत) और व्यक्तिगत होते हैं।

- 1.1 इसमें योजना या विधि नहीं के बराबर होती है और इनके अगुवे आरामदेह शैली अपनाते हैं।
- 1.2 यहाँ स्वयं उस समूह को और समूह में विश्वासियों के निर्माण को ही महत्व दिया जाता है।

### 2. कुछ झुण्ड अधिक औपचारिक (विधिवत) और कार्य पर केंद्रित होते हैं।

- 2.1 इस में एक विधिवत योजना होती है, और निर्देश देने का काम अधिकतर अगुवे का ही होता है। सेवकाईयाँ अधिक योजनाबद्ध होती हैं।
- 2.2 पूर्व-निर्धारित उद्देश्यों का वर्णन अच्छे से किया गया होता है, और कार्य करने एक निश्चित सूची होती है जिस में अचानक कुछ नहीं किया जाता है।

3. चाहे तरीका कुछ भी हो, प्रत्येक समूह को अपने आप से प्रश्न अवश्य करना चाहिए कि वह परमेश्वर के बच्चों के लिए उसके द्वारा उहाराये गये उस अन्तिम उद्देश्य को, जो कि परमेश्वर से प्रेम रखना है, उत्तम रीति से निर्धारित और पूरा कैसे कर सकते हैं।
- 3.1 हमारे अंतिम उद्देश्य को पूरा करना: किस प्रकार से शिष्यों का प्रत्येक समूह (प्रत्येक छोटा समूह) परमेश्वर कि आज्ञा को पूरा – उत्तम रीति से पूरा – कर सकता है, कि उसके बच्चे उससे अपने सारे मन, प्राण और बुद्धि से प्रेम करें?
- 3.2 लोगों के गुण: उस छोटे समूह में किस प्रकार के लोग हैं? क्या वे उच्च शिक्षित हैं कि साधारणतः अशिक्षित हैं? क्या वे शहरी हैं कि ग्रामीण मूल के हैं? वे बहुधा वृद्ध हैं या युवा हैं? प्रत्येक प्रकार के व्यक्ति के पास अलग अलग प्रकार के विशिष्ट वरदान और योग्यताएं होती हैं। उनके निश्चित वरदानों, क्षमताओं, और योग्यताओं से, परमेश्वर के राज्य की सेवा किस प्रकार सर्वोत्तम रीति से हो सकती है?
- 3.3 समूह के उद्देश्य: क्या समूह के लक्ष्य हमारे जीवनो के लिए परमेश्वर के अन्तिम उद्देश्य के साथ और समूह के विश्वासियों के स्वभाव के साथ मेल खाते हैं?
- 3.4 समूह के तरीके: कौन से तरीके संभावित रूप से समूह के लक्ष्यों को सर्वोत्तम रीति से पूरा करेंगे?
- 3.5 व्यवहारिक अर्थ: हमारी समूह के तरीकों और लक्ष्यों के संबंध में जो समझ है उसके व्यवहारिक अर्थ क्या हो सकते हैं?
4. यदि एक बार समूह ने यह परिभाषित कर लिया कि वे किस प्रकार से परमेश्वर के अन्तिम उद्देश्य को पूरा कर सकते हैं, तो अब उन्हें यह पूछना चाहिए कि वे परमेश्वर के उस द्वितीय उद्देश्य को किस प्रकार से पूरा कर सकते हैं जो अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना है।



## मत्ती 22:39

4.1 समूह के अन्दर ही देखना।

4.1.1 क्या समूह के सदस्य अपने विश्वास में और परमेश्वर के प्रति प्रेम और दूसरे सदस्यों के प्रति प्रेम में बढ़ रहे हैं?

4.1.2 क्या वे अपनी सेवकाई की निपुणता में और अपने आत्मिक वरदानों का फलदाई उपयोग करने में बढ़ रहे हैं?

4.1.3 क्या विश्वासियों के बीच में एक दूसरे की देखभाल करने का और उदारता का वातावरण है?

## 5. अन्तिम उद्देश्य

5.1 हमारा अन्तिम उद्देश्य प्रभु अपने परमेश्वर को अपने सारे मन, प्राण और बुद्धि से प्रेम रखना है। व्य.वि. 6:5

5.2 चाहे हम खाते हैं या पीते हैं, जो भी करते हैं, सब परमेश्वर की महिमा के लिए करते हैं। 1 कुरि. 10:31

5.3 हमें मसीह के पहचान की उत्तमता के कारण से अन्य सब बातों को हानि समझना है। फिलि. 3:8

5.4 हमें प्रभु की उपासना उसकी पवित्रता की सुन्दरता में करना है। 1 इतिहास 16:29

5.5 प्रत्येक प्राणी जिसमें स्वांस है, वह प्रभु की स्तुति करे। भजन 150:6

## 6. प्रश्न:

6.1 छोटे समूह में आप को जो अनुभव हुये हैं उन के बारे में विचार करें। क्या उस समूह के पास उद्देश्य था? वह क्या था?

6.2 आप ऐसे किन समूहों के बारे में जानते हैं जो 'परमेश्वर से प्रेम रखना' इस अन्तिम उद्देश्य से संचालित नहीं थे। वे किस बात को अपने उद्देश्य के रूप में देखते हैं?

6.3 यदि आप अभी किसी छोटे समूह में हैं तो वह जीवन जीने के लिए

स्कूल ऑफ इवेन्जलिज़्म

आपके अन्तिम उद्देश्य में किस प्रकार से सहायक हो रहा है? यदि ऐसा नहीं हो रहा है तो किस प्रकार से आप उसके उद्देश्य को स्पष्ट करने में सहायक हो सकते थे?

## छोटे समूह में शिष्यता के लाभ

### प्रस्तावना:

महान आदेश हमें शिष्य बनाने की आज्ञा देता है। इसे हम सुसमाचार प्रचार के द्वारा, शिक्षा देने के द्वारा, आवश्यकता होने पर सुधारने के द्वारा, और ऐसी नई कलीसियाओं की स्थापना करने के द्वारा पूरा करते हैं जिसमें नये विश्वासियों को सतत् बढ़ती संख्या में ग्रहण किया जा सके और पोषित किया जा सके। विश्वासियों के एक छोटे समूह के साथ काम करना और शिष्य बनाना हमारे समय का महान आशीषमय और लाभदायक निवेश हो सकता है।

### 1. छोटे समूह आत्मिक वृद्धि के लिये सहज-वातावरण प्रदान करते हैं।

- 1.1 परमेश्वर ने हमारी रचना समूदाय में फलने-फूलने के लिए की है; छोटे समूह परमेश्वर के आत्मा की “ज्वालाओं को हवा देने” में हमारी सहायता करते हैं।
- 1.2 एक छोटे समूह में होने का शायद ही कोई विकल्प है: लोग अनेक प्रकार के छोटे समूह में होते हैं।
- 1.3 एक ऐसे छोटे समूह में होना जो बाइबल-अध्ययन करता है, और एक ऐसे समूह के प्रति समर्पित रहना जिसका लक्ष्य मसीह में बढ़ना है, उचित बात है।
- 1.4 हमारे आत्मिक वरदान बड़े समूहों में बहुधा सुप्त अवस्था में रह जाते हैं और उनका उपयोग नहीं हो पाता है। छोटे समूहों में उनके उपयोग और विकास के लिए अधिक अवसर होते हैं।
- 1.5 अधिकांश कलीसियाओं में, अपनी वास्तविक चिन्ताओं पर विचार के लिए लोगों के पास समय नहीं होता है, यह अवसर छोटे समूह प्रदान करते हैं।

## 2. छोटे समूह, एक दूसरे से संबंधित होने की भावना के लिये सहज-वातावरण प्रदान करते हैं।

- 2.1 हम अपने आप को ऐसे समूह की ओर खिंचा हुआ पाते हैं जहाँ हम एक दूसरे के साथ स्वस्थ संबंध स्थापित कर सकते हैं।
- 2.2 एक छोटा समूह वह स्थान है जहाँ यदि आप नहीं जायेंगे तो आपकी कमी को अनुभव किया जाता है।
- 2.3 हमारा आधुनिक समाज मनुष्यत्व के गुण से वंचित होता जा रहा है, और एक दूसरे के बीच की दूरी को बढ़ाने में सहायक हो रहा है; किसी के संग होने की बढ़ती भूख को स्वस्थ छोटे समूह मिटाया जा सकता है।

## 3. छोटे समूह, विश्वासियों को मसीही जीवन की चाल में प्रोत्साहन देने का सहज-वातावरण प्रदान करते हैं।

- 3.1 छोटे झुण्डों की संगति में प्रोत्साहन के बारे में जॉन वेस्ली ने निम्न बातें लिखीं हैं:

“बहुतों ने अब उस मसीही संगति का अनन्दपूर्वक अनुभव किया था जिसकी उन्होंने पहले इतनी कल्पना नहीं की थी। उन्होंने ‘एक दूसरे का भार’ उठाना और, स्वाभाविक ही, ‘एक दूसरे की चिन्ता’ करना शुरू कर दिया था। जैसे-जैसे वे प्रतिदिन एक दूसरे के साथ अधिक अंतरंग सम्बंध में होने लगे, परिणाम स्वरूप, एक दूसरे के प्रति उनमें अधिक प्रेममय लगाव होने लगा।”

- 3.2 छोटा समूह एक पारिवारिक इकाई के समान होता है जो भौतिक, भावनात्मक और आत्मिक आवश्यकताओं के लिए चिन्ता करता हो।

## 4. छोटे समूह परमेश्वर के वचन को व्यक्तिगत जीवन में लागू करने के लिए सहज-वातावरण प्रदान करते हैं।

- 4.1 छोटे समूह में पवित्रशास्त्र का लागूकरण विशिष्ट और व्यक्तिगत होता है, जबकि बड़े आराधना भवन में लागूकरण सर्वसामान्य रीति से होता

है और लोगों की ओर से प्रतिउत्तर न के बराबर मिलता है।

4.2 छोटे समूह विश्वासियों को अपनी बाइबल पढ़ने और अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। साथ ही, वे अशिक्षितों के लिए भी वचन को सुनने के और उसकी सच्चाइयों को अपने जीवन में लागू करने की चर्चा में भाग लेने के अवसर प्रदान करते हैं।

5. छोटे समूह विश्वासियों के बीच व्यक्तिगत आपसी-बातचीत के लिए सहज-वातावरण प्रदान करते हैं।

5.1 छोटे समूह अधिक व्यक्तिगत होते हैं; पूरा परिवार सम्मिलित हो जाता है। एक एक व्यक्ति पर ध्यान केंद्रित हो जाता है, लोग एक एक व्यक्ति का चेहरा देखते हैं और आपसी भरोसा बढ़ता जाता है।

5.2 छोटे समूह ऐसी परिस्थिति प्रदान करते हैं जहाँ स्थाई, व्यक्तिगत आपसी-वार्तालाप हो सकते हैं।

5.3 बड़े समूह प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सकते हैं; छोटे समूह “जहाँ खुजली वहीं खुजाई” करते हैं।

6. छोटे समूह बाहरी सेवकाई के लिए सहज-वातावरण प्रदान करते हैं।

6.1 चाहे घरों में, चाहे किसी स्कूल के कमरे में, चाहे किसी दुकान में, या कार्यालय में मिल रहे हों, छोटे समूह अधिक परिचित, “स्वाभाविक” मित्रवत् स्थानों में मिलते हैं। अनेक गैर-विश्वासी लोगों की, कलीसिया भवन की अपेक्षा, ऐसे ही किसी स्थान में आने की अधिक सम्भावना होती है।

6.2 जो लोग कभी कलीसिया भवन में जाना न चाहेंगे वह आपके घर में आने का निमंत्रण स्वीकार करने की अधिक सम्भावना है।

6.3 छोटे समूह आस-पड़ोस में मसीहियत का निरन्तर-जारी प्रकटिकरण प्रदान करते हैं।

6.4 छोटे समूह में विश्वासी लोग गवाही देने में एक दूसरे की सहायता

करते हैं: विश्वासियों और गैर-विश्वासियों के बीच वार्तालाप असल बातों को बातचीत का विषय बनाते हैं।

## 7. प्रश्न:

- 7.1 क्या ऐसा कोई समय आया था जब आपने अन्य विश्वासियों की सहायता के बिना अकेले ही चलने का प्रयास किया था?
- 7.2 ऐसे किसी समय का वर्णन करें जब अन्य मसीहियों की सहायता आपके लिए अनुग्रह का माध्यम रही हो।
- 7.3 अपने जीवन की उन घटनाओं की पहचान करें जब आपने विशिष्ट रूप से आत्मिक उन्नति का अनुभव किया था। क्या उस उन्नति में अन्य विश्वासियों की कोई भूमिका थी?
- 7.4 क्या आपका छोटा समूह यहाँ वर्णन किये गये लाभों को प्रदान करता है?
- 7.5 छोटे समूहों में आपने ठोकर के किन कारणों का अनुभव किया था?
- 7.6 भविष्य में उन कारणों से बचने के लिये कौन से सुरक्षा उपाय सहायक हो सकते हैं?

## छोटे समूह में भाग लेने वाले

### प्रस्तावना:

हम दूसरों के बारे में हमारे विचार ही उनके प्रति हमारी सेवाई को निर्धारित करता है। जबकि हम विचार करते हैं किस प्रकार हम सर्वोत्तम तरीके से शिष्यों को प्रशिक्षित और गठित करें, हमारे लिये आवश्यक हो जाता है कि जिनके साथ हम काम करेंगे उनके बारे में एक बाइबल-सम्मत और ईश्वरीय दृष्टिकोण रखें।

### 1. मनुष्य का स्वभाव क्या है? उसमें भलाई और बुराई दोनों हैं।

1.1 मूलरूप से मनुष्य अच्छा है; परमेश्वर के स्वरूप में हमारी सृष्टि की गई गया है। उत्पत्ति 1:27

1.1.1 मनोविज्ञान से संबंधित हाल ही की विचारधारा मनुष्य में अच्छाई होने के पक्ष में तर्क देती है। (उदाहरण के लिए, एक अविश्वासी भी किसी बच्चे को बचाने के लिए अपना जीवन बलिदान करने में सक्षम है।)

1.1.2 मनुष्य में परमेश्वर का स्वरूप, मनुष्य को एक अंश तक, भलाई, प्रेम और सामंजस्य प्रदान करता है।

1.2 तथापि, मनुष्य मूलरूप से अच्छा होते हुये भी आंतरिक रूप से पापमय है। रोमि. 7:18

1.2.1 आदम और हव्वा के माध्यम से जब पाप ने संसार में प्रवेश किया, तब मनुष्य अनुग्रह से गिर गए।

1.2.2 परमेश्वर के आत्मा के बिना, मनुष्य संपूर्ण भीतरी नैतिक मापदण्ड को खो देने के लायक है।

1.2.3 परमेश्वर के आत्मा के बिना, मनुष्य अन्याय और अमानवीयता के

भयंकर कार्य करने के लायक है।

## 2. जबकि हम दूसरों को शिष्य बनाते हैं, लोगों के बुनियादी स्वभाव के प्रति हमारी मनोवृत्ति क्या होगी?

2.1 यदि हम पुरुषों और स्त्रियों को परमेश्वर के स्वरूप में सृजे गए होने के रूप में देखते हैं:

2.1.1 हम मान सकते हैं कि यदि उनकी परवरिश की जाती है और उन्हें सही स्थिति प्रदान की जाती है तो उनके जीवनो में भलाई स्वयं ही दिखाई देगी, क्योंकि स्वयं परमेश्वर तक उनकी सीधी पहुँच है ताकि उससे अपने दैनिक जीवनो के लिए सामर्थ और अगुवाई पायें। 1 पतरस 2:5, 9

2.1.2 हम आशा कर सकते हैं कि परमेश्वर का आत्मा अपने उन शिष्यों में बुद्धि और अनुग्रह प्रदान करेगा जो शिष्य आपकी आत्मिक देखभाल में हैं।

2.1.3 हम आशा कर सकते हैं कि परमेश्वर की संतानें, राजाओं के राजा के राजदूत के रूप में जीवन जी सकते हैं और परमेश्वर के अनुग्रह में बढ़ सकते हैं। 2 कुरिन्थियों 5:20

2.1.4 परन्तु हमें पाप की शक्ति को कभी भी अनदेखा नहीं करना चाहिए, ऐसा न हो कि वह समूह त्रुटिपूर्ण विश्वासों और/या झुठे सिद्धान्तों का शिकार हो जाए। हमें उन्हें आवश्यकता के समय अगुवाई और दिशा प्रदान करने में नहीं हिचकिचाना चाहिए।

2.2 दूसरी ओर, यदि हम पुरुषों और स्त्रियों को मूलरूप से अनुग्रह से गिरे हुए के रूप में देखते हैं:

2.2.1 हम सम्भवतः, त्रुटिपूर्ण रूप से यह मान ले सकते हैं कि विश्वासी लोग पवित्रशास्त्र को समझने या उसे लागू करने में असमर्थ हैं।



- 2.2.2 हम सम्भवतः, अन्यायपूर्ण रूप से अनुभव कर सकते हैं कि उपहार या दण्ड से झुण्ड को सख्त रूप से नियंत्रण में रखने की आवश्यकता है।
- 2.2.3 हम सम्भवतः, विश्वासियों के आन्तरिक (आत्मिक) विकास के बजाय, अनजाने ही, बाहरी व्यवहार को प्रशिक्षित करने पर ध्यान केन्द्रित कर सकते हैं।
- 2.2.4 हम सम्भवतः, छोटे समूह पर एक नियंत्रित पाठ्यक्रम लाद सकते हैं।
- 2.2.5 हम सम्भवतः, समूह की अन्तर्दृष्टि की जगह एक “विशेषज्ञ” के द्वारा दिये गये वक्तव्य को अधिक मूल्यवान मान सकते हैं।
- 2.2.6 हम सम्भवतः, त्रुटिपूर्ण रूप से निष्कर्ष दे सकते हैं कि सब विश्वासियों के याजकपद के सिद्धान्त की उपयुक्तता बहुत कम है।
- 2.2.7 हो सकता है कि हम कलीसिया के लोगों के व्यवहार के सम्बंध में अत्यधिक नियमों पर जोर देने लग जाएं।
- 2.2.8 सम्भवतः हम सीमा से अधिक इस बात में व्यस्त हो जाएं कि जिन नियमों को हम स्थापित करते हैं उनका पालन हमारे समूह के लोग कर रहे हैं या नहीं कर रहे हैं।

### 3. समूह में विश्वासियों की मूलभूत आवश्यकताएं कौन सी हैं?

- 3.1 उन्हें परमेश्वर के बारे में और उनके स्वयं के बारे में शिक्षा दिए जाने की आवश्यकता है।
  - 3.1.1 हम पतित और स्वार्थी हैं। रोमियों 3:23
  - 3.1.2 हम में मसीह के समान होने की संभावना है। इफिसियों 4:13
  - 3.1.3 परमेश्वर अपने छुटकारे के माध्यम से बुरे लोगों को भला बना देता है। प्रकाशितवाक्य 5:9

- 3.1.4 परमेश्वर विश्वासियों का, वे चाहे हम जैसे कमजोर क्यों ना हों, अपने उद्देश्य को पूरा करने और अपनी महिमा के लिए उपयोग कर लेता है। रोमियों 15:6
- 3.2 उन्हें सिखाए जाने की आवश्यकता है कि वे परमेश्वर के वचन बाइबल पर भरोसा कर सकते हैं।
  - 3.2.1 परमेश्वर और उसकी सृष्टि के बारे में बाइबल ही एक मात्र आधिकारिक शिक्षा है।
  - 3.2.2 परमेश्वर के वचन में उसकी सच्चाइयाँ एक दूसरे से विरोधाभास नहीं रखतीं, ना ही उन सच्चाइयों से जो उसके जगत में हैं। (सारी सच्चाई परमेश्वर की सच्चाई है।)

#### 4. प्रश्न:

- 4.1 हमारे स्वभाव को समझने में, सृष्टि और पतन का हमारे लिय क्या अर्थ है? (देखें बिन्दु 1.2)।
- 4.2 छोटे समूह की परंपरा के लिये ये अर्थ क्या महत्व रखते हैं? (देखें बिन्दु 2.1 और 2.2)।
- 4.3 जब आप विभिन्न आयु वर्ग के समूहों का अवलोकन करते हैं तो उनकी अलग-अलग योग्यताएं और आपेक्षिक प्रबलताएं क्या हो सकती हैं?
- 4.4 यदि वृद्धि सामाजिक पारस्परिक-गतिविधि के द्वारा होती है तो छोटे समूह उस उन्नति में किस प्रकार से सहायक हो सकते हैं?

## छोटे समूह के लक्ष्य

### प्रस्तावना:

विश्वासियों का, और इसी कारण से छोटे समूहों का, सब से महत्वपूर्ण लक्ष्य परमेश्वर से प्रेम रखना और सदा-सर्वदा उसकी महिमा करना है। “मुख्य बात को मुख्य बात रखना,” यह छोटे समूहों को दिशा और उद्देश्य प्रदान करने में सहायक होगा, जबकि वे एक साथ मिलते हैं और मसीह में बढ़ते जाते हैं।

### 1. परमेश्वर के बच्चों का अन्तिम, सर्वोच्च लक्ष्य पिता से प्रेम रखना और उसकी महिमा करना है।

1.1 शिष्य बनाना छोटे समूहों का दूसरे क्रम का लक्ष्य है।

1.1.1 यीशु ने हमें शिष्य बनाने कहा है, परन्तु यह ना भूलें कि प्रथम और सर्वोच्च आज्ञा परमेश्वर से प्रेम रखना (और सदा उसकी महिमा करना) है।

1.1.2 अवश्य है कि सेवकाई में हमारा लक्ष्य परमेश्वर से प्रेम रखना और अधिक पूर्णता से परेश्वर को प्रेम करने में दूसरों की सहायता करना ही हो।

1.2 सम्बंध बनाए रखना प्राथमिक लक्ष्य नहीं है। मत्ती 22:39

1.2.1 दूसरों से प्रेम रखना महत्वपूर्ण है, और हमारी मसीही एकता अविश्वासियों के लिए परमेश्वर के प्रेम को प्रदर्शित करती है परन्तु कभी ना भूलें कि दूसरों से प्रेम रखना, प्रथम नहीं, दूसरी आज्ञा है।

1.2.2 आत्मिक रास्ते के संकटों में बचे रहने के लिए शिष्यों को प्रेममय, देखभाल करने वाले सम्बंधों की आवश्यकता है। इसीलिए, हमारी मसीही संगति को अवश्य ही क्रियाशील और

लक्ष्य पर केंद्रित होना चाहिए।

- 1.2.3 अवश्य है कि हम उनकी गहन चिंता करें जो मसीह यीशु के पीछे नहीं चलते, परन्तु हमारा सर्वप्रथम प्रेम और अभिलाषा परमेश्वर के लिए ही होनी चाहिये।
- 1.3 परमेश्वर के वचन का अध्ययन अन्तिम उद्देश्य नहीं है।
  - 1.3.1 जिस प्रकार से अपने गंतव्य स्थान तक पहुँचने के लिए यात्री नक्शे का अध्ययन करते हैं, उसी प्रकार, शिष्य स्वर्ग पहुँचने के लिये परमेश्वर के वचन का अध्ययन करते हैं।
  - 1.3.2 हम छोटे समूहों में वचन का अध्ययन करते हैं, ताकि शिष्यों की अगुवाई परमेश्वर को प्रेम करने के प्राथमिक लक्ष्य की ओर उन्नति करने में कर सकें।
- 1.4 हम उन अन्य लक्ष्यों और कार्यों के द्वारा भटकना जायें जो महत्वपूर्ण तो हैं फिर भी परमेश्वर से प्रेम रखने के प्राथमिक लक्ष्य के मुकाबले मात्र दूसरे दर्जे के ही हैं।
  - 1.4.1 सुसमाचार प्रचार, शिष्यता, कलीसियाई वृद्धि और सामाजिक कार्यवाहियाँ सब के सब महत्वपूर्ण हैं, परन्तु अवश्य है कि हम ऐसा ना होने दें कि इनमें से कोई हमारे ध्यान को परमेश्वर से प्रेम रखने के अन्तिम उद्देश्य से भटका दें।
  - 1.4.2 कभी-कभी, “प्रबन्धन विशेषज्ञों” के द्वारा, सेवकाई में प्रभावशीलता और फलवन्त होने पर बहुत जोर-शोर से प्रचार किया जाता है, परन्तु ये मात्र दूसरे दर्जे के लक्ष्य हैं।

## 2. समूह के लक्ष्य

- 2.1 छोटे समूह में नेतृत्व करने का हमारा लक्ष्य परमेश्वर से प्रेम रखना और अधिक पूर्णता से परमेश्वर को प्रेम करने में दूसरों की सहायता करना ही होना चाहिये।
- 2.2 दूसरे क्रम का उद्देश्य यह है कि सदस्यों के मध्य सामुदायिकता की

भावना को निर्मित करना।

- 2.2.1 छोटे समूहों के सदस्यों को सीखना अवश्य है कि राज्य के उद्देश्यों को अपने स्वयं के लाभ के आत्म-खोजी महत्वाकांक्षाओं से आगे रखना है।
- 2.2.2 जैसे-जैसे विश्वासीगण मसीही समुदायिक एकता में बंधते जाते हैं, वे अपने लक्ष्यों और स्वप्नों तक पहुँचने में एक दूसरे की सहायता और प्रोत्साहन करते हैं।

### 3. व्यक्तिगत उद्देश्य

- 3.1 जैसे-जैसे शिष्यगण मसीही परिपक्वता और पवित्रता में बढ़ते जाते हैं, वे धीरे-धीरे इस संसार की परीक्षाओं पर जय पाना सीखते जाते हैं।
- 3.2 जैसे-जैसे शिष्यगण मसीही परिपक्वता और पवित्रता में बढ़ते जाते हैं, परमेश्वर का आत्मा उनके जीवनो में अपना फल धीरे-धीरे उत्पन्न करता जाता है।
- 3.3 शिष्यगण अधिकाधिक मसीह के समान बनते जाते हैं जबकि वे अपने पापमय स्वभाव को क्रूस पर चढ़ाते हैं।
- 3.4 शिष्यों को उस दुष्ट से अपने आपको बचाने के लिए अवश्य ही सुसज्जित किया जाना चाहिए।
- 3.5 शिष्यगण दूसरे शिष्यों को अपने साथ जुड़ने के लिए उत्साहित और प्रोत्साहित करते हैं।

## छोटे समूह के क्रियाकलाप

### प्रस्तावना:

अब तक हम ने, बाइबल में दिये गये छोटे समूहों के गुणों का, यीशु के एक छोटे समूह के साथ काम करने के तरीके का, परमेश्वर द्वारा अपने बच्चों के लिए ठहराये गये उद्देश्य का, उस उद्देश्य का हमारे छोटे समूहों पर होने वाले प्रभाव का और छोटे समूहों के सदस्यों के संबंध में हमारे सोच-विचारों को कैसा होना चाहिए इसका अध्ययन कर लिया है। आज के पाठ में हम उन क्रियाकलापों के प्रकारों के बारे में सीखेंगे जिन्हें हमें अपने छोटे झुण्ड में और उसके माध्यम से विकसित करने का प्रयास करना चाहिए।

1. पुनः एक बार, स्मरण रखें कि परमेश्वर के बच्चों के लिए प्रथम अर्थात् सब से महत्वपूर्ण आज्ञा पहले परमेश्वर से प्रेम रखना है, उसके बाद दूसरों से प्रेम रखना है।
  - 1.1 यीशु ने कहा सब आज्ञाओं का सारांश इन दो आज्ञाओं में किया जा सकता है। मत्ती 22:37, 39
  - 1.2 प्रेम के बिना शिष्य इस संसार की कठिनाईयों और चुनौतियों से बच नहीं सकते हैं।
  - 1.3 छोटे समूह ईश्वरीय प्रेम को विकसित करने, उसका अभ्यास करने और प्रदर्शन करने के लिए आदर्श वातावरण हैं।
  - 1.4 समूह में शिष्यों की एक समान वरदी, बैज, हेयर-स्टाइल या हाथ मिलाने का विशेष तरीका ऐसा कुछ नहीं होता। उनकी अलग पहचान देने वाला गुण उनका आपसी प्रेम होता है। यह प्रेम मात्र “संगति” नहीं होता है, यह उनमें व्याप्त यीशु का प्रेम होता है।
  - 1.5 यही वह प्रेम है जो सदस्यों को बलिदान करने, अपना क्रूस उठाने,

खोए हुआओं तक पहुँचने, एक दूसरे का ध्यान रखने की प्रेरणा प्रदान करता है।

- 1.6 परमेश्वर के बच्चों के लिए प्रेम केन्द्रीय बात होता है; इसके बिना सारे प्रयास व्यर्थ हैं। छोटे समूहों के लिए सब से महत्वपूर्ण क्रियाकलाप वे क्रियाएं होनी चाहिये जो एक दूसरे के प्रति इस ईश्वरीय प्रेम को अभिव्यक्त करती हैं। 1 कुरिन्थियों 13:1

## 2. छोटे समूहों का दूसरा सब से अधिक महत्वपूर्ण क्रियाकलाप बाइबल अध्ययन करना है।

- 2.1 बाइबल अध्ययन के बिना शिष्यगण अपने मार्ग से भटक जाते हैं। भजन 119:105
- 2.2 परमेश्वर को जानने के लिए हमारा पहला अनुशासन बाइबल का अध्ययन करना है। पौलुस ने इस बात के लिये बिरीया के लोगों की सराहना की थी। प्रेरित 17:11
- 2.3 हम सब वचन के चहुँओर बराबर के स्तर पर मिलते हैं; प्रत्येक समूह सभा की अगुवाई बाइबल को ही करनी चाहिए।
- 2.4 इसकी आवश्यकता नहीं है कि बाइबल ही प्रत्येक समूह पर हावी हो, परन्तु इसे प्रत्येक समूह का हिस्सा अवश्य होना चाहिए।

## 3. छोटे समूहों का तीसरा क्रियाकलाप प्रार्थना में परमेश्वर से बात करना है।

- 3.1 प्रार्थना के द्वारा, शिष्यों की पहुँच परमेश्वर की अलौकिक सहायता तक होती है। यूहन्ना 15:7
- 3.2 हमारी इच्छाएं नहीं परंतु हमारी प्रार्थनाएं परिणाम उत्पन्न कर सकती हैं। इच्छा करना बच्चों के द्वारा पत्थर फेंकने के समान है, प्रार्थना करना रॉकेट दागने के समान है। मत्ती 7:7-8
- 3.3 हम मात्र अपनी आवश्यकताओं के लिए ही प्रार्थना नहीं करते, परन्तु हम अपनी विनितियों को बताते हैं। धन्यवाद देने की आज्ञा दी गई है:

- प्रार्थना के उत्तरों से आशीषें और विजय प्राप्त होती है। फिलिप्पियों 4:6
- 3.4 शिष्यगण अकेले युद्ध नहीं कर सकते हैं, हमें अवश्य ही परमेश्वर से उसके अलौकिक सहायता की मांग करनी है। इफिसियों 6:10-18
- 3.5 शिष्य अनुभव करते हैं कि जब वे आज्ञा पालन करना प्रारम्भ करते हैं तब परमेश्वर उन्हें कठिन कार्य करने को कहता है परन्तु जब हम परमेश्वर पर भरोसा करते हैं और प्रार्थना में उसके साथ बने रहते हैं, वह अपनी इच्छा पूरी करने के लिए हमें सामर्थ्य देता है। फिलिप्पियों 4:13
- 3.6 प्रार्थना में परमेश्वर की स्तुति करना प्रत्येक छोटे समूह के लिए एक स्वस्थ पहलू है क्योंकि इस के द्वारा हम परमेश्वर के स्वभाव और गुणों पर मनन करते हैं।
- 3.7 छोटे समूह प्रार्थना की कार्यशालाएं हैं, जहाँ हम प्रार्थना के जीवन को सीखते हैं और उसका उपयोग भी करते हैं।
- 4. छोटे समूहों का चौथा क्रियाकलाप दूसरों की मसीह की ओर अगुवाई करना है।**
- 4.1 बिना सुसमाचार प्रचार शिष्य आत्म-केन्द्रित हो जाते हैं और परमेश्वर की योजना में कम रह जाते हैं।
- 4.2 छोटे समूहों में एक सामान्य प्रवृत्ति होती है कि वे अपने भीतर ही ध्यान देने वाले हो जाते हैं, समूह से बाहर के लोगों को अनदेखा करते हुए आपस में ही एक दूसरे के प्रति चिन्तित होने की ओर झुकाव रखते हैं।
- 4.3 इस संसार के लिए ज्योति और नमक होने की प्रभु की आज्ञा को अनदेखा कर देना उनकी सामान्य आदत हो जाती है (मत्ती 5:13-16)।
- 4.4 भटके हुए लोगों के प्रति सच्चा प्रेम रखने से ही सुसमाचार प्रचार का विकास होता है। प्रत्येक छोटे समूह को खोये हुये लोगों के प्रति चिन्तित होना चाहिए क्योंकि वे ही उनका परमेश्वर के साथ मेल



कराते हैं। 2 कुरिथियों 5:18

- 4.5 हर किसी को सीधे-सीधे सुसमाचार प्रचार में शामिल होने की आवश्यकता नहीं है। कुछ सुसमाचार प्रचार और मिशन के लिए प्रार्थना करते हैं, कुछ उसके लिये पैसा देते हैं, अन्य कुछ प्रचार करने में अपना समय देते हैं।
- 4.6 सेवा और लोगों तक पहुँचना ये दोनों बातें मिलकर पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य का विस्तार करने में योगदान करते हैं।
- 4.7 गवाही देना प्रत्येक सदस्य के परमेश्वर के साथ के जीवन को शक्तिशाली बनाता है, समूह को नया जोश और सन्तुलन प्रदान करता है, और झुण्ड की एकता को बढ़ाता है।

## 5. प्रश्न:

- 5.1 व्यक्तिगत बाइबल अध्ययन और प्रार्थना से समूह में किया जाने वाला बाइबल अध्ययन और प्रार्थना किस प्रकार से भिन्न है?
- 5.2 क्या आपने व्यक्तिगत लक्ष्यों और समूह के लक्ष्यों के बीच कोई तनाव अनुभव किया था? यदि हाँ, तो आपने इस तनाव को किस प्रकार से सुलझाया था?
- 5.3 अपने छोटे समूह के स्वास्थ्य के बारे में सोचें। क्या यह उन चार लक्ष्यों को सम्मिलित करता है, जो एक समूह के स्वास्थ्य के गुण होते हैं?

## छोटे समूह के स्थान

### प्रस्तावना:

महान आदेश हमें शिष्य बनाने की आज्ञा देता है। इसे हम सुसमाचार प्रचार करने के द्वारा, शिक्षा देने के द्वारा, जहाँ आवश्यक हो सुधार करने के द्वारा, और ऐसे नए उपासना समूहों और कलीसियाओं की स्थापना करने के द्वारा, जिनमें नए विश्वासियों की निरन्तर बढ़ती संख्या को ग्रहण करना और पोषित करना हो, पूरा करते हैं। ऐसे समूह किस स्थान में मिल सकते हैं?

### 1. जहाँ कहीं भी विश्वासीगण एकत्रित होते हैं वहाँ शिष्यता की प्रक्रिया हो सकती है।

1.1 नया नियम में शिष्यता प्रायः किसी उपासना के स्थान या धार्मिक केन्द्र में होती थी।

1.1.1 यरुशलैम के मन्दिर में। प्रेरित 2:46

1.1.2 सुलैमान के ओसारे में। प्रेरित 5:12

1.1.3 आराधनालयों में (थिस्सलुनिके में अन्य स्थानों पर), जब तक उन्हें अविश्वासी यहूदियों के द्वारा बाहर न निकाल दिया गया। प्रेरित 17:1-2

1.1.4 उपरौठी कोठरी में (त्रोआस में)। प्रेरित 20:7-8

1.2 नया नियम में शिष्यता अधिकतर घरों में होती थी। हम शिष्यता के नीचे दिये गये बातों को घरों में होता हुआ देखते हैं:

1.2.1 रोटी तोड़ना (जो कि प्रभु-भोज मनाने का संकेत है)। प्रेरित 2:46

1.2.2 घरों में होने वाली सभा। प्रेरित 5:42

- 1.2.3 हनन्याह के घर में आश्चर्यकर्म होना। प्रेरित 9:17-19
- 1.2.4 एक रोमी नागरिक का मनपरिवर्तन। प्रेरित 10:22-23
- 1.2.5 मरियम के घर में प्रार्थना सभा। प्रेरित 12:12
- 1.2.6 दरोगा का मनपरिवर्तन। प्रेरित 16:30-34
- 1.2.7 उपरौठी कोठरी में, जो कि अधिक सम्भावित रूप से किसी घर की घटना हो सकती है, रोटी-तोड़ना (प्रभु-भोज) और वचन की बातें करना (प्रचार करना और शिक्षा देना)। प्रेरित 20:8
- 1.2.8 पौलुस के घर में प्रचार करना और शिक्षा देना। प्रेरित 28:30
- 1.2.9 अक्विला और प्रिस्का के घर की कलीसिया। 1 कुरिन्थियों 16:19
- 1.2.10 नुमफास के घर की कलीसिया। कुलुस्सियों 4:15
- 1.2.11 अफफिया के घर की कलीसिया। फिलेमोन 1:2

## 2. घरों में मिलने के अनेक फायदे (और कुछ हानियाँ) हैं।

- 2.1 मन्दिर की अपेक्षा, घर की सभाओं में विचारों के आदान-प्रदान के लिए अधिक अवसर के साथ ही अधिक स्वतंत्रता होती है।
- 2.2 बहुधा मन्दिर की अपेक्षा, घर की सभाओं में परिवार कम बिखरे हुए होते हैं।
- 2.3 मन्दिर की अपेक्षा, घर की सभाओं में आस-पड़ोस के लोग अधिक आकर्षित होते हैं, और ये सभाएं उन्हें मंदिर जाने से अधिक सुविधापूर्ण होती हैं।
- 2.4 घरों में उपासना करने और मिलने के द्वारा अधिक से अधिक साधारण विश्वासियों को सेवकाई के लिए - और उनके आत्मिक वरदानों के विकास के लिए - प्रशिक्षित और प्रेरित किया जा सकता है।
- 2.5 आर्थिक लाभ: जमीन खरीदने और कलीसिया भवन बनाने की अपेक्षा, घरों में मिलना बहुत कम खर्चीला है। और कलीसिया के लिये पास्टर्स

और अन्य कर्मचारियों की तन्खाह देने की अपेक्षा साधारण-सदस्यों के नेतृत्व पर आश्रित होना बहुत कम खर्चीला है।

2.6 एक नुकसान यह है कि घर की सभाओं में गलत सिद्धान्त बिना बाधा के प्रसारित हो सकते हैं। (साधारण-सदस्य अगुवों को नियमित शिक्षा देने और प्रशिक्षित करने के द्वारा इस कमजोरी को दूर किया जा सकता है।)

2.7 एक दूसरी हानि यह है कि घर की सभाएं कई बार मसीही समुदाय के विभाजन का कारण हो सकती हैं, क्योंकि विभिन्न समूह एक दूसरे समूहों के साथ सम्पर्क खो देते हैं। (इस सम्भावित हानि से बचने के लिये समय समय पर ऐसे कार्यक्रमों और घटनाओं को आयोजित किया जाना चाहिये जिनमें विभिन्न घरेलू कलीसियाओं के सब विश्वासी लोग उपासना करने और अपने विश्वास और परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम का उत्सव मनाने लिये किसी एक स्थान पर इकट्ठा होंगे।)

### 3. निष्कर्ष:

3.1 वास्तविक भवन भौतिकता नहीं आत्मिकता है, जिस में किसी भी इमारत का महत्व नहीं है।

3.2 परमेश्वर के बच्चे ही परमेश्वर का मन्दिर हैं, चाहे वे कैसे भी भवन में क्यों न मिलते हों।

3.3 नया नियम में प्राथमिक मसीही सभा का स्थान घर ही था।

3.4 आज हमारी उपासना और शिष्यता में हमें इस बाइबल-सम्मत आदर्श को अपनाने की आवश्यकता है। हम अच्छा ही करेंगे जब हम अपने घरों का उपयोग बाइबल का अध्ययन करने, वचन का प्रचार करने, प्रार्थना सभाओं, और एक साथ रोटी तोड़ने (प्रभु-भोज) के लिए करेंगे।

## छोटे समूह के लिये नेतृत्व की शैलियाँ

### प्रस्तावना:

कुछ अगुवे जोर से बोलते हैं, कुछ दबी आवाज में बोलते हैं। कुछ बहुत जोशीले हैं, कुछ अन्य शान्त स्वभाव के हैं। परमेश्वर ने और हमारे वातावरण ने हमें एक दूसरे से अलग बनाया है। यह स्वाभाविक है कि हमारी अलग-अलग ढंग और हमारा व्यक्तित्व हमारे नेतृत्व के शैली प्रभावित करें। हमारी शैली कैसी ही क्यों न हो, हमें नेतृत्व में ईश्वरीय होना है।

### 1. अलग-अलग अगुवों के नेतृत्व की शैलियाँ अलग-अलग होती हैं।

1.1 एक संतुलित नेतृत्व शैली को अवश्य ही स्वीकार किया जाना चाहिए।

1.1.1 कुछ अगुवे सीमा से अधिक अधिकार जताने वाले होते हैं। (वे बहुत अधिक नियंत्रण का उपयोग करते हैं।)

1.1.2 कुछ बहुत अधिक अबंध-नीति को अपनाते हैं। (वे आवश्यक नियंत्रण भी काम में नहीं लाते हैं।)

1.2 एक संतुलित नेतृत्व शैली को निश्चित किया जाना आवश्यक है।

1.2.1 कुछ समूह बहुत अधिक कार्यवादी होते हैं। (बस काम करते रहो, मनोरंजन कुछ भी नहीं।)

1.2.2 कुछ समूह-सम्बंध विकसित करने पर बहुत अधिक जोर देते हैं। (ये लोग एक साथ मिलना और एक दूसरे को प्रोत्साहित करना पसंद करते हैं, परन्तु वहाँ बाइबल अध्ययन और प्रार्थना बहुत ही कम होती है।)

1.3 समूह के ध्यान के केन्द्र को अवश्य ही संतुलित होना चाहिए।

### 2. सभी मसीहियों को किसी न किसी क्षेत्र (या क्षेत्रों) में नेतृत्व करने

## की बुलाहट है।

- 2.1 सब विश्वासियों के पास आत्मिक वरदान हैं, और अपने आत्मिक वरदान के क्षेत्र (क्षेत्रों) में नेतृत्व करने के लिये वे जिम्मेवार हैं। इफिसियों 4:7-13
  - 2.1.1 सभी विश्वासियों को बुलाहट है कि सब की भलाई के लिए अपने वरदानों का उपयोग करने में नेतृत्व दें।
  - 2.1.2 समूह में ऐसा कोई भी विश्वासी न हो जिसे किसी सेवकाई की जिम्मेदारी ना मिली हो।
- 2.2 प्रभाव डालना - चाहे अच्छा हो या बुरा - नेतृत्व का ही एक रूप है। हम किसी न किसी तरीके से सब पर प्रभाव डालते हैं।
- 2.3 परमेश्वर ने अपनी कलीसिया को “राजपदधारी याजकों का समाज, और पवित्र लोग” नाम दिया है। याजकों के रूप में, सभी विश्वासी दूसरों को परमेश्वर के साथ एक स्वस्थ सम्बंध में लाने के लिये जिम्मेवार हैं। 1 परतस 2:9
  - 2.3.1 विश्वासियों को, परमेश्वर तक पहुँचने और दूसरों की सेवा करने के लिये अभिषिक्त अगुवे होने की आवश्यकता नहीं है।
  - 2.3.2 प्रत्येक शिष्य पर, दूसरे शिष्यों को चिताने, प्रोत्साहित करने और दृढ़ करने की जिम्मेवारी है।
  - 2.3.3 प्रत्येक शिष्य को दूसरों की सहायता करने के तरीके खोजने में सतर्क रहना चाहिये।
- 2.4 कुछ विश्वासियों के पास नेतृत्व करने का विशेष वरदान होता है। रोमियों 12:8
- 2.5 हो सकता है कि निर्धारित अगुवों के पास संगठन-संबंधि विशेष जिम्मेदारियाँ हो।
- 2.6 शिष्यगण किसी भी अगुवे का अंधा अनुकरण नहीं करते हैं, कहीं ऐसा ना हो कि वे किसी झूठे भविष्यद्वक्ता से धोखा खा जाएं। 1 यूहन्ना 4:1

- 2.7 किसी भी शिष्य को भटक जाने के लिए क्षमा नहीं किया जा सकता; सभी अपने कामों के लिये परमेश्वर को लेखा देंगे।

### 3. मसीही अगुवों को सेवक-अगुवे होना है।

3.1 मसीही अगुवे स्वामी (साहब) नहीं होते हैं। इसके बजाय, वे सेवक-अगुवे होते हैं। जो नेतृत्व परमेश्वर के लोगों के मध्य दिया जाता है उसे संसार के नमूने के समान नहीं होना चाहिये। लूका 22:26

3.2 हमें यीशु की नेतृत्व शैली का अनुकरण करना है। उसका सिखाना और नेतृत्व करना विशेष रूप से दमदार था क्योंकि वह अपने उदाहरण से नेतृत्व करता था (जैसी उसकी शिक्षा थी वैसा ही उसका जीवन था।)

3.2.1 उसने स्वयं ही नियमित प्रार्थना करने के द्वारा प्रार्थना के महत्व की शिक्षा दी थी।

3.2.2 उसने अपने चेलों के पांव धोकर सेवक-नेतृत्व की शिक्षा दी थी।

3.3 जो अगुवा “अच्छा चरवाहा” होता है वह अपने समूह को जानता है और उन्हें नाम लेकर बुलाता है। यूहन्ना 10:3

3.4 “अच्छा चरवाहा” अपने भेड़ों को कभी भी कोड़े मारकर नहीं हांकता, भेड़ें स्वयं ही उसके पीछे चलती हैं। मत्ती 20:28

### 4. नेतृत्व के बारे वचन में शिक्षा।

4.1 अगुवे के घर को नेतृत्व का नमूना होना चाहिये। 1 तीमुथियुस 3:1-3

4.2 प्राचीनों को अपने घरों में पहुनाई का नमूना होना था। 1 तीमुथियुस 3:2

4.3 नया नियम के अगुवों में सिखाने की योग्यता होनी चाहिये थी। 1 तीमुथियुस 3:2

4.4 अगुवे “खरी शिक्षा” को दृढ़ता से पकड़े रहते हैं। तीतुस 1:9

## 5. नेतृत्व की भूमिका और आत्मिक दर्शन।

- 5.1 अपने समूह के लिए अगुवों का एक दर्शन होता है, शिष्यगण एक दिशा और गन्तव्य की एक अनुभूति चाहते हैं।
- 5.2 अगुवे, मात्र कुछ क्षणों के कार्यक्रमों के बारे में नहीं परंतु विश्वासियों के आंतरिक चरित्र के प्रति चिन्तित रहते हैं।
- 5.3 अगुवों के पास अनन्त लक्ष्यों के लिए एक दर्शन होता है: जीवन की महत्वपूर्ण बातों को नापा नहीं जा सकता है। 2 कुरिन्थियों 4:17

## 6. प्रश्न:

- 6.1 जिन समूहों के आप हिस्सा रहे हैं उनमें आपने किस प्रकार के नेतृत्व शैली को देखा है?
- 6.2 वह शैली किस प्रकार से समूह के सदस्यों के वृद्धि में सहायक या बाधक हुई थी?
- 6.3 आपके छोटे समूह में आपकी क्या भूमिका है? आपकी भूमिका किस प्रकार से समूह के लिए सहायक है?
- 6.4 क्या आप इस बात से सहमत हैं कि सभी मसीही अगुवे होते हैं?
- 6.5 समूह में दूसरों की सहायता करने के लिये आप किस प्रकार की पहल कर रहे हैं?
- 6.6 “सब विश्वासियों का याजकपद” यह सिद्धान्त किस प्रकार से आपके झुण्ड को प्रभावित कर सकता है?



## समूह बाइबल अध्ययन का महत्व

### प्रस्तावना:

यह पाठ स्पष्ट करता है कि बाइबल अध्ययन बहुत ही लाभदायक, बहुमूल्य और महत्वपूर्ण क्यों है।

### 1. बाइबल परमेश्वर की प्रेरणा से लिखा गया और हमारे जीवन में लागूकरण के लिए उपयोगी है।

- 1.1 परमेश्वर अपने वचन में अपने बच्चों को निर्देश देता है। 1 तीमुथियुस 3:16
- 1.2 पवित्रशास्त्र में परमेश्वर का स्वभाव प्रगट किया गया है, जो हमें यह सिखाता है कि हम कैसा जीवन जीये।
  - 1.2.1 परमेश्वर का स्वभाव दस आज्ञाओं में विशेष रूप से प्रगट है।
  - 1.2.2 परमेश्वर का स्वभाव पाप और अन्याय के विरुद्ध उसके भयानक क्रोध में भी प्रगट है।
  - 1.2.3 उसका स्वभाव अपने बच्चों के लिए उसके असीमित धीरज और प्रेम में भी प्रगट है।
- 1.3 परमेश्वर के वचन को सीखना, पाप की परीक्षा का साम्हना करने में हमारी सहायता करता है। भजन 119:11

### 2. बाइबल परमेश्वर की सच्चाई है और उसमें कोई त्रुटि नहीं है।

- 2.1 शिष्य वचन का अध्ययन करते हैं ताकि परमेश्वर की सच्चाई को जानें और उसे अपने जीवन में लागू करें।
- 2.2 शिष्य वचन का अध्ययन करते हैं ताकि अनुभवों को समझ सकें और भावी जीवन के लिए अन्तर्ज्ञान प्राप्त करें।

- 2.3 बाइबल में, परमेश्वर के प्रेम और उद्धार के सुमाचार की तुलना हमारे पाप के बुरे समाचार से दिखाई गई है।
3. जब हम छोटे समूहों में परमेश्वर के वचन का अध्ययन करते हैं, तब हम साथ मिलकर पवित्रशास्त्र को, समूह के सदस्यों की आवश्यकताओं और अनुभवों के अनुसार, लागू कर सकते हैं।
- 3.1 परमेश्वर ने क्या कहा है और हमारे जीवन की आवश्यकता क्या है इनके बीच की कड़ी को जोड़ना यही काम लागूकरण होता है।
- 3.2 इसी तरीके से यीशु ने अपना शिक्षा देने का कार्य प्रारम्भ किया था। वह किसी के जीवन की किसी विशिष्ट परिस्थिति से आरंभ करता था, तब उस परिस्थिति से परमेश्वर की सच्चाई को लागू करता था।
- 3.2.1 (यूहन्ना 3) उसने नीकुदेमुस को नया जन्म लेने की बात तुरन्त ही नहीं बतायी थी।
- 3.2.2 (यूहन्ना 4) उसने कुएं के पास उस स्त्री को तुरन्त ही नहीं बताया था कि वही मसीहा है। उसने पहले उसके प्रश्नों का उत्तर दिया और उसके हृदय की आवश्यकता (आत्मिक क्षमा) का समाधान देने के पहले उसकी भौतिक आवश्यकता (पानी) को संबोधित किया।
- 3.2.3 (लूका 10:25-37) उसने अच्छे सामरी के दृष्टान्त को (जो अपने से प्रेम करने परमेश्वर की आज्ञा का उदाहरण है) तब तक नहीं बताया जब तक उससे अनन्त जीवन कैसे पाना है यह नहीं पूछा गया।
- 3.2.4 जब कभी यीशु ने किसी चर्चा की पहल की तब उसने प्रायः एक ऐसी टिप्पणी से आरंभ किया जिसने उसके शिष्यों को उलझन में डाल दिया; और उसके बाद उत्तर देने के बजाय वह और कई प्रश्न करते हुये आगे बढ़ा।
- 3.2.5 यीशु ने बहुत बार जीवन कि किसी एक समस्या से आरम्भ किया और तब उस परिस्थिति में परमेश्वर की सच्चाई को

लागू किया।

3.3 लोग चरित्र और पवित्रता में सर्वाधिक तीव्रता से तब बढ़ते हैं जब वे किसी महत्वपूर्ण समस्याओं से जूझ रहे होते हैं।

3.3.1 परमेश्वर हमारे जीवनों की समस्याओं और परीक्षाओं का उपयोग हमारे जीवन में आत्मिक वृद्धि को प्रोत्साहित करने के लिए करता है। याकूब 1:2-4

3.3.2 जब हमारे जीवन परमेश्वर के वचन में दिये गये मानकों से भटक जाते हैं तब पवित्र आत्मा हमें कायल करता और परमेश्वर के साथ की संगति में वापस खींचता है। यूहन्ना 16:8-11

4. जब हम दूसरे शिष्यों के साथ मिलकर परमेश्वर के वचन का अध्ययन करते जाते हैं, तब जब भी आवश्यक हो हम एक दूसरे का सुधार कर सकते हैं।

4.1 कभी-कभी हम यह समझने में गलती कर सकते हैं कि हमारी किसी विशेष परिस्थिति में परमेश्वर का वचन क्या कह रहा है, और यह हमें खतरनाक गलत व्याख्या तक पहुँचा सकता है। जब हम ऐसे त्रुटिपूर्ण विचारों को समूह में दूसरों के साथ बांटते हैं तब मसीह में हमारे भाई और बहन हमें सुधार सकते हैं।

4.2 ठीक इसी प्रकार से, हम अपने भाई और बहनों के द्वारा की जाने वाली वचन की व्याख्या में उनके लिए सही संतुलन ला सकते हैं।

5. परमेश्वर की सच्चाई को अपने जीवनों में लागू करना।

5.1 हम कुछ प्रश्नों को पूछने के द्वारा बाइबल ज्ञान को अपने जीवनों में लागू कर सकते हैं, जैसे कि कुछ प्रश्न नीचे दिये गये हैं:

5.1.1 इस शास्त्रपाठ से मेरे जीवन में क्या बदलाव आना चाहिए?

5.1.2 इस सिद्धांत को यदि मैं व्यवहार में लाता हूँ तो क्या परिणाम होगा?

- 5.1.3 इस शास्त्रपाठ में मैंने जो सीखा है उसके संबंध में मैं क्या कर सकता हूँ?
- 5.2 पवित्रशास्त्र का सही लागूकरण दो बातें करेगा:
- 5.2.1 यह हमारे हृदय को बदलेगा: पहले आन्तरिक बदलाव होना आवश्यक है। यही वह तरीका है जिस के द्वारा मसीह हमें ईश्वरीय स्वभाव प्रदान करता है। भजन 139:24; रोमियों 12:1-2
- 5.2.2 यह व्यवहार को बदलेगा: यह बाहरी बदलाव निश्चित रूप से आता ही है जब हम एक बार आन्तरिक रूप से बदल गए हैं। इसी तरीके से मसीह हमें आज्ञाकारिता की शिक्षा देता है। मत्ती 5:16
- 5.3 बाइबल की सच्चाई का लागूकरण एक अलौकिक प्रक्रिया है: पापी लोग इसका लागूकरण अपने आप से नहीं कर सकते हैं।

## बाइबल अध्ययन की पद्धतियाँ

### प्रस्तावना:

पिछले पाठ में हम ने सीखा है कि दूसरों के साथ बाइबल का अध्ययन करना छोटे समूह का एक बहुत ही कीमती क्रियाकलाप है - और यह दूसरों को शिष्य बनाने के सब से मूल्यवान तरीकों में से एक है। बाइबल अध्ययन के दो बुनियादी प्रकार हैं: वियोजक पद्धति (*Deductive method*) और विवेचनात्मक पद्धति (*Inductive method*)। यह पाठ दोनों पद्धतियों का वर्णन करेगा, तब अधिक विस्तार से विवेचनात्मक बाइबल अध्ययन की प्रकृति और लाभों का अध्ययन करेगा।

### 1. वियोजक बाइबल अध्ययन: इस में किसी तथ्य को पवित्रशास्त्र के विभिन्न स्थलों से प्रमाणित किया जाता है।

1.1 इसका एक उदाहरण नीचे दिया गया है।

1.1.1 तथ्य: “परमेश्वर पवित्र है”।

1.1.2 प्रमाणित: निर्गमन 15:11; 1 शमु. 6:20; भजन 99:9; यशा. 6:3; यहेज. 39:7; इब्रा. 1:13; प्र.वा. 4:8; प्र.वा. 16:4

1.2 इसे विषयात्मक, या एक विषय को लेकर किया गया अध्ययन कहा जाता है। इसमें किसी एक विषय पर अनेक शास्त्रपाठों का संक्षिप्त अध्ययन किया जाता है।

### 2. विवेचनात्मक बाइबल अध्ययन

2.1 विवेचनात्मक बाइबल अध्ययन में, मसीही शिक्षाएं, सच्चाइयां और सिद्धान्त किसी एक पाठ के अध्ययन से उभरते हैं।

2.2 कोई एक विशिष्ट शास्त्रपाठ अपने स्वयं के बारे में क्या कहता है

इसकी खोज करना ही इस पद्धति का लक्ष्य होता है। इस पद्धति में पाठ का अध्ययन उसके अपने ही संदर्भ के भीतर किये जाने को बढ़ावा दिया जाता है। बाहरी टीकाओं का उपयोग नहीं किया जाता है।

2.3 बाइबल अध्ययन के इस तरीके में चार बुनियादी कदम होते हैं:

2.3.1 शुरुवाती पठन।

2.3.2 अवलोकन: यह पूछना की यह शास्त्रपाठ क्या कहता है।

2.3.2.1 कौन? लेखक, पाठक, पात्र कौन-कौन हैं?

अ. इसे कौन लिखा है?

ब. यह किसके बारे में है?

स. यह कैसे लिखा गया है?

2.3.2.2 क्या? संदर्भ और अर्थ क्या है?

अ. इसका संदर्भ क्या है?

ब. यह साहित्य का प्रकार क्या है?

स. एक एक शब्द का क्या अर्थ है?

2.3.2.3 कब? समय का संकेत खोजना।

अ. किस समय यह शास्त्रपाठ लिखा गया था?

ब. कब यह घटना हुई थी?

2.3.2.4 कहाँ? स्थान का संकेत खोजना।

अ. यह शास्त्रपाठ कहाँ लिखा गया था?

ब. यह घटना कहाँ हुई थी?

2.3.2.5 क्यों? अभिप्राय पता करना।

अ. इसे क्यों लिखा गया था?

ब. यह परिस्थिति क्यों निर्मित हुई थी?

2.3.2.6 कैसे?

अ. इसे कैसे लिखा गया था?

ब. यह घटना कैसे निर्मित हुई थी?

2.3.3 **व्याख्या** – इसका क्या अर्थ है?

2.3.3.1 यह शास्त्रपाठ मूल पाठकों के लिए क्या अर्थ रखता था?

2.3.3.2 इस शास्त्रपाठ का मुख्य बिन्दु या शिक्षा क्या है?

2.3.3.3 अन्य बाइबल शास्त्रपाठों के साथ इसकी तुलना कैसे की जाती सकती है?

2.3.3.4 इस में सामान्य सिद्धान्त क्या है?

2.3.3.5 ..... बारे में यह हमें क्या बताता है?

2.3.3.6 ..... के द्वारा क्या अर्थ समझा गया है?

2.3.4 **लागूकरण** – मेरे लिए यह क्या अर्थ रखता है?

2.3.4.1 मूल पाठकों की जो परिस्थिति थी उसके समकक्ष आज क्या परिस्थिति है?

2.3.4.2 क्या इस शास्त्रपाठ में परमेश्वर, मनुष्य, संसार, कलीसिया, .  
..... के बारे में कोई विशेष शिक्षा है?

2.3.4.3 क्या इस में कोई उदाहरण, कोई चेतावनी, या कोई प्रतिज्ञा है?

2.3.4.4 यह शास्त्रपाठ जो कह रहा है उस से आपके जीवन को किस प्रकार से बदलना चाहिए?

2.3.4.5 जो कुछ भी कहा गया है उसकी आवश्यकता आपको किस प्रकार से है?

2.3.4.6 कार्य: इसके बारे में आप क्या करने जा रहे हैं? क्या कोई खास कार्य करने की आवश्यकता है?

2.3.4.7 क्या यह शास्त्रपाठ प्रार्थना या स्तुति के लिए प्रेरित करता है?

2.3.4.8 इसके कारण आपके जीवन के किस क्षेत्र में परिवर्तन आयेगा?

2.3.4.9 जो आप अभी कर रहे हैं और इस पाठ में दिये गये बाइबल के मानक के बीच क्या अन्तर है?



## बाइबल अध्ययन के प्रकार

### प्रस्तावना:

बाइबल अध्ययन के विभिन्न प्रकार हैं। यह पाठ इन विभिन्न प्रकारों की जांच करेगा और कुछ सामान्य अवलोकनों के साथ निष्कर्ष प्रदान करेगा ताकि आपको बाइबल अध्ययन में जो नेतृत्व देना है उसके लिये सहायता प्राप्त हो।

### 1. बाइबल अध्ययन के सुझाए गए लक्ष्य:

- 1.1 सुझाया गया पहला लक्ष्य है स्वर्ग की आशा और प्रतिज्ञा के साथ विश्वासियों को प्रोत्साहित करना।

सी. एस. ल्यूइस ने कहा है: “आने वाले अनंतकालिक जगत की ओर लगातार देखते रहना पलायनवाद या अवास्तविक आशावादी सोच का कोई एक रूप नहीं है, परन्तु यह उन बातों में से एक है जिन्हें करने हेतु एक मसीही को ध्यान में रखना है। इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें वर्तमान संसार को त्याग देना है। यदि आप इतिहास को पढ़ें तो आप पाएंगे कि वे मसीही जिन्होंने वर्तमान संसार के लिए सब से ज्यादा कुछ किया है वे ठीक वे ही लोग थे जो आने वाली बातों का सब से अधिक विचार करते थे।”

- 1.2 दूसरा लक्ष्य शिष्यों को प्रशिक्षित करना और शिष्य बनाना है। विश्वासियों को जीतने और शिष्य बनाने की प्रक्रिया के चार पायदान हैं।

- 1.2.1 गैर-विश्वासियों को सुसमाचार सुनाना।

- 1.2.2 विश्वासियों को उनके नवजात विश्वास में स्थापित करना।

- 1.2.3 भक्तों को (जो लोग स्थापित हो चुके हैं उन्हें) सेवा के लिए सुसज्जित करना।

1.2.4 नेतृत्व को विस्तारित करना (भावी अगुवों को तैयार करना)।

## 2. बाइबल अध्ययन के, उनके विषय-वस्तुओं पर आधारित, अनेक प्रकार हैं।

2.1 सुसमाचार प्रचार के लिये बाइबल अध्ययन (ऐसा बाइबल अध्ययन जो अपना हृदय परमेश्वर को देने के लिए गैर-विश्वासियों को प्रोत्साहित करता है)।

2.1.1 उदाहरण: (1) तुझे नया जन्म लेना अवश्य है। (2) उड़ाऊ पुत्र।

2.2 बाइबल अध्ययन जो किसी एक विशेष सिद्धान्त के बारे में शिक्षा देता है।

2.2.1 उदाहरण: (1) पवित्र कैसे बनना है (2) मसीह का दूसरा आगमन।

2.3 वर्तमान समय के नैतिक प्रश्नों के सम्बंध में बाइबल अध्ययन।

2.3.1 उदाहरण: (1) गर्भपात के बारे में बाइबल क्या कहती है। (2) तलाक के आरे में बाइबल क्या कहती है।

2.4 बाइबल के एक पुस्तक का (शुरू से अन्त तक) एक अध्ययन।

2.4.1 उदाहरण: (1) उत्पत्ति की पुस्तक (2) थिस्सलुनीकियों को लिखी पौलुस की पत्री

2.5 एक अध्यात्मिक मुद्दे पर बाइबल अध्ययन।

2.5.1 उदाहरण: (1) परमेश्वर पिता (2) त्रिएकता

2.6 बाइबल में प्रयुक्त एक विशेष शब्द के बारे में बाइबल अध्ययन।

2.6.1 उदाहरण: (1) सुसमाचार-प्रचार (2) पवित्र किया जाना

2.7 जीवनवृत्तांत संबंधी बाइबल अध्ययन।

2.7.1 उदाहरण: (1) अब्राहम का जीवन। (2) मूसा का जीवन।

2.8 किसी एक जीवन-परिस्थिति के बारे में बाइबल अध्ययन।

2.8.1 उदाहरण: (1) मृत्यु के बारे में बाइबल क्या कहती है (2) दुःखी हृदय के बारे में बाइबल क्या कहती है

2.9 स्पष्टिकरण करनेवाला बाइबल अध्ययन (किसी एक विशेष विषय पर व्यावहारिक शिक्षा देनेवाला बाइबल अध्ययन)।

2.9.1 उदाहरण: (1) सुसमाचार को किस प्रकार से प्रस्तुत करना है। (2) नया-जन्म कैसे पाना है।

2.10 उदाहरणस्वरूप बाइबल अध्ययन (दृष्टांत के रूप में):

2.10.1 उदाहरण: (1) मूसा की लाठी (2) अब्राहम द्वारा इसहाक का बलिदान

2.11 तर्कसंगत बाइबल अध्ययन

2.11.1 उदाहरण: (1) पवित्र आत्मा निर्जीव शक्ति नहीं है। (2) यीशु मात्र एक मनुष्य ही नहीं है।

2.12 प्रबोधक या प्रेरक बाइबल अध्ययन

2.12.1 उदाहरण: (1) तुझे नया-जन्म लेना अवश्य है। (2) तूने अपना पहला सा प्रेम छोड़ दिया है।

## बाइबल अध्ययन की संरचना

### प्रस्तावना:

पिछले पाठ में हमने सीखा कि बाइबल अध्ययन के, उनके विषय-वस्तु पर आधारित, अध्ययन के विभिन्न प्रकार हैं। आज के पाठ में हम सीखेंगे कि बाइबल अध्ययन के, बाइबल का कोई विशेष शास्त्रपाठ किस प्रकार से अध्ययन किया जाता है इस पर आधारित विभिन्न तरीके हैं।

1. विषयसंबंधि - कोई एक विषय चुनना और उसे उससे सम्बंधित बाइबल पदों की सहायता से उसे विकसित करना।

1.1 उदाहरण: धर्मी ठहराया जाना (रोमियों 3:23-0; 4:5; 5:1, 9; गलतियों 2:16; आदि)।

1.2 उदाहरण: आश्वासन (यूहन्ना 3:36; रोमियों 8:32; कुलुस्सियों 2:13)।

2. पाठसंबंधि - 1, 2 या अधिक से अधिक 3 पदों को चुन कर उनकी व्याख्या करना, उदाहरणों और लागूकरण के साथ उनकी रूपरेखा देना।

2.1 उदाहरण: यूहन्ना 3:16

2.1.1 प्रेम - परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा।

2.1.2 बलिदान- अपना एकलौता पुत्र दे दिया।

2.1.3 शर्त - जो कोई उस पर विश्वास करे।

2.1.4 प्रतिज्ञा - वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।

2.2 उदाहरण: मत्ती 28:19-20

2.2.1 आज्ञा - शिष्य बनाओ।

2.2.2 क्षेत्र - सब जातियों के।

2.2.3 प्रक्रिया - जाकर, बपतिस्मा देकर, शिक्षा देकर।

2.2.4 प्रतिज्ञा - मैं सदैव तुम्हारे साथ हूँ।

3. पाठसंबंधि-विषय संबंधि- एक या दो पदों में पाए जाने वाले किसी एक विषय को लेकर उसके लिये पवित्रशास्त्र में अन्य जगहों पर पाए जाने वाले सहायक पदों का उपयोग करते हुए अध्ययन करना।

3.1 उदाहरण: मत्ती 4:19 - बुलाहट।

3.1.1 यीशु के पीछे हो लेना।

3.1.2 मनुष्यों का पकड़ने वाला बनना।

3.2 उदाहरण: यूहन्ना 1:12 - निमंत्रण।

3.2.1 स्वागत

3.2.2 शर्त

3.2.3 अपनाना

4. व्याख्यात्मक - किसी एक शास्त्रपाठ की रूप-रेखा बनाना और उसके संदर्भ में ही, उस शास्त्रपाठ से अर्थ निकालते हुए, उस अर्थ पर प्रकाश डालने के लिए टिप्पणी और उदाहरणों के साथ, उसकी व्याख्या करना।

4.1 उदाहरण: लैव्यव्यवस्था 25 - छुटकारा।

4.2 उदाहरण: व्यवस्थाविवरण 26 - बलिदान (व्याख्यान के दौर में दिया गया उदाहरण)।

5. अनेकार्थी - किसी शास्त्रपाठ के अर्थ को विभिन्न दृष्टिकोणों और समयों के पक्ष से जांच करते हुए, उस ही शास्त्रपाठ पर आधारित शिक्षा के अनेक पाठों को तैयार करना।

5.1 उदाहरण: उड़ाऊ पुत्र।

5.1.1 छोटा पुत्र

5.1.2 बड़ा पुत्र

5.1.3 प्रेमी पिता

5.2 उदाहरण: यरुशलेम में यीशु का प्रवेश।

5.2.1 यीशु

5.2.2 शिष्य

5.2.3 भीड़

5.2.4 रोमी लोग

## 6. बाइबल अध्ययन को प्रस्तुत करना:

6.1 हस्तलिखित कागज से – अगुवा, उपदेश या बाइबल अध्ययन को, कागज से पढ़ता है जो उसने पहले से लिख रखा है।

6.2 स्मरण से – उस पाठ को अगुवा स्मरण से बोलता है। सब से अच्छे प्रचारकों में से कुछ, उत्तम रूप से पेश करने के लिए, अपने संदेशों के प्रत्येक शब्द को रट लेते हैं।

6.3 नोट्स की सहायता से – मार्गदर्शन के साथ किया जाने वाला वार्तालाप – अगुवा अपने पास 20 से 40 वाक्यों की टिप्पणी लिखकर रख लेता है जिसकी सहायता से वह बाइबल अध्ययन में नेतृत्व करता है। इससे उसे समय-समय पर प्रश्न पूछने और उत्तर पाने या चर्चा के लिए कुछ समय मिल जाता है।

6.4 तात्कालिक – बिना तैयारी के चर्चा – अगुवा अध्ययन के लिए कोई शास्त्रपाठ सुझाता है, और तब उसके पठन के बाद उस शास्त्रपाठ के बारे में चर्चा करने के लिए समय देता है।

आगे के पाठ विभिन्न संरचनाओं और विभिन्न लक्ष्यों के साथ बाइबल अध्ययन के कुछ उदाहरण प्रदान करेंगे।

## व्याख्यात्मक बाइबल अध्ययन का उदाहरण सुसमाचार प्रचार हेतु

### प्रस्तावना:

नीचे दी गई उपदेश की रूप-रेखा को कलीसियाओं में (उदाहरण के लिए, सण्डेस्कूल कक्षाओं में) या घर में (जैसे की, बाइबल अध्ययन करने वाले छोटे समूहों में) बाइबल अध्ययन के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

### यूहन्ना 3:1-21 - नया जन्म

1. चिन्तन - शिक्षक निम्नलिखित बिन्दुओं को पढ़ सकता है या उनके बारे में बात कर सकता है।

1.1 बहुत से लोग वास्तव में नहीं जानते कि “नया जन्म” इस शब्दावली का सच्चाई में अर्थ क्या है। संचार-माध्यम वाले, राजनीतिज्ञ लोग, गायक लोग, और नामधारी मसीही लोग सोच सकते हैं कि वे इसका अर्थ जानते हैं, परन्तु वे इसे इसके ऐतिहासिक संदर्भ के असली अर्थ में नहीं समझते हैं। यह कोई नई शब्दावली नहीं है। स्वयं यीशु ने इसे सदियों पहले नीकुदेमुस नाम के एक यहूदी धार्मिक अगुवे के साथ एक निजी बातचीत में उपयोग किया था।

1.2 “नया जन्म” ये शब्द आपके मन में किस प्रकार की अनुभूति लाते हैं?

2. अवलोकन - बाइबल पाठ पढ़ लेने के बाद शिक्षक को निम्नलिखित प्रश्न पूछने चाहिए।

2.1 यूहन्ना 3:1-3 को पढ़ें।

- 2.1.1 नीकुदेमुस ने कौन से कदम पहले ही उठा लिये थे, जिनके कारण वह यीशु के द्वारा कही जाने वाली बातों को स्वीकार करने के लिये तैयार हो चुका रहा होगा?
- 2.1.2 मसीह ने जो प्रतिउत्तर दिया उससे आश्चर्यचकित होने के लिये नीकुदेमुस के पास क्या कारण थे?
- 2.2 यूहन्ना 3:3-15 को पढ़ें।
  - 2.2.1 यहाँ कौन से वाक्यांश दिखाते हैं कि नया जन्म लेना महत्वपूर्ण है?
  - 2.2.2 यीशु ने, नीकुदेमुस को अपनी बात समझाने के लिए, प्रकृति से किन रूपकों का उपयोग किया था?
  - 2.2.3 ये प्राकृतिक घटनाएं किन आत्मिक सच्चाईयों को प्रदर्शित करती हैं?
- 2.3 गिनती 21:6-9 को देखें।
  - 2.3.1 यहूदी इतिहास में घटित यह घटना, यीशु और उसके संदेश को समझाने में नीकुदेमुस की किस प्रकार से सहायता कर सकती थी?
  - 2.3.2 यदि आप नीकुदेमुस की जगह पर होते तो इस बिन्दु पर आप यीशु से और कौन से प्रश्न पूछना चाहते?
- 2.4 यूहन्ना 3:16-21 को पढ़ें। यूहन्ना 3:16 को सावधानीपूर्वक देखें।
  - 2.4.1 अनेक अध्यात्मिक विद्वान इस पद को “मसीही संदेश का निचोड़” कहते हैं।
  - 2.4.2 इस पद से आप मसीहियत के बारे में क्या जान सकते हैं? प्रत्येक शब्द या वाक्यांश के अर्थ के बारे में विचार करें।
  - 2.4.3 क्या कोई व्यक्ति परमेश्वर के साथ सही या गलत रूप से चलना आरम्भ करता है? क्यों?
  - 2.4.4 कोई व्यक्ति कौन से दो तरीकों से यीशु को प्रतिउत्तर दे सकता



है?

- 2.4.5 इन दो प्रतिउत्तरों में से प्रत्येक का क्या परिणाम है?
- 2.4.6 कोई व्यक्ति यीशु पर विश्वास न करने का चुनाव क्यों करता है इसके कौन से कारण यीशु ने बताये थे?
- 2.4.7 पद 19 संकेत करता है कि लोगों का, यीशु पर विश्वास न करने का चुनाव करने का एक कारण यह है कि, “मनुष्यों ने अंधकार को प्रिय जाना।” भौतिक अंधकार के बारे में आरामदायक बात कौन सी है?
- 2.4.8 ऐसे ही आकर्षण क्यों लोगों के लिए आत्मिक अंधकार में खुश रहने के कारण हो सकते हैं?

### 3. व्याख्या:

- 3.1 कभी-कभी लोग मसीहियत की “एक-मार्ग सुसमाचार” के रूप में आलोचना करते हैं। इस शास्त्रपाठ में से कौन से वाक्यांश सुझाते हैं कि परमेश्वर तक पहुँचने का मात्र एक ही मार्ग है?
- 3.2 यदि यूहन्ना 3 में यीशु जो कह रहा है वह “सच्चाई” है तो एक व्यक्ति को किस प्रकार से परमेश्वर के साथ सही सम्बंध में आना चाहिये?
- 3.3 क्या आप सोचते हैं कि “नया जन्म” ऐसे किसी व्यक्ति के लिए एक अच्छी शब्दावली है जो आत्मिक अंधकार में जीवन बिता चुका है और अब परमेश्वर के साथ सही सम्बंध का अनुभव कर रहा है? क्यों?
- 3.4 ऐसे किसी व्यक्ति को, जो आत्मिक अंधकार में रह चुका है, परमेश्वर के साथ का यह नया सम्बंध क्योंकर नया जन्म के समान लग सकता है?

#### 4. लागूकरण:

- 4.1 नया जन्म आपके लिए क्या अर्थ रखता है?
- 4.2 इस नया जन्म से आप किस प्रकार से लाभान्वित हुए हैं?
- 4.3 नया जन्म के इस अर्थ के कारण आप अपने जीवन में कौन सा बदलाव करेंगे?

## व्याख्यात्मक बाइबल अध्ययन का उदाहरण सुसज्जित करने हेतु:

### शान्ति देने के लिए शान्ति पाए हुये

#### 2 कुरिंथियों 1:1-11

1. चिन्तन - शिक्षक निम्नलिखित बिन्दुओं को पढ़ सकता है या उनके बारे में बात कर सकता है।
  - 1.1 पत्र लिखने के सब से कठिन प्रकारों में से एक प्रकार “संवेदना पत्र” लिखना है। क्या आप ने ध्यान दिया है कि सब से अधिक शान्ति देनेवाली टिप्पणी उनके द्वारा लिखी जाती है जिन्होंने स्वयं ही दुखों का अनुभव किया है? इस पत्री में, पौलुस, जिसने स्वयं ही दुख उठाया है, दुख उठा रहे लोगों को उसी दृष्टिकोण से पत्र लिखता है। अपने दुख उठाने और किसी अन्य व्यक्ति को अपनी शान्ति देने के बीच पौलुस एक सीधे सम्बंध को देखता है।
  - 1.2 ऐसे किसी समय का वर्णन करें जब आपको किसी ने शान्ति प्रदान की थी, या किसी ऐसे समय का जब किसी अन्य के लिए आप स्वयं शान्ति के कारण हुए थे।
2. अवलोकन - बाइबल पाठ पढ़े जाने के बाद शिक्षक को निम्नलिखित प्रश्न पूछने चाहिए।
  - 2.1 (पद 1) पौलुस इस पत्र को लिखने में किस अधिकार का दावा करता है ?
  - 2.2 (पद 2) “अनुग्रह और शान्ति” किस प्रकार से शुभ-समाचार और

अंतिम शान्ति के सारांश हैं?

- 2.3 (पद 3) परमेश्वर के लिए पौलुस ने जो वर्णन किया है, वह किस प्रकार परमेश्वर के स्वभाव को समझने में आपकी सहायता करता है?
- 2.4 आप पद 4-7 से क्लेश और शान्ति के बारे में कौन से सिद्धान्त सीख सकते हैं?
- 2.5 इन सिद्धान्तों के कौन से व्यवहारिक उदाहरण आपने अनुभव किये हैं?

### 3. व्याख्या:

- 3.1 (पद 8-11) पौलुस ने जो अपने दुःखों का वर्णन किया है, उसे पढ़कर आप कैसा अनुभव करते हैं?
- 3.2 पौलुस ने अपने दुःखों के द्वारा स्वयं अपने बारे में क्या सीखा था? परमेश्वर के बारे में क्या सीखा था?
- 3.3 (पद 10) पौलुस किस भरोसे को दृढ़ता पूर्वक बताता है?
- 3.4 पौलुस कुरिन्थुस के लोगों से किस सहायता की अपेक्षा करता है?
- 3.5 इस सहायता का परिणाम क्या होगा?

### 4. लागूकरण - शिक्षक को निम्नलिखित प्रश्न पूछने चाहिये और विद्यार्थियों को उनके अपने अनुभवों से उत्तर देने देना चाहिए।

- 4.1 क्या आप किसी एक ऐसे समय के बारे में याद करते हैं, जब परमेश्वर ने आपकी न केवल दुख को सहने में, परन्तु उनसे उत्पन्न लाभों का भी अनुभव करने में सहायता की थी?
- 4.2 शान्ति अनुभव करने में आप इस समय किस स्तर पर हैं - क्या आप शान्ति अनुभव कर रहे हैं, शान्ति दे रहे हैं, या शान्ति पाने की आवश्यकता में हैं?
- 4.3 आपकी आवश्यकताओं के लिए यह शास्त्रपाठ क्या सुझाव देता है?
- 4.4 अपनी आशा को परमेश्वर पर रखने के लिए (पद 10) और अपने जीवन को किसी दुख उठानेवाले के प्रति शान्ति का कारण ठहरने के

- लिए साथ मिलकर प्रार्थना करें।
- 4.5 अपने समूह के भीतर के या बाहर के उन व्यक्तियों की पहचान करें जिन्हें शान्ति या छुटकारे के लिए आपकी प्रार्थनाओं की आवश्यकता है (पद 10-11)।

## विषय-संबंधि बाइबल अध्ययन के पांच उदाहरण सुसमाचार-प्रचार हेतु उद्धार योजना की रूपरेखाएँ

### परिचय

उद्धार योजना की निम्नलिखित पांच रूपरेखाओं का उपयोग बाइबल अध्ययनों या सुसमाचार-प्रचारीय संदेशों के लिए किया जा सकता है।

#### 1. स्वर्ग की ओर कदम

- 1.1 हमें अपने पापों को जानना आवश्यक है। रोमियों 3:23
- 1.2 हमें अपने पापों का पश्चात्ताप करना आवश्यक है। प्रेरित. 3:19
- 1.3 हमें अपने पापों का अंगीकार करना आवश्यक है। यूहन्ना 1:9
- 1.4 हमें अपने पापों को छोड़ना आवश्यक है। यशायाह 55:7
- 1.5 हमें मसीह का अंगीकार करना आवश्यक है। रोमियों 10:9
- 1.6 हमें मसीह को ग्रहण करना आवश्यक है। यूहन्ना 1:12

#### 2. रोमी रास्ता

- 2.1 हमें अपने पापों को स्वीकार करना आवश्यक है। रोमियों 3:19
- 2.2 हमें मसीह पर विश्वास रखना आवश्यक है। रोमियों 3:22
- 2.3 हमें यह मानना आवश्यक है कि हम पापी हैं। रोमियों 3:29
- 2.4 हमें यह विश्वास करना आवश्यक है कि परमेश्वर हमें मसीह के द्वारा धर्मी ठहराता है। रोमियों 3:24
- 2.5 हमें यह विश्वास करना आवश्यक है कि उसका लहू हमारे पापों के लिये प्रायश्चित है। रोमियों 3:25

- 2.6 हमें यह विश्वास करना आवश्यक है कि मसीह हमें विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराता है। रोमियों 3:26
- 2.7 हमें उसके पुनरुत्थान का अंगीकार करना और उस पर विश्वास करना आवश्यक है। रोमियों 10:9

### 3. परिवर्तित जीवन

- 3.1 आपको अपने पापों को जानना आवश्यक है। रोमियों 3:23
- 3.2 आपको जीवन और मृत्यु में से किसी एक का चुनाव करना आवश्यक है। रोमियों 6:23
- 3.3 आपको मसीह यीशु के जीवन और उसके लहू का चुनाव करना आवश्यक है। रोमियों 5:8-9
- 3.4 आपको अंगीकार और विश्वास करने का चुनाव करना आवश्यक है। रोमियों 10:9
- 3.5 आपको उद्धार का चुनाव करना आवश्यक है। रोमियों 10:13

### 4. यीशु

- 4.1 यीशु द्वार है। यूहन्ना 10:9
- 4.2 यीशु जीवन है। यूहन्ना 10:10
- 4.3 यीशु चरवाहा है जो अपना प्राण देता है। यूहन्ना 10:11, 15
- 4.4 यीशु, मसीह है जो अनन्त जीवन देता है। यूहन्ना 10:24-28
- 4.5 यीशु, उसके लिए जो विश्वास करता है, पुनरुत्थान है। यूहन्ना 11:25-26
- 4.6 यीशु मार्ग, सत्य और जीवन है। यूहन्ना 14:6

### 5. मसीह में जीवन

- 5.1 हमें स्वयं के लिए मरना अवश्य है। 2 कुरिंथि. 5:14
- 5.2 हमें मसीह में रहना अवश्य है। 2 कुरिंथि. 5:15

स्कूल ऑफ इवेन्जलिज़म

- 5:3 हमें एक नई सृष्टि होना अवश्य है। 2 कुरिंथि. 5:17
- 5.4 हमें मसीह के साथ मेल-मिलाप करना अवश्य है। 2 कुरिंथि. :18
- 5.5 हमें मसीह के राजदूत बनना अवश्य है। 2 कुरिंथि 5:20
- 5.6 हमें मसीह की धार्मिकता को प्रतिबिम्बित करना है। 2 कुरिंथि. 5:21
- 5.7 हमें मसीह के इस उद्धार के अनुग्रहकारी दिन को स्वीकार करना है।  
2 कुरिंथि. 6:2

लागूकरण: आप किस रूपरेखा का चुनाव करेंगे? (प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी स्वयं की रूपरेखा बनाने के लिये प्रोत्साहित किया जा सकता है।)

- 6.1
- 6.2
- 6.3
- 6.4



# विषय-संबंधि बाइबल अध्ययन के दो उदाहरण

## सुसमाचार-प्रचार हेतु

### नया जन्म

#### 1. नया जन्म क्या है?

- 1.1 (यूहन्ना 1:1) यह एक आत्मिक जन्म है।
- 1.2 (रोमियों 6:4-5) यह गाड़ा जाना और पुनरुत्थान है।
- 1.3 (2 कुरिन्थियों 5:17) यह परिवर्तन है।

#### 2. नया जन्म क्यों आवश्यक है?

- 2.1 (रोमियों 3:10) क्योंकि कोई भी धर्मी नहीं है।
- 2.2 (रोमियों 8:7-8) क्योंकि हम परमेश्वर को प्रसन्नत नहीं कर सकते।
- 2.3 (इब्रानियों 9:27) क्योंकि मृत्यु के बाद न्याय होना है।

#### 3 नया जन्म किसके लिए है?

- 3.1 (मत्ती 8:3) यह उनके लिए है जो बालकों के समान आते हैं।
- 3.2 (यूहन्ना 1:12) यह उनके लिए है जो उसे ग्रहण करते हैं।
- 3.3 (यूहन्ना 3:16) यह उस प्रत्येक व्यक्ति के लिए है जो विश्वास करता है।

#### 4. नया जन्म कब और कहाँ हो सकता है?

- 4.1 (2 कुरिन्थियों 6:12) अभी
- 4.2 (इब्रानियों 13:5) कहीं भी

## 5. नया जन्म कैसे पूरा होता है?

- 5.1 (यूहन्ना 3:6-8) यह एक तेज़ आंधी आने के समान होता है।
- 5.2 (तीतुस 3:5) यह परमेश्वर की दया के अनुसार प्राप्त होता है।
- 5.3 (यूहन्ना 5:1) नया जन्म यह विश्वास करने से प्राप्त होता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है।

## 6. हम कैसे जान पाते हैं कि हमारा नया जन्म हुआ है?

- 6.1 (रोमियों 8:16) परमेश्वर का आत्मा हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है।
- 6.2 (पतरस 1:23) परमेश्वर के वचन के द्वारा
- 6.3 (यूहन्ना 1:7) ज्योति में चलने के द्वारा
- 6.4 (यूहन्ना 5:18) स्वयं को पाप से दूर रखने के द्वारा

# यीशु मसीह

## 1. यीशु मसीह कौन है?

- 1.2 (यूहन्ना 1:1, 14) वह देह में परमेश्वर है।
- 1.2 (यूहन्ना 10:30) वह परमेश्वर पिता के साथ एक है।
- 1.3 (यूहन्ना 20:28) वह प्रभु और परमेश्वर है।
- 1.4 (कुलुस्सियों 1:15) वह अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप है।

## 2. मसीह को कौन ग्रहण कर सकता है?

- 2.1 (यूहन्ना 3:16) जो कोई भी उस पर विश्वास करता है।
- 2.2 (रोमियों 10:9) जो कोई भी उसका अंगीकार करता और उस पर विश्वास करता है।

### 3. मनुष्य को यीशु मसीह की आवश्यकता क्यों है?

- 3.1 (यूहन्ना 14:1-6) वह स्वर्ग में हमारे लिये स्थान तैयार कर रहा है।
- 3.2 (प्रेरितों 4:12) किसी और में उद्धार नहीं है।
- 3.3 (रोमियों 5:12) सब ने पाप किया है।
- 3.4 (इफिसियों 2:1) मनुष्य शैतान के नियंत्रण में है।
- 3:5 (इब्रानियों 9:27) मनुष्य को मरना, और उसके बाद न्याय का सामना करना है।
- 3.6 (1 यूहन्ना 1:7) यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।

### 4. कोई यीशु से कब और कहाँ मिल सकता है?

- 4.1 (2 कुरिन्थियों 6:2) अभी अनुकूल समय है
- 4.2 (प्रकाशित 3:20) कहीं भी, आपके हृदय के द्वार पर

### 5. कोई व्यक्ति यीशु के पास कैसे आता है?

- 5.1 (लूका 5:32) वह अपने पापों से पश्चात्ताप करें।
- 5.2 (लूका 19:10) वह यह जान ले कि वह खोया हुआ है।
- 5.3 (रोमियों 3:10) यह अंगीकार करे कि वह धर्मी नहीं है।
- 5.4 (रोमियों 5:8) वह जैसा है वैसा ही यीशु के पास आए।

### 6. आप कैसे जानते हैं कि आप उससे मिले हैं?

- 6.1 (रोमियों 8:14,16-17) परमेश्वर का आत्मा मुझे बताता है।
- 6.2 (2 कुरिन्थियों 5:17) मैं एक नई सृष्टि हूँ।
- 6.3 (1 यूहन्ना 5:10) मुझ स्वयं में ही गवाही है।

# विषय-संबंधि बाइबल अध्ययन का उदाहरण

## स्थापित करने हेतु

### परमेश्वर का वचन <sup>7</sup>

#### परिचय

- बाइबल का लेखक परमेश्वर है, और उसने इसे लिखने के लिए पवित्र मनुष्यों का उपयोग किया है।
- हमें बाइबल हमारे आत्मिक विकास के लिए दी गई है। यदि हम इसे सावधानी पूर्वक पढ़ते और समझते हैं तो यह हमारे जीवनों को आत्मिक रीति से समृद्ध बनाएगी।
- हमें इसके संदेश को स्वीकार करना है और इससे लाभान्वित होने के लिये आज्ञाकारिता में उसका प्रतिउत्तर देना आवश्यक है।

#### 1. चिन्तन के लिये प्रश्न

- 1.1 यदि हम एक दिन भोजन न खाएं, तो क्या होता है? यदि हम दो दिन न खाएं? एक सप्ताह?
- 1.2 हम क्यों भोजन खाते हैं? हम परमेश्वर का वचन क्यों पढ़ते हैं?
- 1.3 क्या आप उन लोगों को जानते हैं जो परमेश्वर का वचन नहीं पढ़ते हैं? उनका जीवन कैसा है?
- 1.4 क्या आप उन लोगों को जानते हैं जो नियमित रूप से परमेश्वर का वचन पढ़ते हैं? उनका जीवन कैसा है?

**2. विश्लेषण प्रश्न** (नीचे दिये गये - और आगे के पाठों में दिये गये - छह प्रश्नों का उपयोग दैनिक मनन में मार्गदर्शिका के रूप में किया जा सकता है। प्रश्नों की क्रमसंख्या सप्ताह के दिनों की क्रमसंख्या को बताती है, जैसे कि प्रश्न क्र. 1 - सोमवार, प्रश्न क्र. 2 - मंगलवार, इत्यादि)

**प्रश्न 1. वचन क्या है?**

व्यवस्था 8:3 (मत्ती 4:4)

भोजन

भजन. 119:105 (नीति 6:23)

दीपक

यिर्म 23:29

आग / हथोड़ा

यूह. 1:1

यीशु

यूह. 6:63

आत्मा / जीवन

रोमि. 1:16

परमेश्वर की सामर्थ

इफि. 6:17 (इब्रा 4:12)

आत्मा की तलवार

1 पत. 1:25, 2:2

दूध

**इसके साथ क्या करना है?**

व्यवस्था 11:18-19

स्मरण करना, सिखाना

यहो. 1:8

ध्यान करना

यहो. 23:6

मानना, पूरा करना

भजन. 126: 5-6

बोना

यशा. 34:16 (यूह. 5:39)

उससे परामर्श लेना, पढ़ना

कुलु. 3:6

निर्देश देना, उपदेश देना

याकू. 1:22-25

व्यवहार में लाना

**प्रश्न 2. इसे हमें किसने दिया है?**

यूह 1:14

यीशु ने

प्रेरित. 1:16

पवित्र आत्मा ने

2 तीमु 3:16

परमेश्वर ने

2 पत 1:20-21

आत्मा और मनुष्य ने

### प्रश्न 3. इसे कैसे लागू किया जाता है?

व्यवस्था 4:2 (व्यवस्था 12:32)

भजन 119:47, 97, 140

प्रेरित. 17:11

1 पत. 1:22

1 तीमु. 1:8

इस में परिवर्तन किये बिना  
प्रेम के साथ

इसकी जांच-पड़ताल करते हुये

आज्ञाकारिता के साथ

उचित रूप से

### वचन का वर्णन कैसे किया गया है?

भजन 19:7-11

रोमि. 7:12

वचन सिद्ध है, सत्य है

वचन पवित्र, ठीक, अच्छा है

### प्रश्न 4. परमेश्वर ने वचन क्यों दिया है?

यूह. 20:31

रोमि. 15:4

1 कुरि. 10:11

1 यूह. 5:13

कि हम उससे जीवन पायें

हमारे पास आशा होने के लिये

चेतावनी के लिए

आश्वासन के लिए

### वचन क्यों पढ़ें?

व्यवस्था 17:19-20

यहो. 1:8

भजन 119:9 (यूह. 15:3)

भजन 119:11

इफि. 5:26

2 तीमु 2:15-17

परमेश्वर का भय मानने के लिये

सफल होने के लिये

शुद्ध होने के लिये

पाप से बचने के लिये

ताकि पवित्र हो जायें

ताकि सिद्ध हो जायें

### प्रश्न 5. वचन कहाँ है?

व्यवस्था 6:6 (व्यवस्था 11:11-18; लुका 2:51) हमारे हृदयों में

व्यवस्था 11:19

यहो. 1:14

घर में

हमारे मध्य में

**प्रश्न 6. हम इसे कब लागू करते हैं?**

व्यवस्था 11:19

सारे समय

व्यवस्था 17:19

प्रतिदिन

यहो. 1:8

दिन और रात

**वचन का कब अन्त होता है?**

भजन 119:89 (यशा 40:8; मत्ती 5:18) कभी नहीं

**3. लागूकरण प्रश्न**

- 3.1 इस अध्ययन के दौरान परमेश्वर ने आपसे कैसे बात की है?
- 3.2 क्या आपके पास बाइबल है? आप इसका क्या करेंगे?
- 3.3 बाइबल-पठन के लिये आपकी योजना क्या है?
- 3.4 इस अध्ययन के द्वारा परमेश्वर आपसे आपके जीवन में क्या बदलाव लाने को कह रहा है?

# विषय-संबंधि बाइबल अध्ययन का उदाहरण स्थापित करने हेतु प्रार्थना

## परिचय

- प्रार्थना परमेश्वर से बातचीत करना है।
- उससे प्रार्थना करने के लिये, जैसी हमें करनी चाहिये, हमें उसे व्यक्तिगत रीति से जानना आवश्यक है।
- परमेश्वर हमें प्रार्थना करने का निमंत्रण देता है; सच्चाई तो यह है कि वह हमें जोर देकर प्रोत्साहित करता है कि हम प्रार्थना में उसके पास आयें।
- प्रार्थना के अनेक पहलू हैं: स्तुति करना, धन्यवाद देना, पाप अंगीकार करना, मध्यस्थता करना और व्यक्तिगत बिनतियां प्रस्तुत करना।
- हमें दृढ़ता और विश्वास के साथ, परमेश्वर के राज्य की खोज और महान परिणामों की आशा करते हुये, प्रार्थना करनी चाहिये।

## 1. चिन्तन के लिये प्रश्न

- 1.1 पति-पत्नी के मध्य घनिष्टता से और ठंडेपन से होने वाली बातचीत के मध्य क्या अंतर होता है?
- 1.2 क्या आप ऐसे लोगों को जानते हैं जिनकी आपस में नहीं बनती? क्या



इसका एक कारण आपसी में बातचीत न करना है?

1.3 एक स्वस्थ रिश्ते में आपसी बातचीत किस प्रकार की होती है?

**विश्लेषण प्रश्न:**

**प्रश्न क्र. 1. प्रार्थना क्या है?**

उत्प. 32:9-12

विनती

1 इति. 29:10-19

स्तुति

2 इति. 1:7-12

विनती

भजन 51

पाप अंगीकार

मती 6:9-13 (लूका 11:2-4)

स्तुति, विनती, पाप अंगीकार

लूका 1:46-55 (1थिस्स 5:18)

स्तुति और धन्यवाद

यूहन्ना 17 (इफि. 1:15-23)

मध्यस्थता

**क्या रूकावटें होती हैं?**

भजन 66:18 (यशा 59:1-2)

दुष्टता

यूह. 15:7

एकता का अभाव, अनाज्ञाकारिता

याकूब 1:6-7

संदेह

याकू. 4:2-3

निष्क्रियता और गलत उद्देश्य

यूह. 3:21-22

बुरा विवेक, भरोसा नहीं

**प्रश्न क्र. 2. कौन प्रार्थना करता है।**

2 इति. 7:14

परमेश्वर के लोग

मती 7:8

कोई भी

यूहन्ना 1:12 (रोमि. 8:14-15)

जिसने भी यीशु को स्वीकार किया

रोमि. 8:26-27

पवित्र आत्मा

याकूब 1:5

जिसमें बुद्धि की कमी है

**प्रश्न क्र. 3. हमें कैसे प्रार्थना करनी है?**

निर्ग 19:5

उसकी आवाज़ को सुनते हुए

2 इति. 7:14

मती 6:7

मती 17:20

लूका 11:5-13

यूहन्ना 16:24

प्रेरित 6:4

इफि. 6:18

फिलि. 4:6-7

नम्र होकर खोजना

गुप्त, दोहराना नहीं

विश्वास सहित

दृढ़ता सहित

यीशु के नाम में

निवेदन सहित

आत्मा के द्वारा

परेशान न होना, मांगना

### प्रश्न क्र. 4. हमें क्यों प्रार्थना करनी है?

भजन 20:1

यिर्म. 33:3

मती 7:7-11

1 यूह. 1:9

संकट के कारण

अज्ञानता के कारण

पाने, ढूँढने, आमंत्रित करने

पापों की क्षमा के लिए

### प्रश्न क्र. 5. कहाँ प्रार्थना करें?

भजन. 63:1

मती 6:6

प्रेरित. 4:31

अकेले स्थान में

अपने कमरे में

जिस स्थान पर हम इकट्ठा होते हैं

### प्रश्न क्र. 6. हमें कब प्रार्थना करनी है?

भजन 55:18

भजन 63:7

इफि. 6:18

1 थिस्स. 5:17

सुबह, दोपहर, रात

रात के हर एक पहर में

सभी अवसरों पर

निरन्तर

### 3. लागूकरण प्रश्न

3.1 इस अध्ययन के दौरान परमेश्वर ने आपसे क्या बातचीत की है?

3.2 आपको कहाँ प्रार्थना करना पसंद है? क्यों?

- 3:3 आप दूसरों को प्रार्थना करने के लिए कैसे प्रोत्साहित कर सकते हैं?
- 3:4 आप प्रार्थना के किन उत्तरों को पहले ही देख चुके हैं?
- 3:5 इस अध्ययन के कारण आप क्या बदलाव लायेंगे?

## विषय-संबंधि बाइबल अध्ययन का उदाहरण

### स्थापित करने हेतु:

### आराधना

#### परिचय

- परमेश्वर हमारी आराधना का कारण है।
- वह हमारा सृष्टिकर्ता है, और वह हमें उसके साथ संबंध रखने के लिये बुलाता है।
- हम उसके अपने प्रेम को, व्यक्तिगत मनन के समय में या कलीसिया की आराधना सभा में व्यक्त कर सकते हैं।
- हम अपने गीतों, प्रार्थनाओं, वचन के प्रचार, भेंट देने और सेवा के द्वारा उसकी आराधना करते हैं।
- हमारा रवैया, प्रेम और सत्य पर आधारित, उच्च गुणवत्ता का होना चाहिए।

#### 1. चिंतन के लिये प्रश्न

- 1.1 आपकी स्थानिय कलीसिया में आराधना किस प्रकार से होती है? और आपके व्यक्तिगत मनन के समय में?
- 1.2 क्या आप ऐसे लोगों को जानते हैं जिन्होंने आराधना सभा को त्याग दिया है - ऐसे लोगों को जो अब साप्ताहिक आराधना सभा में नहीं आते? क्यों?
- 1.3 क्या आप ऐसे लोगों को जानते हैं जो विश्वासयोग्यता के साथ आराधना सभा में आते रहते हैं? वे इतनी विश्वासयोग्यता के साथ क्यों आते रहते हैं?

## 2. विश्लेषण प्रश्न

### प्रश्न क्र. 1 आराधना क्या है?

नहे. 8:1-12

भजन. 95:3-7

भजन. 138

भजन 150 (भजन 147:1)

व्यवस्था 26 (1 इति. 16:29)

प्रेरित. 4:32-35

प्रेरित 6:1-7

1 कुरि. 11:23-29

कुलु. 2:10-12

परमेश्वर का वचन पढ़ना

उत्सव मनाना

गीत गाना, धन्यवाद देना

स्तुति

दान देना

पश्चात्ताप बताना

प्रार्थना, सेवा

प्रभु-भोज

बपतिस्मा

### इस में क्या बाधाएं होती हैं?

व्यवस्था 11:16 (प्रेरित 17:29)

मूर्तिपूजा

### प्रश्न क्र. 2. कौन आराधना करता है?

भजन 27:4

मैं

मीका 4:2

जातियां

प्रका. 4:10 (प्रका. 11:16)

24 प्राचीन

प्रका. 17:71

स्वर्गदूत

### हम किसकी आराधना करते हैं?

मत्ती 2:11 (मत्ती 14:33)

यीशु की

मत्ती 4:10

परमेश्वर की

### प्रश्न क्र. 3. हम कैसे आराधना करते हैं?

लैव्य. 10:1-3

पवित्रता से

भजन. 95:6

घुटने टेककर

भजन. 84:1-2

आहें भरकर

## स्कूल ऑफ इवेन्जलिज़म

भजन. 89:7	भय पूर्वक
भजन. 95:6	नम्रतापूर्वक
सभो. 5:1	सावधानी से
हब. 2:20	शान्त रहकर खामोशी में
यूह. 4:20-24	आत्मा और सच्चाई में

### प्रश्न क्र. 4. हमें आराधना क्यों करनी चाहिए?

भजन 84:5	प्रसन्न रहने के लिये
भजन 95:7	क्योंकि हम उसके लोग हैं

### प्रश्न क्र. 5. हम कहाँ आराधना करते हैं?

व्यवस्था. 12:5	उसके चुने हुए स्थान में
लुका. 2:37 (लूका 4:16)	मन्दिर में
यूहन्ना 4:21	कहीं भी

### प्रश्न क्र. 6. हमें आराधना कब करनी चाहिए?

इफि. 5:18-20	सभी समय
इब्रानियों 13:15	निरन्तर
भजन 146:1-2	जब तक हम जीवित हैं

## 3. लागूकरण प्रश्न

- 3.1 इस अध्ययन के दौरान परमेश्वर ने आपसे क्या बात की है?
- 3.2 कलीसिया और मनन के समय की प्रार्थना के संबंध में आप क्या परिवर्तन करना चाहेंगे?
- 3.3 आराधना सभा में भाग लेने के लिए आप दूसरों को कैसे प्रोत्साहित करेंगे?

# विषय-संबंधि बाइबल अध्ययन का एक उदाहरण

## स्थापित करने हेतु

### सहभागिता

#### परिचय

- हमारी सहभागिता परमेश्वर के साथ, उसके पुत्र के साथ और कलीसिया धर्मी जनों के साथ है।
- मसीह हमारी सहभागिता का सच्चा स्रोत है और इसे हम उसकी कलीसिया के अन्य सदस्यों के साथ होने पर दिखाते हैं।
- हम मिलकर मसीह की देह हैं, प्रत्येक को आत्मिक वरदान और सेवकाई मिली हुई है।
- यह दायित्व हमारा है कि हम इस देह में हमारा क्या स्थान है इसका पता लगायें और मसीह की देह की सेवा में अपने दानों का उपयोग करें।

#### चिन्तन के लिये प्रश्न:

- 1.1 यदि हम एक गर्म कोयले को आग से अलग करेंगे तो उसका क्या होगा?
- 1.2 जब देह के एक अंग को चोट पहुंचती है तो इसका दूसरे अंगों पर क्या प्रभाव पड़ता है?
- 1.3 आपकी कलीसिया अपने सदस्यों के लिए क्या कर रही है?

## 2. विश्लेषण प्रश्न:

### प्रश्न क्र. 1. सहभागिता क्या है?

रोमि 12:5-8; (1 कुरि. 12:4-31) देह  
1 पत. 3:8-9 एकता

### इसके भिन्न पहलू क्या हैं?

1 कुरि. 16:1-3 आपस में बांटना  
2 कुरि. 1:1-4 एक दूसरे को शांति देना  
गला. 6:6 सिखाना

### कुछ बाधाएं क्या हैं?

1 कुरि. 1:10-13 विभाजन  
इब्रा. 10:24-25 त्याग देना  
याकू. 2:1-4 पक्षपात करना

### प्रश्न क्र. 2. किन्हें सहभागिता करनी चाहिए?

यूह. 15:5 जो मसीह से जुड़े हैं उन्हें  
1 कुरि. 1:9 जो संगति में बुलाये गये हैं उन्हें  
यूह. 17:20 विश्वासियों को

### प्रश्न क्र. 3. हमें कैसे सहभागिता करनी है?

मत्ती 18:20 मसीह के नाम में  
प्रेरित. 2:44-47 एक साथ मिलकर  
प्रेरित. 4:32-35 एक मन से  
रोमि. 15:25-27 निर्धनों की सहायता करते हुये  
1 कुरि. 13:1-8 प्रेम से  
फिलि. 2:1-8 एकता से  
1 यूह. 1:7 ज्योति में चलते हुये



**प्रश्न क्र. 4. हम सहभागिता क्यों करते हैं?**

यूह. 17:21

एकता के लिए

प्रेरित. 2:47

उद्धार के लिए

**प्रश्न क्र. 5. सहभागिता कहाँ करते हैं?**

मत्ती 18:20

जहां 2 या 3 कट्ठा होते हैं

प्रेरित. 2:46

मन्दिर या घर में

**प्रश्न क्र. 6. हम सहभागिता कब करते हैं?**

लूका 24:32

जब पवित्रशास्त्र समझाया जाता है

प्रेरित. 2:46

प्रतिदिन

**3. लागूकरण प्रश्न**

- 3.1 इस अध्ययन में परमेश्वर ने आपसे कैसे बता की है?
- 3.2 आपके कुछ आत्मिक वरदान कौन से हैं?
- 3.3 आप सेवकाई के लिए अपने किन वरदानों का उपयोग करते हैं?
- 3.4 मसीह की देह में एकता को प्रोत्साहित करने के लिए आप क्या कर सकते हैं?
- 3.5 इस अध्ययन से आप क्या बदलाव लायेंगे?

## विषय-संबंधि बाइबल अध्ययन

### स्थापित करने हेतु

### गवाही देना

#### परिचय

- प्रथम मसीही लोग यीशु मसीह की वास्तविकता के सक्रिय गवाह थे।
- उन्होंने महान आदेश को गंभीरता से लिया था, और मसीह ने उन्हें उनके मिशन को पूरा करने की सामर्थ दी।
- पवित्र आत्मा भी हमें गवाही देने की योग्यता और सामर्थ देता है, और वह उनके हृदयों को छूता है जिनसे हम बात करते हैं।
- हम यह घोषित करते हैं कि यीशु परमेश्वर-मनुष्य है जिसने हमारे पापों को क्षमा करने और हमें अनन्त जीवन देने के लिए हमारे कारण स्वयं का बलिदान किया।
- वही मसीह हमें बचाने वाला विश्वास करने के लिए बुलाता है।
- इस प्रकार, एक गवाह का जीवन पूर्णकालिक वचनबद्धता है।
- हमें अपने पापों से पश्चात्ताप करना, अपने विश्वास में बढ़ना, अपने संदेश के संबंध में सुनिश्चित होना है और उनके लिए प्रार्थना करना है जिन्हें हमें यीशु के बारे में बताना है।

#### 1. चिंतन के लिये प्रश्न

- 1.1 आप उस व्यक्ति के बारे में क्या सोचेंगे जो कुछ न करते हुये उस

एक अंधे व्यक्ति को देखता रहा जो अपना मार्ग भटकर ऊंची चट्टान की ओर चलता गया और फिर चट्टान से खाई में गिरकर मर गया?

- 1.2 क्या एक शिकारी घर में रहकर शिकार करता है? क्या एक मछुवारा घर पर रहकर मछली के उसके पास आने की प्रतीक्षा करता है? एक गवाह जिसे मसीह के लिए आत्माओं को जितना है वह कहाँ जाता है?
- 1.3 एक न्यायी, एक वकील और एक गवाह में क्या अन्तर है?
- 1.4 अपनी व्यक्तिगत गवाही को देने की आपकी सर्वोत्तम स्मृति कौन सी है?

## 2. विश्लेषण प्रश्न

### प्रश्न क्र. 1. गवाही क्या है?

मत्ती 16:13-17

मर. 5:19

यूह. 3:5-8

यूह. 4:5-29

प्रेरित. 4:20

प्रेरित. 17:16-34

2 कुरि. 3:2-3

1 थिस्स 1:8

यीशु के बारे में बोलना

वह सब जो परमेश्वर करता है बताना

नये जन्म का संदेश

जीवन के जल का संदेश

जो देखा और सुना है

मन्दिर में किया जाने वाला संवाद

हृदय में यीशु का पत्र

वजन की गूँज

### इसके क्या-क्या पहलू हैं?

निर्ग. 34:7

यूह. 3:16

प्रेरित 16:31

रोमि. 6:23

2 कुरि. 5:18-21

इफि. 2:8-9

परमेश्वर पाप को दण्डित करता है

परमेश्वर ने स्वयं बलिदान दिया है

जो विश्वास करता है वह उद्धार पाता है

सब ने पाप किया है

यीशु ने हमारा परमेश्वर से मेल कराया है

अनुग्रह ही से हमारा उद्धार हुआ है

## इसमें क्या बाधाएं हैं?

मत्ती 16:7-8

विश्वास की कमी

## प्रश्न क्र. 2. कौन गवाही देता है?

प्रेरित. 1:8

यीशु के शिष्य

प्रेरित. 8:4-8

साधारण मसीही

## प्रश्न क्र. 3. हम गवाही कैसे देते हैं?

मत्ती 28:18-20

जाकर, बपतिस्मा देकर, प्रचार करके

प्रेरित. 1:8

पवित्र आत्मा हम पर आता है

प्रेरित. 4:31

आत्मा से भरपूर होकर

इफि. 4:20-24

धर्मिकता और पवित्रता के साथ

1 पत. 2:11-12

सांसारिक अभिलाषाओं से दूर रहकर

1 पत. 3:15

नम्रता और आदर सहित

## प्रश्न क्र. 4. हम गवाही क्यों देते हैं?

मत्ती 5:16

परमेश्वर को महिमा देने के लिए

मत्ती 11:27-30

पिता को प्रगट करने के लिए

यूह. 15:16

सदा बना रहने वाला फल लाने के लिए

कुलु. 2:13-14

पुनरुत्थित होने के लिए

## प्रश्न क्र. 5. हम गवाही कहां देते हैं?

मत्ती 28:19-20

सभी जातियों में

मर. 16:15

संपूर्ण जगत में

प्रेरित. 1:8

पृथ्वी की छोर तक

## प्रश्न क्र. 6. हम गवाही कब देते हैं?

1 पत. 3:15

हमेशा

## 3. लागूकरण प्रश्न

3.1 इस अध्ययन के दौरान परमेश्वर ने आप से क्या बातचीत की है?

- 3.2 आप गवाही देने के लिये औरों को कैसे प्रोत्साहित करेंगे?
- 3.3 इस अध्ययन से आप क्या बदलाव लायेंगे?

## विषय-संबंधि बाइबल अध्ययन का उदाहरण

### सुसज्जित करने हेतु

### याजकीय ले-मैन ( जो पादरी नहीं है )

#### परिचय

- सभी विश्वासी ले-मैन हैं, क्योंकि ले-मैन शब्द जिस यूनानी मूल शब्द से आया है वह “लाओस” है जिसका संकेत उन सब की ओर होता है जो परमेश्वर के लोग हैं। इस अर्थ के अनुसार, शिष्य बनाने का उत्तरदायित्व सभी विश्वसियों का है।
- आज हमारे विचारों में पादरी और ले-मैन (अयाजक साधारण सदस्य) के बीच जो मौलिक अन्तर माना जाता है वह बाइबल आधारित नहीं है। यह गलत विचारधारा दूसरी शताब्दी और उसके बाद के दिनों में विकसित होती गई।
- अयाजक साधारण सदस्य और पादरी वर्ग में पृथक्ता का भ्रम उस समय और अधिक स्पष्ट हुआ जब कौस्टेनटाइन ने (चौथी शताब्दी में) रोमी साम्राज्य के सभी अन्यजातिय लोगों को परमेश्वर के लोग घोषित कर दिया।
- कलीसिया का प्रत्येक सदस्य एक याजक या परमेश्वर का वारिस है, जबकि कलीसिया में हर एक जन अगुवा नहीं है।
- व्यावसायिक पादरी वर्ग की स्थापना का कलीसिया पर प्रबल नकारात्मक प्रभाव पड़ा।

- इस तरह की भूमिकाओं की संरचना ने सभी विश्वासियों के याजक होने की हमारी समझ को भ्रमित किया है और नकारात्मक प्रभाव करते हुये हमारे भीतर इस बात के स्मरण को समाप्त कर दिया कि सेवकाई के प्रति हमारा भी उत्तरदायित्व है।
- अधिकांश मसीही लोग, कलीसिया के कार्य के लिए दूसरों को भुगतान करके संतुष्ट रहते हैं। वे गलत रीति से यह मान लेते हैं कि कलीसिया में रविवार की आराधना में सम्मिलित होने के अलावा उन पर परमेश्वर के राज्य के लिये कुछ कार्य करने का कोई दायित्व नहीं है।

## 1. चिन्तन के लिये प्रश्न

- 1.1 लोगों के विचार से पादरी या याजकजन कौन है? अयाजकजन या ले-मैन कौन है? क्या ये धारणाएं बाइबल आधारित है?
- 1.2 आपकी कलीसिया में सब से अधिक कार्य कौन करता है? अगुवे या मण्डली? क्या यह बाइबल आधारित है?
- 1.3. आपके विचार से, एक स्वस्थ कलीसिया के चिन्ह क्या हैं?

## 2. विश्लेषण प्रश्न:

### प्रश्न क्र. 1. मीरास क्या है?

- प्रेरित. 26:18 (वे) उन लोगों के साथ जो मुझ (मसीह) पर विश्वास करने से पवित्र किए गए हैं, मीरास पाएं।
- तीतुस 3:6-7 (मसीह ने) हमारा उद्धार किया जिससे हम अनन्त जीवन की आशा के अनुसार वारिस बनें।
- इब्रानियों 9:15 बुलाए हुए लोग प्रतिज्ञा के अनुसार अनन्त मीरास को प्राप्त करें।
- याकूब 2:5 क्या परमेश्वर ने इस जगत के कंगालों को नहीं चुना कि उस राज्य के अधिकारी हों, जिसकी प्रतिज्ञा उसने उनसे की है?

## प्रश्न क्र. 2. कौन वारिस ( नहीं ) है?

- प्रेरित. 8:21 इस बात में न तेरा हिस्सा है, न भाग, क्योंकि तेरा मन परमेश्वर के आगे सीधा नहीं।
- प्रेरित. 20:32 (परमेश्वर तुम्हें) सब पवित्र किये लोगों में साझी करके मीरास दे सकता है।
- रोमियों 8:16-17 (हम) यदि सन्तान हैं तो वारिस भी, वरन परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं
- गलातियों 3:18 परमेश्वर ने मीरास अब्राहम को प्रतिज्ञा के द्वारा दे दी है।
- गलातियों 3:29 यदि तुम मसीह के हो, तो प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो।
- गलातियों 4:1,7 और जब तू पुत्र हुआ तो परमेश्वर के द्वारा वारिस भी हुआ।

## प्रश्न क्र. 3. हम इसे कैसे ग्रहण करते हैं?

- रोमियों 4:13-14 धार्मिकता के द्वारा जो विश्वास से आती है जगत का वारिस है।
- इफिसियों 1:11 उसी (मसीह) में, हम वारिस भी बनाए गए।
- इब्रानियों 11:7 विश्वास से, नूह धार्मिकता का वारिस बना जो विश्वास से आती है।
- 1 पतरस 5:3 जो लोग तुम्हें सौंपे गए हैं उन पर अधिकार न जताओ।

## प्रश्न क्र. 4. हम इसे क्यों ग्रहण करते हैं?

- कुलुस्सियों 1:12 परमेश्वर ने तुम्हें इस योग्य बनाया कि साथ मीरास में सहभागी हों।
- इब्रानियों 6:17 परमेश्वर ने प्रतिज्ञा के वारिसों पर अपना उद्देश्य स्पष्ट करना चाहा।
- कुलुस्सियों 3:24 तुम जानते हो कि तुम्हें प्रभु से मीरास मिलेगी।



**प्रश्न क्र. 5. यह कहाँ है?**

1 पतरस 1:4

एक अविनाशी और निर्मल और अजर मीरास जो तुम्हारे और लिये स्वर्ग में रखी है।

**प्रश्न क्र. 6. हम इसे कब ग्रहण करते हैं?**

इब्रानियों 11:8

जब आपको अपने पुराने जीवन को छोड़ने के लिए बुलाया जाता है, और आप अब्राहम के समान आज्ञा पालन करते हैं।

**3. लागूकरण प्रश्न**

- 3.1 1 पतरस 2:9-10 पढ़ें। क्या आप राजपदधारी याजकों के समाज का भाग हैं? याजक के रूप में आपको क्या करना है?
- 3.2 आप इस बारे में क्या सहायता कर सकते हैं कि कलीसिया में जो मात्र दर्शक हैं उन्हें कलीसिया में काम करने वाले बनाये?
- 3.3 परमेश्वर ने इस अध्ययन में आपको जो दिखाया है उसके कारण आप अपने जीवन में क्या परिवर्तन लाएंगे?

# व्याख्यात्मक बाइबल अध्ययन का उदाहरण

## सुसज्जित करने हेतु

### भेंट चढ़ाना

#### परिचय:

- मूलपाठ व्यवस्थाविवरण 26 है जिसके साथ और अन्य हवालों को भी लिया है। मुख्य मूल-विषय भेंट चढ़ाना है।
- हमे बहुत से संसाधन दिये गये हैं: जीवन, समय, धन, सपत्ति, परिवार
- जब हम यह विश्वास करते हैं कि हमारे संसाधन मात्र हमारे लिये ही हैं, तब हम परमेश्वर के कार्य को सीमित कर देते हैं।
- वास्तव में, सब कुछ परमेश्वर का है, और उसने हमें जो दिया है उसके मात्र भण्डारी या प्रबंधक हैं।

#### 1. चिंतन के लिये प्रश्न

- 1.1 क्या आप ऐसे लोगों को जानते हैं जो परमेश्वर को अत्याधिक देते हैं? उनका जीवन किस प्रकार का है?
- 1.2 क्या आप ऐसे लोगों को जानते हैं जो परमेश्वर का बहुत कुछ नहीं देते हैं? उनका जीवन किस प्रकार का है?
- 1.3 आप इन दोनों में से किसके समान हैं? आप किसके समान होना चाहेंगे?

## 2. विश्लेषण प्रश्न ( व्यवस्थाविवरण 26 )

### प्रश्न क्र. 1. भेंट कौन देता है?

आप	26:1
परिवार के मुखिया	नहीं. 7:70
कलीसियाएं	प्रेरितों 8:1
शिष्य	प्रेरितों 11:29

### भेंट कब दी जाती है?

मीरास के दिन	26:1
भेंट, आशीष मांगे	26:15
सप्ताह के पहले दिन	1 कुरि. 16:2
परीक्षाओं के मध्य में	2 कुरि. 8:2-3

### प्रश्न क्र. 2. भेंट में क्या दिया जाता है?

परमेश्वर आपको जो देता है उसका पहला फल	26:2, 10
दशमांश	26:12, उत्प. 14:20
	मला. 3:7-10
आपकी संतान	उत्प. 22:9
सब प्रकार की वस्तुएं	निर्ग. 35:22
आवश्यकता से अधिक	निर्ग. 36:6
आप जिस पर निर्भर करते हैं उसमें से	लैव्य. 21:4; मर. 12:44
उपहार	व्यवस्था 15:14
आपकी योजना से अधिक	1 इति. 29:3
टूटा हृदय	भजन. 51:19
अपनी संपत्ति में से	नीति. 3:9
अपने वस्त्र में से	यशा. 58:7
आपका घर	यशा. 58:7
अपने धन में से	मीका 4:13
जिन वस्तुओं की आपको कमी है	मर. 10:21; लूका 18:22

आपका समय	लूका 10:34-35
आपका ज्ञान	लूका 10:34-35
आपका धन	लूका 10:34-35
जो आपके भीतर है	लूका 11:41
सांसारिक वस्तुएं	लूका 12:23
आपका शरीर	रोमियों 12:1-2

**प्रश्न क्र. 3. इसे कहां दिया जाता है?**

पवित्रस्थान में	26:2
आपके देश में	व्यवस्था 15:2
परमेश्वर के भण्डार में	मलाकी 3:10
मार्ग पर	लूका 10:10, 34-35

**प्रश्न क्र. 4. इसे कैसे दिया जाता है?**

पूर्व तैयारी के साथ	26:2
आनन्द के साथ	26:11; 2कुरि. 9:7
अनुशासन के साथ	26:13
ईमानदारी के साथ	26:14; मला 1:6-14
अपने साधन के अनुसार	16:17; प्रेरित. 11:19
गुप्त रूप से	सत 2:15
बिना पूर्व तैयारी के	यशा. 1:6
सच्चाई से	निर्ग. 25:2; निर्ग. 35:5
स्वेच्छा की आत्मा से	निर्ग. 35:5; 2 कुरि. 8:12
समझदारी से	मत्ती 6:1-4
स्वतंत्रता पूर्वक	मत्ती 10:4
सामान्य उद्देश्य से	प्रेरित. 4:34-35
ईमानदारी से	रोमि. 12:8
प्रेम से	1 कुरि. 13:3
उदारता से	इब्रा. 13:16; 1 तीमु. 6:18

**प्रश्न क्र. 5. इसे किसे दिया जाता है?**

याजक को	26:3
परमेश्वर को	26:4, 10
परदेशी को	26:12
अपने शत्रु को	नीति. 25:21
उन्हें जो मांगते हैं	मत्ती 5:42
उसे जिसे आवश्यकता है	लूका 10:34-35
निर्बल को	प्रेरित 20:35
धर्मी लोगों को	रोमि. 12:13; गला. 6:10
परमेश्वर के सेवकों को	फिलि. 4:16

**प्रश्न क्र. 6. इसे क्यों दिया जाता है?**

उसके छुटकारे के कारण	26:3, 7-8
उसकी आज्ञा के कारण	26:16; लूका 6:38
उसके साथ बांधी गई वाचा के कारण	26:17-19
पश्चात्ताप के रूप में	लूका 19:8
कलीसिया में भोजन के लिये	मला. 3:10
ताकि दूसरे देने के लिये प्रोत्साहित हों	लूका 6:38
भाइयों, बहनों के लिए	प्रेरित 2:45

**3. लागूकरण प्रश्न**

- 3.1 इस अध्ययन के दौरान परमेश्वर ने आपसे कैसे बात की है?
- 3.2 आप दूसरों को भेंट देने के लिए कैसे प्रोत्साहित कर सकते हैं जो कि उन्हें करना चाहिए?
- 3.3 इस अध्ययन के कारण आप क्या बदलाव लाएंगे?

# सुसज्जित करने हेतु बाइबल अध्ययन एक उदाहरण ( बाइबल की संपूर्ण पुस्तक से ) नेहम्याह, एक बाइबलीय कूटनीतिज्ञ

मुख्य पद: नेहम्याह 2:20 - “स्वर्ग का परमेश्वर हमारा काम सफल करेगा, इसलिये हम उसके पास कदर बांधकर बनाएंगे।”

- |   |   |
|---|---|
| 1. प्रकाशन                              | खोज                                       |
| 1.1 अन्वेषण (नेहे. 1:2)                 | “मैंने उससे पूछा।”                        |
| 1.2 उदासी (नेहे. 1:4)                   | “मैं बैठकर रोने लगा।”                     |
| 1.3 प्रार्थना (नेहे. 1:5-11)            | “मैंने विलाप उपवास और प्रार्थना की।”      |
| 2. संगठन                                | तैयारी                                    |
| 2.1 मुलाकात (नेहे. 2:1-2)               | “मैंने दाखमधु उठाकर राजा को दिया”         |
| 2.2 प्रस्ताव (नेहे. 2:3-5)              | “मुझे यहूदा के नगर को भेजा”               |
| 2.3 समय-सारणी (नेहे. 2:6)               | “मैंने समय नियुक्त किया।”                 |
| 2.4 सावधानियाँ (नेहे. 2:7-10)           | “मुझे चिट्ठियाँ दी जाएँ...”               |
| 2.5 निरीक्षण (नेहे. 2:11-16)            | “शहरपनाह को देखता हुआ”                    |
| 2.6 भरती करना (नेहे. 2:17-18)           | “आओ, हम यरूशलेम की शहरपनाह को बनाये”      |
| 2.7 विश्वास (नेहे. 2:20)                | “स्वर्ग का परमेश्वर हमारा काम सफल करेगा।” |
| 3. कार्यकलाप                            | लागू करना (अमल)                           |
| 3.1 संघटन (आंशिक) (नेहे. 3:5)           | “उनके रइसों ने कार्य नहीं किया।”          |
| 3.2 कार्य निर्धारण (नेहे. 3:2-12,16-31) | “उससे आगे ..... इसके बाद”                 |

#### 4. विरोध

- 4.1 नकारात्मक प्रतिक्रिया (2:10)  
 4.2 ठट्ठा (नहे. 2:19)  
 4.3 शंका (नहे. 2:19)  
 4.4 क्रोध (नहे. 4:1,7)  
 4.5 षडयंत्र (नहे. 4:8)  
 4.6 बचाव (नहे. 4:16-17)  
 4.7 धोखा (नहे. 6:2)  
 4.8 झूठे आरोप (नहे. 6:6)  
 4.9 धमकियां (नहे. 6:10)

#### यहूदी, अम्मोमी, अरब

( सम्बल्लत, तोबिय्याह, गोशेम, अश्वदोदी )

- “उन दोनों को बहुत बुरा लगा।”  
 “हमें ठठ्ठों में उठाने लगे...”  
 “क्या तुम राज्य के विरुद्ध बलवा करोगे?”  
 “उसने बुरा माना...”  
 “समों ने एक मन से गोष्ठी की...”  
 “आधे बर्छियों को धारण किये रहते थे”  
 “आ, हम... एक दूसरे से भेंट करें।”  
 “कि तुम्हारी मनसा बलवा करने की है..”  
 “वे लोग तुझे घात करने आएंगे...”

#### 5. वापसी

- 5.1 शिकायतें (नहे.5:1)  
 5.2 अन्याय (नहे. 5:7)  
 5.3 त्याग (नहे. 5:14,18)  
 5.4 सहयोग (नहे. 5:16)  
 5.5 दर्शन (नहे. 5:19)

#### प्रोत्साहन

- “लोग और उनकी स्त्रियों की ओर से बड़ी चिल्लाहट मची।”  
 “तुम अपने अपने भाई से ब्याज लेते हो।”  
 “अधिपति के हक का भोजन नहीं खाया”  
 “मैं शहरपनाह के काम में लिपटा रहा।”  
 “जो कुछ मैंने इस प्रजा के लिए किया है”

#### 6. अंतिम परिणाम

- 6.1 सफलता (नहे. 6:15)  
 6.2 आत्मविश्वास (6:16, 11:2)  
 6.3 छोटा आरंभ (नहे. 7:4)  
 6.4 आंकड़े (नहे. 7:5; 66-73; 10:1-27)  
 6.5 जागृति (नहे. 8:11)  
 6.5.1 ध्यान (नहे. 8:2-3)  
 6.5.2 श्रद्धा (नहे. 8:6)  
 6.5.3 अभाव (नहे. 8:9)  
 6.5.4 उत्सव (नहे. 8:10)  
 6.5.5 घोषणा (नहे. 5:15)  
 6.5.6 क्रमानुसार (नहे. 8:18)  
 6.5.7 मण्डली (नहे. 8:18)

#### समाचार

- “बावन दिन के भीतर शहर पनाह बन गई।”  
 “जिन्होंने अपनी ही इच्छा से यरूशलेम में वास करना चाहा।”  
 “घर नहीं बने थे।”  
 “वंशावली के अनुसार गिने जाएं...”  
 “सब लोगों ने एक मन होकर, इकट्ठे होकर”  
 पवित्रशास्त्र का प्रथम अध्ययन  
 सामूहिक आराधना  
 पश्चात्ताप  
 आनन्द  
 सार्वजनिक रूप से प्रकाशित करना  
 नियमित अध्ययन  
 महासभा

## स्कूल ऑफ़ इवेन्जलिज़्म

- 6.5.8 अलगाव (नहे. 9:2) अलग करना
- 6.5.9 अंगीकार (नहे. 9:2-37) पाप स्वीकार करना
- 6.5.10 संकल्प (नहे. 10:28-39) भेंट लेना

## 7. सिद्धकरण

7.1 धर्मत्यागी (नहे 13:4-5)

7.2 वापसी आगमन (नहे 13:6-7)

7.3 खोज (नहे. 13:7)

7.4 पुनर्गठन (नहे. 13:8-10)

7.5 सुधार (नहे. 13:12-13)

## मूल्यांकन

“एल्याशीब तो किय्याह का संबंधी था।”

“छुट्टी मांगी और मैं यरूशलेम को आया...”

“तोबियाह के लिए परमेश्वर के भवन के आंगनों में एक कोठरी तैयार कर...”

“मेरी आज्ञा से वे कोठरिया शुद्ध की गई...”

“मैंने . . . नियुक्त किया है”



## विषय-संबंधि/स्थापना करने वाला बाइबल अध्ययन

### 52 बाइबल विषय<sup>8</sup>

#### प्रस्तावना:

अगले पृष्ठ से दिये गये बाइबल अध्ययनों का उद्देश्य यह है कि प्रत्येक विषय पर छह प्रश्नों की सहायता से जानकारी दे ताकि जो कोई इन दिए गए हवालों को पढ़े वह बाइबल शिक्षा से संबंधित अपनी समझ को विस्तृत कर सके। प्रत्येक विषय का अतिरिक्त अध्ययन निश्चय ही आपके ईश्वर संबंधित ज्ञान में अधिकाधिक वृद्धि ले आयेगा। प्रस्तुत बाइबल अध्ययन सामग्री विभिन्न प्रकार से उपयोगी ठहर सकती है:

- बाइबल अध्ययन करने वाले छोटे समूहों में
- व्यक्तिगत या पारिवारिक बाइबल अध्ययन में,
- सन्डे स्कूल, महिला सभा और युवक संघ में,

सप्ताह	1ला दिन	2रा दिन	3रा दिन	4था दिन	5वां दिन	6वां दिन
विषय	क्या?	कौन?	क्यों?	कैसे?	कहाँ?	कब?
1. वचन	व्यव. 8:3	2 पत्. 1:20-21	भज. 119:11	1 पत्. 1:22	व्यव. 6:6	यहो. 1:8
2. प्रार्थना	मत्ती 6:9-13	2 इति. 7:14	मत्ती 7:7-11	मत्ती 6:7	मत्ती. 6:6	1 थिस्स. 5:17
3. आराधना	भजन. 138	भजन. 27:4	भजन. 95:7	यूह. 4:20-24	व्यव. 10:12	इफि. 5:18-19
4. सहभागिता	1 पत्. 3:8-9	1 कुरि. 1:9	यूह. 17:21	प्रेरित. 4:32-35	प्रेरित. 2:46	प्रेरित. 2:46
5. गवाही	प्रेरित. 4:20	प्रेरित. 1:8	यूह. 15:16	इफि. 4:20-24	प्रेरित. 1:8	1 पत्. 3:15
6. अनुग्रह	1 तीमु. 1:13-14	1 पत्. 5:5	रोमि. 3:24	इफि. 2:8	इब्रा. 4:16	रोमि. 11:5
7. पाप	रोमि. 14:23	रोमि. 3:23	उत्प. 3:5-6	यशा. 53:6	लूका 6:44	अय्यू. 24:16
8. परमेश्वर	उत्प. 1:1-27	1 यूह. 4:7-8	उत्प. 1:31	हबक्कूक 1:13	यूह. 4:21	उत्प. 1:1
9. मसीह	तीतुस 3:5	रोमि. 9:5	1 यूह. 4:14	यूह. 1:1-14	यूह. 14:20	2 कुरि. 5:17
10. विश्वास	इब्रा. 11:1	प्रेरित. 16:31	रोमि. 5:1	रोमि. 10:9-10	1 शम्. 16:7	रोमि. 3:36
11. प्रतिज्ञाएं	2 कुरि. 1:20	2 पत्. 1:4	रोमि. 4:21	1 राजा 8:56	यशा. 34:16	तीतु. 1:2
12. आशीर्ष	यहो. 8:34	नीति. 10:6	मत्ती 5:3-11	भजन. 2:12	यहेज. 34:26	रोमि. 12:14
13. आश्वासन	यूह. 5:24	इब्रा. 10:23	यूह. 3:21	रोमि. 8:1	1 यूह. 3:19	लूका. 19:9

सप्ताह	विषय	1ला दिन	2रा दिन	3रा दिन	4था दिन	5वां दिन	6वां दिन
		क्या?	कौन?	क्यों?	कैसे?	कहाँ?	कब?
14.	उद्धार	रोमि. 6:23 उत्प. 15:6	रोमि. 10:13 रोमि. 3:22	इफि. 2:8-9 रोमि. 5:8	यूह. 3:5-8 रोमि. 3:22	सप. 3:17 रोमि. 3:26	2 कुरि. 6:2 कुलु. 2:14
15.	धर्मी ठहराना	2 कुरि. 5:17	1 यूह. 5:1	2 कुरि. 4:11	तीतुस 3:5	यहेज. 36:26	1 यूह. 5:1
16.	पुनर्जावन	रोमि. 8:15-17	गला. 3:26	इफि. 1:4-7	1 यूह. 3:1-2	गला. 4:5-6	यूह. 1:12
17.	लेपालकपन	1 कुरि. 6:19	उत्प. 28:15	प्रेरित. 17:28	प्रेरित. 18:10	मत्ती. 18:20	ब्यब. 20:1
18.	उपस्थिति	भजन. 91:4	2 इति 16:9	यूह. 17:11	भजन. 34:7	उत्प. 28:15	भजन. 121:4
19.	सुरक्षा	रोमि. 8:2	यूह. 8:36	रोमि. 8:21	याकू. 1:25	2 कुरि. 3:17	यूह. 8:30-32
20.	स्वतंत्रता	यूह. 14:26	यूह. 15:26	यूह. 15:26	लूका 11:13	1 कुरि. 3:16	प्रेरित. 2:38
21.	पवित्र आत्मा	यूह. 10:25	यूह. 11:47	इब्रा. 2:4	यूह. 3:2	प्रेरित. 2:22	यूह. 9:4
22.	चमत्कार	याकूब 1:17	1 कुरि. 12:11	इफि. 4:11-12	2 तीमु. 1:6	इफि. 4:8	1 कुरि. 12:31
23.	वरदान	अय्यू. 42:2	भजन. 115:3	2 इति. 25:8	मत्ती. 19:26	रोमि. 16:25	यशा. 43:13
24.	सर्वशक्तिमान	भजन. 147:5	याकू. 1:5	रोमि. 11:36	इब्रा. 4:13	कुलु. 2:2-3	प्रका. 22:13
25.	सर्वव्यापी	इफि. 1:19	प्रेरित. 17:24	2 इति. 20:6	दानि. 4:35	ब्यब. 4:39	मत्ती 6:13

सप्ताह	1ला दिन	2रा दिन	3रा दिन	4था दिन	5वां दिन	6वां दिन
विषय	क्या?	कौन?	क्यों?	कैसे?	कहाँ?	कब?
27. जन्म	यूह. 1:13	1 पत. 1:23	यूह. 3:3	1 यूह. 5:1	2 कुरिं. 3:3	2 कुरिं. 5:17
28. मृत्यु	नीति. 21:16	यूह. 6:53	इफि. 2:1	यावू. 1:15	प्रका. 21:8	उत्प. 2:17
29. पुनरुत्थान	लूका 20:36	यूह. 11:25	1 कुरिं. 15:14	यूह. 5:25	इफि. 5:14	1 कुरिं. 15:52
30. वापसी	मत्ती. 26:64	इब्रा. 9:28	यूह. 14:3	प्रेरित. 1:11	1 थिस्स. 4:16	मत्ती 24:36
31. दण्ड	रोमि. 14:10	रोमि. 2:16	2 कुरिं. 5:10	प्रका. 21:27	प्रका. 20:15	प्रका. 20:11-22
32. न्याय	रोमि. 2:2	भजन. 145:17	प्रका. 15:4	व्यव. 32:4	भजन. 97:2	सप. 3:5
33. परीक्षाएं	मला. 3:3	भजन. 17:3	लूका 6:48	1 कुरिं. 3:13	व्यव. 8:2	यावू. 5:7
34. धर्मत्याग	इब्रा. 3:12	1 यूह. 2:19	मर. 4:17	2 तीमु. 4:10	प्रेरित. 7:39	1 तीमु. 4:1
35. प्रतिफल	1 कुरिं. 3:8	इब्रा. 11:6	2 कुरिं. 9:6	कुलु. 3:24	मत्ती. 5:12	मत्ती 16:27
36. स्वर्गद्वार	मत्ती 13:39	मत्ती 13:39	भजन. 103:20	भजन. 91:11	मत्ती 18:10	मत्ती. 25:31
37. स्वर्ग	प्रेरित. 7:49	मत्ती. 13:43	यूह. 14:2	फिलि. 3:20	भजन. 103:11	लूका. 23:43
38. नर्क	मत्ती 25:46	प्रका. 20:15	मत्ती 25:41	मर. 9:43	मत्ती 13:42	प्रका. 20:11-15
39. कर्लीसिया	1 कुरिं. 12:27	1 कुरिं. 12:13	मत्ती. 16:18	इफि. 2:20	फिलि. 2:15	प्रेरित. 2:47

सप्ताह	विषय	1रा दिन	2रा दिन	3रा दिन	4था दिन	5वां दिन	6वां दिन
		क्या?	कौन?	क्यों?	कैसे?	कहाँ?	कब?
40.	भेंट (दान)	नीति. 3:9	प्रेरित. 11:29	मलाकी 3:10	रोमि. 12:8	मलाकी 3:10	1 कुरिं. 16:12
41.	पवित्रता	प्रका. 22:11	1 पत. 1:15-16	इब्रा. 12:14	2 कुरिं. 7:1	लूका. 1:75	लूका. 1:75
42.	सेवकाई	मर. 13:34	1 कुरिं. 15:58	यशा. 50:4	1 कुरिं. 16:15-16	2 इति. 28:15	मर. 1:18
43.	प्रेम	1 यूह. 5:3	यूह. 14:23-24	यूह. 15:12	मर. 12:30	गला. 5:22	व्यव. 30:16
44.	आनन्द	गला. 5:22	यूह. 15:11	यशा. 61:10	यूह. 16:24	भजन. 16:11	फिलि. 4:4
45.	स्तुति	प्रका. 5:11-12	प्रका. 19:5	1 पत. 2:9	इब्रा. 13:15	प्रेरित. 2:46-47	भजन. 35:28
46.	संयम	1 कुरिं. 7:31	2 तीमु. 4:5	फिलि. 4:5	सभो. 7:16-17	रोमि. 12:17	रोमि. 13:13
47.	दुःख (क्लेश)	रोमि. 8:18	इब्रा. 12:5	इब्रा. 12:10	1 पत. 4:16	अय्यू 23:10	2 कुरिं. 4:17
48.	जादू-टोना	रोमि. 1:23	मला. 3:5	निर्ग. 20:3	व्यव. 18:12	प्रका. 21:8	इब्रा. 4:7
49.	छूठ बोलना	नीति. 12:22	1 यूह. 2:22	यूह. 8:44	इफि. 4:25	प्रका. 21:8	भजन. 101:7
50.	घृणा	1 यूह. 3:15	1 यूह. 2:9	यूह. 15:18	भजन. 97:10	यूह. 19:6	उत्प. 37:4
51.	व्यभिचार	लैव्य. 18:20	1 कुरिं. 6:10	इब्रा. 13:4	1 कुरिं. 7:2	मती 15:19	मती 5:28
52.	पियकडपन	नीति. 23:29-30	1 कुरिं. 6:10	नीति. 20:1	इफि. 5:18	नीति. 23:20	रोमि. 13:13

## शिष्य के लिए आत्मिक आशीषें

परमेश्वर ने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में  
सब प्रकार की आत्मिक आशीष दी है - इफि. 1:3

1. **चुना जाना** हमें जगत की उत्पत्ति से पहले उसने चुन लिया  
- इफि. 1:4
- क. पवित्रता कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों  
- इफि. 1:4; 1 थिस्स 4:7
- ख. पूर्व निर्धारित प्रेम में पहले से ठहराया - इफि. 1:5, रोमि. 8:29
- ग. लेपालकपन यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र होने (गला.  
4:4-5) - इफि 1:5, रोमि 8:15
- घ. उसकी इच्छा अपनी इच्छा के भले अभिप्राय के अनुसार - इफि. 1:5,11;  
लूका 22:42
2. **छुटकारा** हमको उसमें उसके लहू के द्वारा छुटकारा मिला है। इफि. 1:7
3. **क्षमा** अपराधों की क्षमा उसके उस अनुग्रह के धन की अनुसार मिला  
है - इफि. 1:7
- क. दासत्व उसके भाइयों में ले कोई उसको छुड़ा सकता है - लैव्य  
25:47-49 (वचन 48)
- ख. दो स्वामी उसी के दास हो चाहे पाप के .... चाहे आज्ञाकारिता के -  
रोमि. 6:16
- ग. बुरा स्वामी सचेत होकर शैतान के फंदे से छूट जाएं - 2 तीमु. 2:26;  
2 पत. 2:19
- घ. मनुष्य की अयोग्यता उनमें से कोई अपने भाई को किसी भांति छुड़ा नहीं सकता है,  
और न परमेश्वर को उसके बदले प्रायाश्चित में कुछ दे सकता  
है - भजन. 49:7-9
- ड. यीशु में स्वतंत्रता इसलिये यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा, तो सचमुच तुम स्वतंत्र हो  
जाओगे - यूहन्ना 8:36

- 4. मीरास** उसी में जिसमें हम भी पहले से ठहराया जाकर मीरास बनें  
- इफि. 1:11
- क. धन पवित्र लोगों में उसकी मीरास की महिमा का धन कैसा है  
- इफि. 1:18
- ख. बुरे काम यदि किसी का काम जल जाएगा, तो वह हानि उठाएगा  
- 1 कुरि. 3:15; 2 यूह. 8
- ग. बुरे भण्डरी छोटे पुत्र ने कुकर्म में अपनी संपत्ति उड़ा दी - लुका 15:12-13
- 5. पवित्र आत्मा की छाप** उसी में तुम पर प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप  
लगी - इफि. 1:13
- क. स्वयंसेवी दास (तेरा दास) तुझे से कहने लगे मैं तेरे पास से न जाऊंगा  
- व्यव. 15:12-17
- ख. श्वेत पत्थर उस पत्थर पर एक नाम लिखा हुआ होगा - प्रका. 2:17
- ग. खतना उसी में तुम्हारा ऐसा खतना हुआ है - कुलु. 2:11
- 6. शक्ति ( सामर्थ )** उसकी शक्ति के प्रभाव के उस कार्य के अनुसार जो उसने  
मसीह में किया - इफि. 1:19-20
- क. पाप की घोषणा मैं तो यहोवा की आत्मा से शक्ति, न्याय, और पराक्रम पाकर  
परिपूर्ण हूँ कि .... पाप जता दूँ - मीका 3:8
- ख. उसके गवाह तुम सामर्थ पाओगे और मेरे गवाह होंगे - प्रेरित. 1:8
- ग. उसकी धार्मिकता मैं तुझे दृढ़ करूंगा और तेरी सहायता करूंगा और तुझे सम्भाले  
रहूंगा - यशा. 41:10
- घ. मेरी निर्बलता मेरी सामर्थ निर्बलता में सिद्ध होती है - 2 कुरि. 12:9-10
- 7. भले काम** मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए - इफि. 2:10
- क. मनुष्य की अयोग्यता न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे - इफि. 2:9
- ख. परमेश्वर का दान परमेश्वर का दान है - इफि. 2:8
- ग. अनर्जित उद्धार उसने हमारा उद्धार किया; और यह धर्म के कामों के कारण  
नहीं; जो हमने आप किए - तीतुस 3:5
- 8. संबंध** मसीह यीशु में तुम ... निकट लाये गये - इफि. 2:13, 3:12
- क. पहुंच उसी के द्वारा एक आत्मा में .... पिता के पास पहुंच होती है।  
- इफि. 2:18; इब्रा. 4:15

## स्कूल ऑफ़ इवेन्जलिज़्म

ख. स्वतंत्रता हमें पवित्र स्थान में प्रवेश करने का हियाव हो गया है - इब्रा. 10:19

9. रचना ( इमारत ) जिसमें सारी रचना एक साथ मिलकर - इफि. 2:21

क. परमेश्वर का मन्दिर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है - इफि. 2:21; 1 कुरि. 6:19

ख. कोने का पत्थर कोने का पत्थर मसीह यीशु स्वयं है - इफि. 2:20

ग. जीवित पत्थर तुम भी आप जीवते पत्थरों के समान आत्मिक घर बनते जाते हो - 1 पतरस 2:5

10. निवास स्थान जिसमें तुम भी परमेश्वर का निवास स्थान होने के लिए एक साथ बनते जाते हो - इफि. 2:22

क. परमेश्वर का आत्मा तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है - 1 कुरिं. 3:16

ख. परमेश्वर का निवास मैं उनमें बसूंगा - 2 कुरिं. 6:16

ग. परमेश्वर का साथ मैं उनमें चला फिरा करूंगा - 2 कुरिं. 6:16

घ. परमेश्वर की संपत्ति मैं उनका परमेश्वर हूंगा, और वे मेरे लोग होंगे - 2 कुरिं. 6:16

### निष्कर्ष:

- क्या आप परमेश्वर के मित्र और दास होने के लिए चुने गये, छुड़ाये गये, क्षमा पाये हुये और स्वतंत्र किये गये हैं?
- क्या आप अपने पापों से बचाये गये हैं, परमेश्वर की संतान की रूप में ग्रहण किये गए हैं, और उसकी मीरास में सहभागिता प्राप्त किये हैं?
- क्या आपने अपनी शक्ति से जीवन जीना छोड़कर, भले काम करने के लिए उसकी शक्ति को पाया है?
- क्या आपने, परमेश्वर के आत्मा को अपने में रहने और नियंत्रण करने का निमंत्रण देने के द्वारा, पिता तक पहुंचने का हियाव पाया है?



## आपके लघु समूह बाइबल अध्ययन की रिपोर्ट

आवश्यक है कि प्रत्येक विद्यार्थी इस सत्र के दौरान कम से कम एक बाइबल अध्ययन में अगुवाई करे। उस अध्ययन से संबंधित जानकारी विद्यार्थी निम्नलिखित प्रपत्र में भरे और उसे इस पाठ्यक्रम के शिक्षक को सौंप दे। उस पर उसके और एक गवाह के हस्ताक्षर होने चाहिये।

**बाइबल अध्ययन की रिपोर्ट के लिये प्रपत्र  
अगले 2 पृष्ठों पर दिया गया है  
आप उसकी फोटोकॉपी बना कर  
उपयोग में ला सकते हैं।**

## बाइबल अध्ययन की रिपोर्ट के लिये प्रपत्र

1. बाइबल अध्ययन अगुवे का नाम
2. गवाह का नाम
3. स्थान
4. तिथि
5. समय
6. अवधि
7. उपस्थित लोग
8. बाइबल का भाग
9. अध्ययन का शीर्षक
10. अध्ययन का मूल-विषय
11. अध्ययन का प्रकार
12. दिया गया साहित्य

13. बाइबल अध्ययन के मुख्य बिन्दु

- 1.
- 2.
- 3.
- 4.

14. अगुवे का मूल्यांकन	● कमज़ोर बिन्दु	● शक्तिशाली बिन्दु	● अन्य टिप्पणियां
15. गवाह का मूल्यांकन	● कमज़ोर बिन्दु	● शक्तिशाली बिन्दु	● अन्य टिप्पणियां
16. सहभागी की टिप्पणियां	● कमज़ोर बिन्दु	● शक्तिशाली बिन्दु	● अन्य टिप्पणियां

## अन्तिम टिप्पणियाँ:

1. इस पाठ्यक्रम के अधिकांश अध्याय कई लेखकों के शिष्यता पर आधारित सामग्री से हैं, जिनमें डॉ. डेल सी गारसाइड, डॉ. जिम और कैरोल प्लुडेमन (और उनकी पुस्तक, पिल्ग्रिम्स प्रोग्रेस: ग्रोइंग थ्रू ग्रुप्स), और डॉ. राबर्ट कॉलमैन (द मास्टर प्लान ऑफ डिसाइपलशिप) सम्मिलित हैं।
  2. यह और अगले चार अध्याय रेव्ह. पौल ब्राउन के द्वारा हैं।
  3. डॉ. राबर्ट कॉलमैन, द मास्टर प्लान ऑफ इवेन्जलिज़्म, उनके संदेशों से टिप्पणियाँ जो मोनरोविया, लाइबेरिया में 1989 में और किनशासा, जायरे में 1990 में दिये गये थे।
  4. कैरोल नायस्टोर्न द्वारा
  5. डॉ. जिम प्लुएडमैन द्वारा
  6. यह और अगले दो अध्याय स्टोव अलायन्स चर्च, यू.एस.ए. से हैं।
  7. यह और अगले सात अध्याय डॉ. डेल गारसाइड के संदेश की रूपरेखाओं से हैं।
  8. डॉ. विलीस ब्राऊन और डेल गारसाइड द्वारा
-



स्कूल ऑफ इवेन्जलिज़्म